हिंदी व्याकरण

8

लेखक :

आलोक शर्मा
(एम०ए०, बी०एड०)

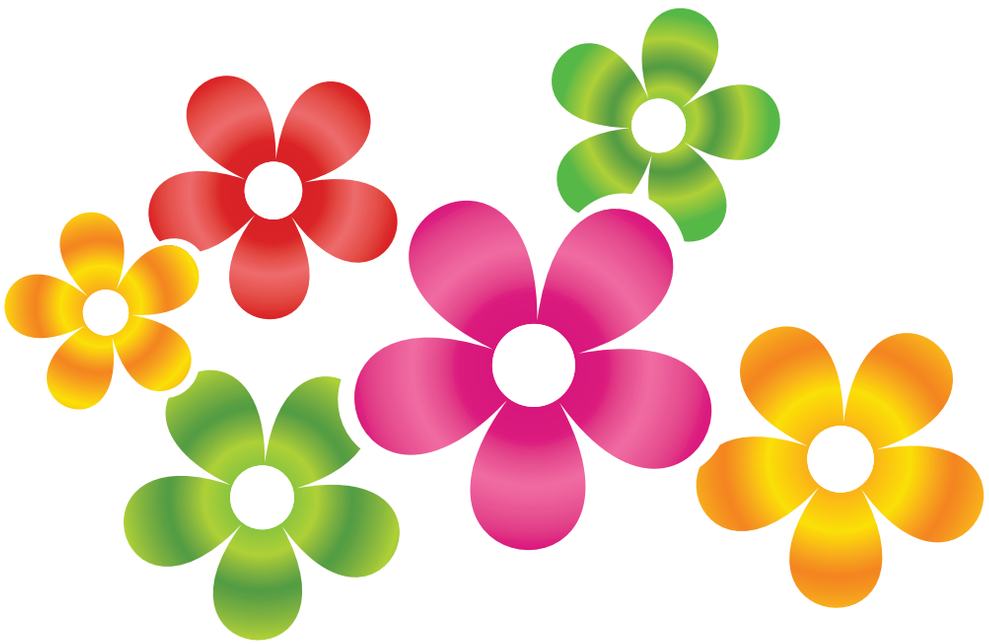

नवीन संस्करण

© प्रकाशकाधीन

इस पुस्तक के किसी भी भाग का किसी भी रूप में मुद्रण, प्रकाशन, संग्रहण अथवा प्रसारण प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना वर्जित है।

वैधानिक सूचना

यद्यपि प्रस्तुत पुस्तक को त्रुटिरहित बनाने का हरसंभव प्रयास किया गया है। परंतु इसमें यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो उससे कारित क्षति अथवा संताप के लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक एवं पुस्तक विक्रेता का कोई दायित्व नहीं होगा। किसी त्रुटि के संज्ञान में आने पर भविष्य में उसका सुधार किया जाएगा।

लेखक :
आलोक शर्मा (एम०ए०, बी०एड०)

हिंदी व्याकरण

प्रस्तावना

हिंदी व्याकरण की यह शृंखला आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। इसे एन॰ सी॰ ई॰ आर॰ टी॰, इंटरस्टेट बोर्ड फॉर एंग्लो इंडियन एजुकेशन एवं अन्य प्रांतीय शिक्षा परिषदों द्वारा स्वीकृत नवीन पाठ्यक्रम के अनुसार तैयार किया गया है।

इस शृंखला का उद्देश्य भाषा और व्याकरण का समुचित और सुबोध शैली में अध्ययन कराना है। छात्र व्याकरण को एक कठिन विषय के रूप में देखते हैं। इसलिए व्याकरण के जटिल नियमों को अत्यंत सरल और रोचक शब्दों में छात्रों तक पहुँचाना ही मेरा प्रयास है।

मेरा यह प्रयास छात्रों को अधिक रटने से बचाते हुए ज्ञानवर्धन करने के लिए है। अनेक चित्रों की सहायता से व्याकरण को समझाने का प्रयत्न किया गया है। अभ्यास में यथास्थान बहुवैकल्पिक प्रश्नों (MCQs) का समावेश किया गया है।

आशा है, यह प्रस्तुति विद्यार्थियों के लिए रुचिकर और उपयोगी सिद्ध होगी। आपसे अनुरोध है कि अपने अनुभवों और उपयोगी सुझावों से मुझे अवगत कराएँ।

धन्यवाद!

–लेखक

विषय सूची

1. भाषा, व्याकरण तथा बोली *(Language, Grammar and Language)* ... 5
2. वर्ण-विचार *(Phonology)* ... 8
3. शब्द-विचार *(Morphology)* ... 15
4. संज्ञा *(Noun)* ... 17
5. लिंग तथा वचन *(Gender & Number)* ... 21
6. सर्वनाम *(Pronoun)* ... 28
7. विशेषण *(Adjective)* ... 33
8. क्रिया *(Verb)* ... 38
9. कारक व उसके भेद *(Case & Its Kinds)* ... 42
10. काल *(Tense)* ... 49
11. क्रिया-विशेषण *(Adverb)* ... 51
12. वाच्य *(Voice)* ... 53
13. पद-परिचय *(Parsing)* ... 55
14. पद-क्रम *(Sequence)* ... 57
15. शब्द रचना के तत्त्व : संधि *(Elements of Word Formation : Euphonic)* ... 59
16. समास *(Compound)* ... 62
17. उपसर्ग *(Prefix)* ... 64
18. प्रत्यय *(Suffix)* ... 66
19. अव्यय *(Indeclinable)* ... 68
20. वाक्य-संरचना *(Sentence Structure)* ... 70
21. विराम-चिह्न *(Punctuation)* ... 72
22. काव्य सौंदर्य के तत्त्व (रस, छंद, अलंकार) ... 74
23. शब्द-युग्म या समानोच्चरित शब्द *(Pair Words or Words of Similar Sound)* ... 83
24. शब्दों की सामान्य अशुद्धियाँ : वर्तनी *(Some Common Errors : Spellings)* ... 86
25. व्यावहारिक व्याकरण (पर्यायवाची, विलोम आदि) *(Vocabulary)* ... 91
26. अपठित गद्यांश *(Unseen Passage)* ... 99
27. मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ *(Idioms and Proverbs)* ... 103
28. पत्र-लेखन *(Letter-Writing)* ... 108
29. कहानी-लेखन *(Story-Writing)* ... 112
30. निबंध-लेखन *(Essay-Writing)* ... 116
31. अंतर्कथाएँ *(Internal Stories)* ... 127

1 भाषा, व्याकरण तथा बोली
(Language, Grammar and Language)

भाषा (Language)–अपने विचारों तथा भावों को अपनी वाणी में हम जिस लिपि के शब्दों और वाक्यों का प्रयोग करते हुए व्यक्त करते हैं, उसे हम **भाषा** कहते हैं। जिस भाषा में हम विचारों को प्रकट करते हैं, उसी भाषा में दूसरों के भावों और विचारों को ग्रहण करते हैं। संक्षेप में, ''भाषा वह माध्यम है–जिसके द्वारा प्रत्येक मनुष्य अपने मन के विचारों और भावों को प्रकट करता है और दूसरों के विचारों तथा भावों को ग्रहण करता है।''

विश्व में अंग्रेज़ी, हिंदी, जर्मन, चीनी, जापानी, रूसी, अरबी, फ्रेंच इत्यादि भाषाएँ प्रचलित हैं। भारत के विभिन्न प्रदेशों में अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती हैं। कश्मीर में कश्मीरी, पंजाब में पंजाबी, गुजरात में गुजराती, बंगाल में बंग्ला इत्यादि भाषाएँ लोकप्रिय हैं। उत्तर भारत में अधिकांशत: हिंदी भाषा बोली जाती है।

प्राय: भाषा दो रूपों में प्रयोग की जाती है–

1. मौखिक भाषा (Oral Language)

जब हम अपने मुख से बोलकर अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं, तब उस भाषा को मौखिक या उच्चरित भाषा कहा जाता है। नेता द्वारा मंच पर दिया गया भाषण अथवा परस्पर बातचीत मौखिक भाषा है।

2. लिखित भाषा (Written Language)

जब हम अपने विचारों और भावों को लिखकर प्रकट करते हैं, तब उसे लिखित भाषा कहा जाता है। परीक्षा में पूछे गए प्रश्नों का उत्तर, पत्र-लेखन, पुस्तक-लेखन इत्यादि लिखित भाषाएँ हैं।

प्राय: गूँगे, बहरे व्यक्ति संकेतों से अपने भावों तथा विचारों को प्रकट करते हैं, किंतु वे विचार अस्पष्ट और अधूरे होते हैं। अत: सांकेतिक भाषा महत्त्वहीन है।

मौखिक और लिखित भाषा में अंतर

मौखिक भाषा में ध्वनियों का प्रयोग किया जाता है, जबकि लिखित भाषा में उन ध्वनियों के संकेतों अर्थात् स्वर, व्यंजन अ, आ या क, ख इत्यादि का प्रयोग किया जाता है।

मौखिक और लिखित भाषा का महत्त्व

मौखिक भाषा से विचारों का आदान-प्रदान शीघ्रतापूर्वक होता है तथा लिखित भाषा में विचारों के आदान-प्रदान के साथ ही ज्ञान का भावी पीढ़ियों के लिए संचय किया जाता है। अत: भाषा के दोनों रूप महत्वपूर्ण हैं। लिखित भाषा स्थायी होती है और मौखिक भाषा अस्थायी है। अब मौखिक भाषा को रिकॉर्ड करने की व्यवस्था बन गई है।

प्राय: भाषा के तीन प्रमुख अंग हैं–

1. **अक्षर (वर्ण) (Letter)**–ध्वनियों के संकेतों या चिह्न को अक्षर या वर्ण कहते हैं। स्वर और व्यंजन वर्ण के दो भेद हैं। **जैसे**–अ, आ, क, ख, ग इत्यादि।

वर्णमाला (Alphabet)–अक्षरों के समूह को वर्णमाला कहते हैं।

2. **शब्द (Word)**–बहुत से अक्षरों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं। शब्द वह है–जिसका कुछ अर्थ हो, **जैसे**–कमल, मदन, चमन आदि। अक्षरों के निरर्थक मेल को शब्द नहीं कहा जा सकता। **जैसे**–मकल, मचन इत्यादि।

3. **वाक्य (Sentence)**–विभिन्न सार्थक शब्दों का मेल, जिनका पूर्ण स्पष्ट अर्थ हो–वाक्य कहा जाता है। उदाहरण के लिए–'मोहन पुस्तक पढ़ता है।' यदि केवल 'मोहन पुस्तक' दो शब्द ही हों, तो इसका भाव स्पष्ट नहीं होगा। अत: 'मोहन पुस्तक' वाक्य नहीं है।

लिपि (Script)–मौखिक भाषा में ध्वनियों और लिखित भाषा में ध्वनियों के संकेत या चिह्न (अक्षर) का प्रयोग होता है। अत: जिस विधि द्वारा ध्वनियों को संकेत-चिह्नों में बदल कर लिखते हैं, उसे हम **लिपि** कहते हैं। विभिन्न भाषाओं की लिपियाँ अलग-अलग होती हैं। उदाहरण के लिए राष्ट्रभाषा हिंदी '**देवनागरी**' लिपि में लिखी जाती है। अंग्रेज़ी भाषा '**रोमन**' लिपि में, उर्दू भाषा '**फ़ारसी**' लिपि में, संस्कृत भाषा भी '**देवनागरी**' लिपि में और पंजाबी भाषा '**गुरुमुखी**' लिपि में लिखी जाती है।

बोली–किसी भी भाषा के क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं। बोली में मुख से बोला जाता है, जबकि भाषा में लिखा जाता है। राजभाषा हिंदी को विद्वानों ने दो क्षेत्रों में बाँटा है–

1. पश्चिमी हिंदी और 2. पूर्वी हिंदी। पश्चिमी हिंदी की बोलियाँ–खड़ी बोली, बाँगरू, ब्रजभाषा, कन्नौजी और बुंदेली हैं। पूर्वी हिंदी की बोलियाँ– अवधी, बघेली तथा छत्तीसगढ़ी हैं।

व्याकरण (Grammar)–व्याकरण के बिना किसी भी भाषा का सम्यक् ज्ञान प्राप्त करना असम्भव है। व्याकरण वह शास्त्र है, जो किसी भाषा को बोलने और लिखने के नियमों का निर्धारण करता है। किसी भी भाषा के शुद्ध रूप को स्थिर बनाए रखने के लिए ही व्याकरण की रचना की गई है। किसी भी भाषा का व्याकरण उस भाषा को शुद्ध रूप में लिखने का नियम शास्त्र होता है।

हमारे भारतवर्ष में अनेक प्रकार की भाषाएँ बोली जाती हैं, जिनमें 22 भाषाएँ संविधान में प्रमुख हैं–

1. हिंदी, 2. उर्दू , 3. संस्कृत, 4. पंजाबी, 5. गुजराती, 6. कन्नड़, 7. मलयालम, 8. मराठी, 9. डोगरी, 10. कश्मीरी, 11. उड़िया, 12. बांग्ला, 13. असमिया, 14. तेलुगु, 15. सिंधी, 16. तमिल, 17. मणिपुरी, 18. कोंकणी, 19. नेपाली, 20. मैथिली, 21. संथाली तथा 22. बोड़ो।

व्याकरण के प्रमुख अंग

व्याकरण के तीन प्रमुख अंग हैं–

1. **वर्ण-बोध**–इसके अंतर्गत वर्णों के आकार, प्रकार, उच्चारण तथा वर्णों से शब्द बनाने के नियमों का ज्ञान कराया जाता है।
2. **शब्द-बोध**–इसमें शब्दों के प्रकार, रूपान्तर, प्रयोग तथा शब्दों की व्युत्पत्ति का वर्णन किया जाता है।
3. **वाक्य-बोध**–इसमें शब्दों के वाक्य बनाने, उनके प्रयोग तथा वाक्य-विग्रह आदि का वर्णन होता है।

भाषा की सबसे छोटी इकाई 'वर्ण' तथा सबसे बड़ी इकाई 'वाक्य' है। भाषा में वर्णों, शब्दों तथा वाक्यों का ही प्रयोग किया जाता है। व्याकरण भाषा की शुद्धता और अशुद्धता के बारे में ज्ञान कराता है।

भाषा का शुद्ध बोलना एवं लिखना, व्यक्ति के व्यक्तित्व को सुंदर से सुन्दरतम बना देता है। भाषा की शुद्धता का ज्ञान होने पर ही हम अपनी बातों से भी दूसरों को प्रभावित कर सकते हैं। व्यक्ति भले ही अधिक न पढ़े, किंतु उसे व्याकरण का ज्ञान अवश्य होना चाहिए।

आपने क्या सीखा

1. मानव द्वारा मन के विचारों तथा भावों को व्यक्त करने का साधन **भाषा** है।
2. भाषा के दो रूप बताए गए हैं।
3. भाषा के प्रमुखत: तीन अंग हैं–वर्ण, शब्द तथा वाक्य ।

4. हमारी राष्ट्रभाषा की लिपि **देवनागरी लिपि** है।
5. भाषा की शुद्धता को हम **व्याकरण** के द्वारा जानते हैं।
6. व्यक्ति भले ही अधिक न पढ़ सके परंतु उसे व्याकरण का ज्ञान होना बहुत ही आवश्यक है।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) भाषा का क्या अर्थ है? स्पष्ट करके लिखिए।

(ख) मानव को लिपि की आवश्यकता क्यों पड़ी?

(ग) भाषा के दोनों रूपों को स्पष्ट करके लिखिए।

(घ) 'व्याकरण' से आप क्या समझते हो?

2. अंतर बताइए–

(क) मौखिक तथा सांकेतिक भाषा में।

(ख) लिखित तथा मौखिक भाषा में।

(ग) भाषा और बोली में।

(घ) लिपि तथा बोली में।

3. व्याकरण के तीन प्रमुख भाग बताइए।

4. 'लिपि' किसे कहते हैं? नीचे दी हुई भाषाओं की लिपियों के नाम लिखिए–

अंग्रेज़ी _____ उर्दू _____

बंगाली _____ हिंदी _____

5. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) व्याकरण भाषा के _____ करता है।

(ख) मौखिक भाषा को _____ भाषा भी कहा जाता है।

(ग) ध्वनियों के संकेत या _____ कहलाते हैं।

(घ) व्यक्ति भले ही अधिक न पढ़े, किंतु उसे _____ पढ़ना चाहिए।

(ङ) सार्थक शब्द-समूह को _____ कहा जाता है।

(च) व्याकरण के प्रमुखत: _____ भाग बताए गए हैं।

6. मौखिक और लिखित भाषा का क्या महत्त्व है?

2 वर्ण-विचार (Phonology)

पिछली कक्षा में आप पढ़ चुके हैं कि भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण–अक्षर है। छोटी से छोटी ध्वनि को वर्ण–अक्षर कहते हैं। लिखित रूप में भी हम अक्षरों का ही प्रयोग करते हैं। अत: भाषा के ज्ञान के लिए सर्वप्रथम वर्ण–अक्षर का ज्ञान आवश्यक है। व्याकरण से वर्ण की पूरी जानकारी प्राप्त होती है।

वर्ण (Letter) की परिभाषा–कथित भाषा की मूल ध्वनियों को व्यक्त करने वाले चिह्नों को 'वर्ण' कहते हैं।

जैसे–अ, उ ए, ग्, ठ्, प् व् आदि।

सभी भाषाओं की अपनी-अपनी लिपि के वर्ण होते हैं। हिंदी की लिपि देवनागरी में **48** वर्ण होते हैं।

वर्णमाला (Alphabet) की परिभाषा–वर्णों के समूह को हम **वर्णमाला** कहते हैं।

वर्णों का वर्गीकरण

वर्णों का वर्गीकरण हम दो प्रकार से करते हैं। पहला वर्गीकरण इस आधार पर किया जाता है कि वर्णों के उच्चारण में जीभ मुख के किन अंगों को स्पर्श करती है।

इस आधार पर वर्णों का वर्गीकरण करने पर स्वरों का तो कोई वर्ग नहीं बनता, क्योंकि उनके उच्चारण में जीभ अन्य अंगों को स्पर्श नहीं करती। व्यंजनों के कई वर्ग हो जाते हैं। वर्णमाला में वर्णों का क्रम वर्गीकरण के आधार पर निर्धारित किया गया है, जो इस प्रकार है–

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ–स्वर

क, ख, ग, घ, ङ	–	'क' वर्ग	स्पर्श व्यंजन
च, छ, ज, झ, ञ	–	'च' वर्ग	
ट, ठ, ड, ढ, ण–ड़ ढ़	–	'ट' वर्ग	
त, थ, द, ध, न	–	'त' वर्ग	
प, फ, ब, भ, म	–	'प' वर्ग	
य, र, ल, व	–	अंत:स्थ व्यंजन	
श,ष, स, ह	–	ऊष्म व्यंजन	
अं, अ:	–	आयोगवाह	

दूसरा वर्गीकरण इस आधार पर किया गया कि किसी वर्ण के उच्चारण में जीभ मुख में किस अंग का स्पर्श करती है।

इस आधार पर समस्त वर्णों को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जाता है–

स्वर वर्ण	व्यंजन वर्ण	उच्चारण स्थान	तद्नुसार वर्ण
अ, आ	विसर्ग	कण्ठ	कण्ठ्य
ऋ	ट, ठ, ड, ढ, र, ष, ड़, ढ़	मूर्धा	मूर्धन्य
–	त, थ, द, ध, ल, स	दन्त	दन्त्य
उ, ऊ	प, फ, ब, भ	ओष्ठ	ओष्ठ्य

–	ङ, ञ, ण, न, म, अं	नासिका	नासिक्य
ए, ऐ	–	कण्ठोष्ठ	कण्ठोष्ठ्य
–	व	दन्तोष्ठ	दन्तोष्ठ्य

इस प्रकार उच्चारण के आधार पर वर्ण दो प्रकार के होते हैं–

1. स्वर (Vowels),
2. व्यंजन (Consonents)।

इनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है–

स्वर (Vowels)

स्वर (Vowels) की परिभाषा–जिन वर्णों के उच्चारण के समय बिना किसी रुकावट के मुख से वायु निकलती है, वे स्वर कहलाते हैं। हिंदी वर्णमाला में 11 स्वर होते हैं।

स्वर के प्रकार–

(क) उच्चारण के आधार पर स्वर मुख्यत: तीन प्रकार के होते हैं-

1. ह्रस्व स्वर (Short Vowels)
2. दीर्घ स्वर (Long Vowels)
3. प्लुत स्वर (Longer Vowels)

इन तीनों प्रकार के स्वरों की आवश्यक जानकारी इस प्रकार है–

1. **ह्रस्व स्वर (Short Vowels)**–जिन स्वरों के उच्चारण में सबसे कम समय लगता है–एक मात्र का समय लगता है। वे ह्रस्व स्वर कहलाते हैं। ये चार हैं–अ, इ, उ, ऋ।
2. **दीर्घ स्वर (Long Vowels)**–जिन स्वरों के उच्चारण में एक मात्र से अधिक का समय लगता है। वे 'दीर्घ स्वर' कहलाते हैं। ये सात हैं– आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।
3. **प्लुत स्वर (Longer Vowels)**–जिन स्वरों के उच्चारण में मूल स्वर से लगभग तीन गुना समय लगता है। उन्हें 'प्लुत स्वर' कहते हैं।

जैसे–ओऽम्, हे! राऽम आदि।

नोट–आजकल इनका प्रयोग बहुत कम किया जाता है।

स्वरों की मात्राएँ–जब स्वरों को व्यंजनों के साथ मिलाकर लिखा जाता है, तब इनकी केवल मात्राएँ ही लगाई जाती हैं। किसी स्वर के उच्चारण में जो समय लगता है। उसे 'मात्रा' कहते हैं। स्वरों की मात्राएँ इस प्रकार हैं–

अ	–		गगन, कमल
आ	–	ा	राम, नाम, मामा
इ	–	ि	शिमला, किसका
ई	–	ी	शीतल, गीता
उ	–	ु	पुत्र, कुल
ऊ	–	ू	सूप, धूप

ए	–	े	केला, मेला
ऐ	–	ै	कैलाश, कैसा
ओ	–	ो	मोर, लोग
औ	–	ौ	चौरासी, और
अं	–	ं	कंकाल, संघ
अः	–	ः	अतः, दुःख

(ख) बनावट के आधार पर स्वर दो प्रकार के होते हैं–

1. **मूल स्वर**–जो स्वर बिना जोड़ के बनते हैं, उन्हें मूल स्वर कहते हैं। ये इस प्रकार हैं–अ, इ, उ, ऋ।
2. **संधि स्वर**–जो स्वर किसी के जोड़ से बनें, उन्हें संधि स्वर कहते हैं। ये इस प्रकार हैं–

अ + अ = आ अ + ए = ऐ	इ + इ = ई अ + उ = ओ	उ + उ = ऊ अ + ओ = औ	अ + इ = ए

(ग) सजातीय स्वर एवं विजातीय स्वर–

1. **सजातीय स्वर**–अ, आ, इ, ई, उ, ऊ
2. **विजातीय स्वर**–इनसे भिन्न विजातीय स्वर होते हैं।

स्वरों के संबंध में अन्य महत्त्वपूर्ण बातें–

1. अ की मात्रा नहीं होती।
2. अ की सहायता से ही सभी व्यंजन बोले जाते हैं। जैसे–क, ख, ग, घ, च, र।
3. अ से रहित व्यंजन को इस प्रकार लिखते हैं–क्, ख्, ग्, घ्, च्, र्।
4. व्यंजनों के नीचे लगी तिरछी रेखा को 'हलन्त' कहते हैं।

आयोगवाह (Aftersounds)

स्वर तथा व्यंजनों के अलावा हिंदी वर्णमाला में तीन वर्ण और भी होते हैं–1. अनुनासिक (अँ), 2. अनुस्वार (अं) तथा 3. विसर्ग (अः)। ये **आयोगवाह** कहलाते हैं। ये न तो स्वर हैं और न ही व्यंजन। ये

इनका संक्षिप्त परिचय निम्नवत् है–

1. **अनुनासिक**–इसके उच्चारण में हवा नाक तथा मुख दोनों से निकलती है। इसके लिए वर्ण के ऊपर चन्द्रबिंदु (ँ) का प्रयोग किया जाता है। **जैसे**–हँसी, मूँगा आदि।
2. **अनुस्वार**–यह वर्ण के ऊपर बिंदु (ं) के रूप में प्रयोग होता है। **जैसे**–गंगा, चंचल, गंदा, संस्था आदि।
3. **विसर्ग**–वर्ण के बाद विसर्ग का चिह्न (ः) लगाते हैं। **जैसे**–दुःख, अतः, पुनः आदि।

व्यंजन (Consonents)

व्यंजन (Consonents) की परिभाषा–जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता के बिना नहीं होता है, वे व्यंजन कहलाते हैं। हिंदी वर्णमाला में 33 व्यंजन हैं।

व्यंजन के प्रकार

(क) व्यंजन मुख्य रूप से तीन प्रकार के होते हैं–

1. स्पर्श व्यंजन (Mutes)
2. अंत:स्थ व्यंजन (Sibilitants)
3. ऊष्म व्यंजन (Semi-Vowels)

इनकी आवश्यक जानकारी इस प्रकार है–

1. स्पर्श व्यंजन (Mutes)–जिन वर्णों के बोलने में वायु किसी उच्चारण स्थान विशेष को स्पर्श करती हुई बाहर निकलती है उन्हें **स्पर्श व्यंजन** कहते हैं।

स्पर्श व्यंजन **25** हैं, जो पाँच वर्गों में बँटे हुए हैं–

क वर्ग	–	क्, ख्, ग्, घ्, ङ्
च वर्ग	–	च्, छ्, ज्, झ्, ञ
ट वर्ग	–	ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्, ड़्, ढ़्
त वर्ग	–	त्, थ्, द्, ध्, न्
प वर्ग	–	प्, फ्, ब्, भ्, म्

2. अंत:स्थ व्यंजन (Sibilitants)–जो व्यंजन स्वरों तथा व्यंजनों के मध्य की स्थिति में आते हैं, वे अंत:स्थ व्यंजन कहलाते हैं।

ये चार होते हैं–य्, र्, ल्, व्।

3. ऊष्म व्यंजन (Semi-Vowels)–जिन व्यंजनों के बोलने में मुख से गर्म हवा-सी निकलती है उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं।

ये भी चार होते हैं–श्, स्, ह्, ल्।

(ख) परस्पर मेल के आधार पर व्यंजनों के प्रकार–एक समान अथवा भिन्न-भिन्न व्यंजनों के मेल के आधार पर भी व्यंजनों के भेद निश्चित किए गए हैं। इस आधार पर व्यंजन दो प्रकार के हैं–

1. संयुक्त व्यंजन
2. द्वित्व व्यंजन

इनकी आवश्यक जानकारी इस प्रकार है–

1. संयुक्त व्यंजन–दो अलग-अलग व्यंजनों के परस्पर मिलने को संयुक्त व्यंजन कहते हैं।

ये मुख्यत: चार हैं– श्र = श् + र, क्ष = क् + ष, ज्ञ = ज् + ञ, त्र = त् + र।

इसके अतिरिक्त हिंदी में 'ड़' तथा 'ढ़' उत्क्षिप्त व्यंजनों का भी प्रयोग किया जाता है। **जैसे**– सड़क, पढ़ना आदि।

2. द्वित्व व्यंजन–एक जैसे वर्णों के मिलने को 'द्वित्व व्यंजन' कहते हैं। **जैसे**–क्क (चक्का), च्च (कच्चा), ब्ब (बब्बल), म्म (सम्मान) आदि।

(ग) उच्चारण के आधार पर व्यंजनों के प्रकार–उच्चारण के आधार पर व्यंजन दो प्रकार के होते हैं।

1. अल्पप्राण–जिन व्यंजनों के बोलने में वायु की मात्रा कम तथा कमजोर होकर निकलती है उन्हें 'अल्पप्राण व्यंजन' कहते हैं। **जैसे**–क्, ग्, ङ्, च्, ज्, ञ्, ट्, ड्, ण्, त्, द्, न्, प्, ब्, म्।

2. **महाप्राण**–जिन व्यंजनों के बोलने में वायु की मात्रा अधिक तथा अधिक वेग से निकलती है। उन्हें 'महाप्राण व्यंजन' कहते हैं। ये हैं–ख्, घ्, छ्, झ्, ठ्, ढ्, थ्, ध्, फ्, भ्, श्, ष्, स्, ह्।

प्रयत्न

प्रयत्न–वर्णों का उच्चारण करते समय मनुष्य को जो प्रयत्न करना पड़ता है, उसे 'प्रयत्न' कहते हैं।

प्रयत्न के प्रकार–प्रयत्न के दो प्रकार होते हैं-

1. **आभ्यंतर प्रयत्न**–वर्णों के बोलने से पहले जो भीतरी प्रयत्न करना पड़ता है, उसे 'आभ्यंतर प्रयत्न' कहते हैं।
2. **बाह्य प्रयत्न**–वर्णों के अंत में होने वाले प्रयत्नों को 'बाह्य प्रयत्न' कहते हैं।

उच्चारण संबंधी अशुद्धियाँ

भाषा में अक्षरों को जिस प्रकार बोला जाता है, वह '**उच्चारण**' कहलाता है। भाषा में उच्चारण का अपना महत्त्व है। अशुद्ध उच्चारण से वर्तनी की अनेक अशुद्धियाँ हो जाती हैं।

(क) स्वरों से संबंधित अशुद्धियाँ–स्वरों से संबंधित अशुद्धियाँ चार प्रकार की होती हैं-

1. प्राय: स्वरों के चिह्नों (मात्राओं) के गलत प्रयोग के कारण वाक्य में अशुद्धि हो जाती है। जैसे-

अशुद्ध	शुद्ध
(i) आज असमान साफ है।	(i) आज आसमान साफ है।
(ii) उसकी वधु सुंदर है।	(ii) उसकी वधू सुंदर है।

2. कभी-कभी बीच के आधे अक्षर को भी पूरे अक्षर की भाँति बोल देते हैं जिससे गलती हो जाती है।

जैसे–गर्म–गरम, शर्म–शरम।

अन्य उदाहरण–

अशुद्ध	शुद्ध
(i) लक्षमण राम के भाई थे।	(i) लक्ष्मण राम के भाई थे।
(ii) आज अच्छी फिलम आ रही है।	(ii) आज अच्छी फिल्म आ रही है।

3. कभी-कभी पूरे उच्चारण को आधा कर देते हैं, इससे शब्द गलत हो जाता है। **जैसे–**

अशुद्ध	शुद्ध
(i) स्वर्ग तथा नर्क पृथ्वी पर ही हैं।	(i) स्वर्ग तथा नरक पृथ्वी पर ही हैं।
(ii) कभी-सोचना गल्त है।	(ii) कभी सोचना गलत है।

4. कभी-कभी आधे वर्ण से शुरू होने वाले शब्दों से पहले स्वर 'इ' या 'आ' जोड़ देते हैं जिससे गलत उच्चारण हो जाता है। **जैसे–**

अशुद्ध	शुद्ध
(i) गाड़ी इस्टेशन पर आने वाली है।	(i) गाड़ी स्टेशन पर आने वाली है।
(ii) यह तीर्थ अस्थान सुंदर है।	(ii) यह तीर्थ स्थान सुंदर है।

(ख) व्यंजनों से संबंधित अशुद्धियाँ–व्यंजनों में 'र' की गलतियाँ ज्यादा होती हैं। जैसे–प्रकार–परकार, कर्म–करम।

1. 'र' के उच्चारण में निम्नलिखित सावधानियाँ रखनी चाहिएँ–

(i) यदि किसी वर्ण के पैर में 'र' लगा है तो उसे संबंधित वर्ण के साथ मिलाकर बोलना चाहिए। जैसे-क्रय, भ्रम, प्रण।

(ii) यदि 'र' शब्द के अंतिम अक्षर के ऊपर लगा हो, तब उसे आधा बोला जाएगा। शुरू का अक्षर पूरा, बीच का 'र' आधा तथा अंत का अक्षर पूरा बोला जाता है। **जैसे**–धर्म–धर्म, मर्द–मर्द्।

(iii) यदि ट, ठ, ड, ढ में 'र' मिला हो तो जिस वर्ण के नीचे 'र' लगा हो वह वर्ण आधे वर्ण की तरह तथा 'र' पूरे वर्ण की तरह बोला जाएगा। **जैसे**–ट्रक = ट् + र + क। ड्रामा = ड् + र् + आ + म् + आ।

(iv) यदि वर्ण के पैर में ; की मात्रा (ृ) लगी हो, तो वह वर्ण इस प्रकार बोला जाता है जैसे उस वर्ण पर 'रि' की मात्रा लगी हो। **जैसे**–वृक्ष, मृग, वृत्त, गृह आदि।

इनके उच्चारण तथा अर्थ भेद में भी अंतर है। जैसे-

गृह–घर, ग्रह–आकाशीय पिण्ड (पृथ्वी, मंगल, बुध, शनि आदि)

2. व्यंजनों के उच्चारण में दूसरी अशुद्धियाँ संयुक्त व्यंजनों आदि के बोलने में होती हैं–

अशुद्ध	शुद्ध उच्चारण	अशुद्ध	शुद्ध उच्चारण
पुत्तर	पुत्र	छमा	क्षमा
परीच्छा	परीक्षा	छन	क्षण
मित्तर	मित्र	छेत्रीय	क्षेत्रीय

3. व्यंजनों के बोलने में सबसे अधिक अशुद्धियाँ मिलते-जुलते व्यंजनों तथा शब्दों के बोलने में होती हैं। **जैसे–**

अ.	काम–कम	आ.	पिता–पीता	इ.	कुल–कूल	ई.	बेर–बैर
	पाल–पल		बीन–बिन		चूना–चुना		चेन–चैन
	मर–मार		दीन–दिन		सूना–सुना		मैल–मेल
उ.	सो-सौ	ऊ.	सॉस–सास	ए.	बूढ़ा–बुढ्ढा	ऐ.	दबा–दवा
	जौ–जो		हंस–हँस		डेरी–ढेरी		बही–वही
	शौक–शोक		काटा–काँटा		ढाल–डाल		बन-वन
ओ.	चोर–छोर	औ.	दे–दें		लेटा–लेता		हैं–है
	ताल–टाल		लिखें–लिखे				

उच्चारण के संबंध में ध्यान देने योग्य अन्य महत्त्वपूर्ण बातें–

1. 'फ' का उच्चारण 'फ़' की तरह नहीं करना चाहिए । **जैसे–** 'फ़ल' का उच्चारण 'फल' की तरह करना अशुद्ध है।

2. क़, ख़, ग़ तथा ज़ ध्वनियों का प्रयोग केवल अरबी-फारसी के शब्दों में किया जाता है पर कभी-कभी इनका प्रयोग जरूरी भी होता है। **जैसे–**गज–गज़, ख़ुदा–खुदा, गरज–गरज़ आदि। इस प्रकार के शब्दों को बोलते समय सावधानी रखनी चाहिए।

3. अनुस्वार तथा अनुनासिक ध्वनियों का उच्चारण सावधानी से ही करना चाहिए। **जैसे–**हंस का हँस के रूप में प्रयोग गलत है।

4. ध और घ के उच्चारण में भी सावधानी बरतनी चाहिए।

5. अन्य अशुद्धियाँ–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
ग्रहस्थ	गृहस्थ	संयासी	संन्यासी
रचियता	रचयिता	महत्व	महत्त्व
सन्मुख	सम्मुख	अंतर्कथा	अंत:कथा
स्थाई	स्थायी	प्रदर्शिनी	प्रदर्शनी
अनूसूया	अनसूया	प्रज्जवलित	प्रज्ज्वलित
शमशान	श्मशान	श्राप	शाप
पूज्यनीय	पूजनीय	सरोजनी	सरोजिनी
श्रंगार	शृंगार	इन्द्रा	इन्दिरा

अभ्यास

1. 'वर्ण' की परिभाषा लिखिए।
2. वर्ण के प्रकार लिखिए।
3. हिंदी में कुल कितने वर्ण होते हैं?
4. 'स्वर' से आप क्या समझते हैं? स्वर के भेद भी लिखिए।
5. 'व्यंजन' के गुण तथा परिभाषा लिखिए।
6. 'अनुनासिक' तथा 'अनुस्वार' किसे कहते हैं? इन दोनों में अंतर भी स्पष्ट कीजिए।
7. 'आयोगवाह' किसे कहते हैं? स्पष्ट कीजिए।
8. 'द्वित्व' तथा 'संयुक्त व्यंजन' किसे कहते हैं? दोनों में अंतर स्पष्ट कीजिए।
9. स्वर तथा व्यंजन में क्या अंतर हैं? स्पष्ट कीजिए।
10. 'मात्रा' से आपका क्या अभिप्राय है?

3 शब्द-विचार
(Morphology)

एक या एक से अधिक वर्णों के सार्थक मेल से '**शब्द**' बनते हैं। भाषा की दूसरी इकाई शब्द है। भाषा में शब्द का विशेष महत्त्व है। व्याकरण के ज्ञान से हमें शब्द की पर्याप्त जानकारी मिलती है। व्याकरण के जिस विभाग में शब्द-रचना आदि के नियमों की जानकारी प्रदान की जाती है, उसे शब्द-विभाग कहते हैं।

शब्द (Word) की परिभाषा–दो या दो से अधिक वर्णों की वह सामूहिक ध्वनि जिसका कोई सार्थक अर्थ हो 'शब्द' कहलाती है।

शब्दों का वर्गीकरण

हिंदी के शब्दों को चार भागों में बाँटा गया है–

(क) अर्थ की दृष्टि से
(ख) उत्पत्ति की दृष्टि से
(ग) व्युत्पत्ति (बनावट) की दृष्टि से
(घ) प्रयोग (रूपांतर या विकार) की दृष्टि से

(क) अर्थ की दृष्टि से–अर्थ के आधार पर शब्द तीन प्रकार के होते हैं–

1. **वाचक शब्द**–ऐसे शब्द जिनको आसानी से सुना जा सके, 'वाचक शब्द' कहलाते हैं। **जैसे**–कवि, सुबोध, बकरी आदि।
2. **लाक्षणिक शब्द**–ऐसे शब्द जिनको आसानी से न समझकर लक्षण या संकेत द्वारा समझा जा सके, वे 'लाक्षणिक शब्द' कहलाते हैं। जैसे–
   (i) कवीन्द्र मूर्ख है। (ii) रवि उल्लू है।
3. **व्यंजक शब्द**–ऐसे शब्द जिनको आसानी से न समझकर लक्षण या संकेत द्वारा समझा जा सके, वे 'व्यंजक शब्द' कहलाते हैं। जैसे–आप तो बड़े आदमी हैं! इसका अभिप्राय यह है कि आप बड़े आदमी नहीं हैं।

अर्थ के आधार पर शब्द के अन्य दो प्रकार निम्नलिखित हैं–

(i) सार्थक शब्द। (ii) निरर्थक शब्द।

1. **सार्थक शब्द**–जिन शब्दों से किसी स्पष्ट अर्थ का बोध हो, वे '**सार्थक शब्द**' कहलाते हैं।
2. **निरर्थक शब्द**–जिन शब्दों से किसी स्पष्ट अर्थ का बोध न हो, वे '**निरर्थक शब्द**' कहलाते हैं।

जैसे–पानी-वानी, रोटी-वोटी आदि। यहाँ वानी और वोटी निरर्थक शब्द हैं।

हिंदी व्याकरण में शब्द पाँच प्रकार के हैं–

1. संज्ञा, 2. सर्वनाम, 3. विशेषण, 4. क्रिया, 5. अव्यय।

(ख) उत्पत्ति की दृष्टि से–उत्पत्ति की दृष्टि से शब्द चार प्रकार के होते हैं–

1. **तत्सम शब्द**–संस्कृत के जो शब्द मूल रूप में हिंदी में प्रयोग किए जाते हैं वे '**तत्सम शब्द**' कहलाते हैं।
2. **तद्भव शब्द**–हिंदी के जो शब्द संस्कृत शब्दों से लिए गए हैं तथा परिवर्तन के साथ बने हैं, वह '**तद्भव शब्द**' कहलाते हैं। **जैसे**–खेत (क्षेत्र), दाँत, (दंत), गाय (गौ) आदि।

3. **देशज शब्द–** जो शब्द देश की बोल-चाल की भाषा में प्रयुक्त होते हैं उन्हें **'देशज शब्द'** कहते हैं।

जैसे–गाड़ी, झुग्गी, कुदाल, खाट आदि।

4. **विदेशी शब्द–**जो शब्द दूसरी भाषा से आकर हिंदी में ही मिल गए हैं वे **'विदेशी शब्द'** कहलाते हैं। **जैसे**–डॉक्टर, स्टेशन, टेलीविज़न, आलू, हलवाई आदि।

(ग) व्युत्पत्ति (बनावट) की दृष्टि से–व्युत्पत्ति की दृष्टि से शब्द तीन प्रकार के होते हैं :

1. **रूढ़ शब्द–**ऐसे शब्द जिनको खण्डित करने पर कोई अर्थ न निकले, वे शब्द **'रूढ़ शब्द'** कहलाते हैं। **जैसे**–गोपाल, इसमें गो, पा, ल खण्डों का कोई अर्थ नहीं है।

2. **यौगिक शब्द–**जो शब्द दो या दो से अधिक शब्दों के मिलने से बनते हैं तथा खण्डित करने पर भी अर्थ निकलता है, वे **'यौगिक शब्द'** कहलाते हैं। **जैसे**- न्यायपालिका, भूभाग आदि।

3. **योगरूढ़ शब्द–**जो शब्द यौगिक शब्दों की तरह ही बनते हैं। किंतु जिनका विशेष अर्थ होता है, वे **'योगरूढ़ शब्द'** कहलाते हैं। **जैसे**–चारपाई, पवनसुत आदि।

(घ) प्रयोग (रूपांतर या विकास) की दृष्टि से–प्रयोग की दृष्टि से शब्द दो प्रकार के होते हैं–

1. **विकारी–**जिन शब्दों में लिंग, वचन तथा कारक आदि के कारण परिवर्तन होता है उन्हें **'विकारी शब्द'** कहते हैं। ये चार प्रकार के होते हैं–

(i) संज्ञा शब्द (ii) सर्वनाम शब्द

(iii) विशेषण शब्द (iv) क्रिया शब्द

2. **अविकारी–**जिन शब्दों का रूप प्रयोग के कारण न बदल सके, वे **'अविकारी शब्द'** कहलाते हैं। अविकारी शब्द निम्नलिखित हैं–

(i) क्रिया-विशेषण – बुढ़ापा, हिरन, हरियाली।

(ii) संबंधबोधक – और, पर, मगर।

(iii) सम्मुच्चयबोधक – कक्षा, सेना, सभा।

(iv) विस्मयादिबोधक – शाबाश !, हाय !

अभ्यास

1. **'शब्द' की परिभाषा सोदाहरण लिखिए।**
2. **शब्दों के विभिन्न प्रकार लिखिए।**
3. **अर्थ की दृष्टि से शब्दों के प्रकार लिखिए।**
4. **भाषा की दृष्टि से शब्दों के कितने प्रकार होते हैं? प्रत्येक का नाम लिखिए।**
5. **व्युत्पत्ति की दृष्टि से शब्दों के प्रकार लिखिए।**
6. **प्रयोग की दृष्टि से शब्दों के कितने प्रकार होते हैं? प्रत्येक का नाम लिखिए।**
7. **विकारी तथा अविकारी शब्दों में अंतर स्पष्ट कीजिए।**
8. **तत्सम शब्द तथा तद्भव शब्दों में क्या अंतर है? स्पष्ट कीजिए।**

4

संज्ञा
(Noun)

संज्ञा की परिभाषा–किसी वस्तु, पदार्थ, स्थान, अथवा भाव के नाम को 'संज्ञा' कहते हैं। जैसे–फूल, पुस्तक, अहिंसा, भालू, रोहित, बस्ता, आगरा, यमुना आदि।

उदाहरण–

1. आजकल बाज़ार में फल सस्ते हैं।
2. बाजार में हिंदी की पुस्तकें अधिक हैं।
3. गांधी जी ने हमें सत्य और अहिंसा की शिक्षा दी।
4. भालू के नाचते ही मोहित प्रसन्न होता है।
5. बच्चे पुस्तकें बस्ते में रखकर स्कूल जाते हैं।
6. आगरा यमुना नदी के किनारे बसा है।

संज्ञा के प्रकार

संज्ञा के निम्नलिखित पाँच प्रकार अथवा भेद होते हैं–

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा (Proper Noun)
2. जातिवाचक संज्ञा (Common Noun)
3. समुदायवाचक संज्ञा (Collective Noun)
4. पदार्थवाचक संज्ञा (Material Noun)
5. भाववाचक संज्ञा (Abstract Noun)

संज्ञा के इन विभिन्न प्रकारों की संक्षिप्त जानकारी निम्नवत् है–

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा (Proper Noun)–जिस शब्द से किसी जाति की एक वस्तु या व्यक्ति का विशेष बोध होता है, उसे '**व्यक्तिवाचक संज्ञा**' कहते हैं। **जैसे–**

नगरों के नाम–चण्डीगढ़, रोहतक, पटियाला आदि

पहाड़ों के नाम–सतपुड़ा, नीलगिरी, विंध्याचल आदि।

नदियों के नाम–यमुना, कृष्णा, गोदावरी, सतलुज आदि।

व्यक्तियों के नाम–लक्ष्मण, कंस, गुरुनानक, रोहित आदि।

2. जातिवाचक संज्ञा (Common Noun)–जिस शब्द से किसी जाति का बोध हो, उसे '**जातिवाचक संज्ञा**' कहते हैं। **जैसे–**घर, बाग, जंगल, सड़क आदि।

जानवरों के नाम–कुत्ता, गाय, भालू, हाथी, भेड़ आदि।

वस्तुओं के नाम–पुस्तक, मेज़, कलम, चाँदी आदि।

3. समुदायवाचक संज्ञा (Collective Noun)–जिस शब्द से किसी समुदाय का बोध हो, उसे '**समुदायवाचक संज्ञा**' कहते हैं। जैसे–

(i) उस गली में आज बहुत **भीड़** है।

(ii) **कक्षा** में छात्र बहुत कम हैं।

(iii) बलिया में कर्फ़्यू के कारण **पी. ए. सी.** और **पुलिस** जगह-जगह तैनात है।

(iv) 26 जनवरी को सैनिकों, बच्चों और एन. सी. सी. की **टुकड़ियाँ** मार्च करती हैं।

4. पदार्थवाचक संज्ञा (Material Noun)–जिस शब्द से किसी पदार्थ, द्रव्य आदि का बोध होता है। उसे हम 'पदार्थवाचक संज्ञा' कहते हैं।

जैसे–सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा, लकड़ी आदि।

हिंदी व्याकरण में पदार्थवाचक संज्ञा को अलग न मानकर कभी-कभी जातिवाचक संज्ञा के रूप में ही मानते हैं।

5. भाववाचक संज्ञा (Abstract Noun)–जिस शब्द से किसी पदार्थ के गुण, दशा, धर्म या भाव का बोध होता है उसे 'भाववाचक संज्ञा' कहते हैं।

भाववाचक संज्ञा के प्रकार–ये पाँच प्रकार के शब्दों से बनी होती हैं–

(i) जातिवाचक संज्ञा से
(ii) विशेषण से
(iii) क्रिया से
(iv) सर्वनाम से
(v) अव्यय से

भाववाचक संज्ञाएँ बनाना–

भाववाचक संज्ञाएँ पाँच प्रकार के शब्दों से बनती हैं।

(i) जातिवाचक संज्ञा

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
बच्चा	बचपन
शिशु	शैशव
गुरु	गौरव
नेता	नेतृत्व
सती	सतीत्व
चोर	चोरी
पंडित	पंडिताई
दास	दासत्व
युवा	यौवन
लड़का	लड़कपन
सेवक	सेवा
परिवार	पारिवारिक
मित्र	मित्रता
चतुर	चतुराई
शत्रु	शत्रुता
गुरु	गुरुता

(ii) विशेषण — भाववाचक संज्ञा

सरल	सरलता
गहरा	गहराई
गरीब	गरीबी
वीर	वीरता
महँगा	महँगाई
भोला	भोलापन
मीठा	मिठास

(iii) क्रिया — भाववाचक संज्ञा

चढ़ना	चढ़ाई
खेलना	खेल
जीतना	जीत
धोना	धुलाई
हारना	हार
पढ़ना	पढ़ाई

(iv) सर्वनाम — भाववाचक संज्ञा

अपना	अपनापन
निज	निजता
अहं	अहंकार
पराया	परायापन
मम	ममत्व
स्व	स्वत्व

(v) अव्यय — भाववाचक संज्ञा

समीप	समीपता
दूर	दूरी
धिक्	धिक्कार
निकट	निकटता

जातिवाचक एवं व्यक्तिवाचक संज्ञा का परस्पर परिवर्तन

जातिवाचक एवं व्यक्तिवाचक संज्ञा का एक-दूसरे के रूप में भी प्रयोग किया जा सकता है।

1. **जातिवाचक संज्ञा व्यक्तिवाचक के रूप में**—जब कोई जातिवाचक संज्ञा पूरी जाति का बोध न कराकर केवल व्यक्ति-विशेष का बोध कराए, तब जातिवाचक संज्ञा व्यक्तिवाचक संज्ञा बन जाती है।
2. **व्यक्तिवाचक संज्ञा जातिवाचक संज्ञा के रूप में**—जब किसी व्यक्ति विशेष के गुण दूसरे व्यक्ति में भी बताए जाएँ, तब व्यक्तिवाचक संज्ञा जातिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होती है।

अभ्यास

1. संज्ञा से आप क्या समझते हैं?

2. संज्ञा के विभिन्न प्रकार लिखिए।

3. समुदायवाचक तथा पदार्थवाचक संज्ञा में अंतर स्पष्ट कीजिए।

4. निम्नलिखित रिक्त स्थानों में भाववाचक संज्ञाएँ भरिए–

(क) चोर ने _____ की और पकड़ा गया।

(ख) खेतों की _____ मन को हरती है।

(ग) हमें हमेशा अपनी _____ का ध्यान रखना चाहिए।

5. निम्नलिखित अवतरण से व्यक्तिवाचक, जातिवाचक तथा भाववाचक संज्ञाएँ छाँटिए–

गांधी जी ने जो भी आंदोलन देश में चलाया उसमें उनका एक तरीका था–शांति और दृढ़ता से अपनी बात कहना और उसके लिए अहिंसात्मक आंदोलन करना। उन्होंने चार बड़े आंदोलनों का नेतृत्व किया। जब भी वे सरकार के खिलाफ आंदोलन छेड़ते, हजारों व्यक्तियों से भेंट करते और सारी सूचनाएँ एवं तथ्य इकट्ठे करते थे।

व्यक्तिवाचक – _____

जातिवाचक – _____

भाववाचक – _____

6. निम्नलिखित भाववाचक संज्ञाएँ जिन शब्दों से बनी हैं, उन्हें लिखिए–

मँहगाई	–	_____
नेतृत्व	–	_____
लिखावट	–	_____
सतीत्व	–	_____
मित्रता	–	_____
ममत्व	–	_____
चतुराई	–	_____
अंहकार	–	_____

7. नीचे दिए गए शब्दों से भाववाचक संज्ञाएँ बनाइए–

अहं	–	_____
चतुर	–	_____
स्व	–	_____
महान्	–	_____
सफल	–	_____
वीर	–	_____
शत्रु	–	_____

5 लिंग तथा वचन
(Gender & Number)

लिंग (Gender)

लिंग की परिभाषा–संज्ञा के जिस रूप से किसी व्यक्ति या वस्तु की जाति (पुरुष या स्त्री) का बोध हो, उसे 'लिंग' कहते हैं।

हिंदी में लिंग से तात्पर्य होता है–'चिह्न' । इसी चिह्न से शब्द के लिंग की जानकारी मिलती है।

लिंग के प्रकार- हिंदी में लिंग दो प्रकार के होते हैं।

1. पुल्लिंग (Masculine Gender)
2. स्त्रीलिंग (Feminine Gender)

इन दोनों प्रकार के लिंगों का संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित है–

1. **पुल्लिंग (Masculine Gender)**–जिस संज्ञा शब्द से पुरुष जाति का बोध होता है, उसे '**पुल्लिंग**' कहते हैं। **जैसे**–चूहा, पिता, नाना, दादा, लोटा आदि।
2. **स्त्रीलिंग (Feminine Gender)**–जिस संज्ञा शब्द से स्त्री जाति का बोध होता है। उसे **स्त्रीलिंग** कहते हैं। **जैसे**–चुहिया, माता, नानी, दादी, लुटिया आदि।

लिंग की पहचान

सजीव का लिंग पहचानना आसान है। यदि वे पुरुष जाति के हैं, तो पुल्लिंग तथा स्त्री जाति के हैं तो स्त्रीलिंग का बोध कराएँगे। कुछ प्राणिवाचक शब्द हमेशा पुल्लिंग में ही रहते हैं, तो कुछ हमेशा स्त्रीलिंग में रहते हैं।

सदैव पुल्लिंग रहने वाले शब्द–बाज, चीता, उल्लू, गरुड़, बिच्छू, खटमल, खरगोश, कछुआ, कौआ, भेड़िया, तोता आदि। इन शब्दों को स्त्रीलिंग बनाने के लिए इनसे पूर्व 'मादा' शब्द जोड़ दिया जाता है।

सदैव स्त्रीलिंग रहने वाले शब्द–मछली, चील, कोयल, दीमक, तितली, जोंक, मक्खी, छिपकली आदि। इन शब्दों को पुरुष वर्ग में बनाने के लिए शब्दों से पहले 'नर' शब्द लगाया जाता है।

पुल्लिंग की पहचान–

1. अकारान्त तत्सम संज्ञाएँ सदैव पुल्लिंग ही होती हैं। **जैसे**–वन, नाटक, सागर, आचरण, बंजर, चित्र, मित्र, मन, धान, उपवन आदि।
2. हिंदी के तद्भव शब्द भी पुल्लिंग में होते हैं। **जैसे**–घर, जंगल, आम, आग, दूध, गाँव आदि।
3. निम्नलिखित संज्ञाएँ पुल्लिंग होती हैं–

आ	–	झगड़ा, चिमटा, पैसा, हलुआ आदि।
पा	–	पुजापा, बुढ़ापा आदि।
पन	–	अपनापन, लकड़पन, बचपन आदि।
आव	–	छिपाव, उतराव, दुराव, बहाव आदि।
न	–	नयन, हवन, यौवन आदि।
त्व	–	स्त्रीत्व, राक्षसत्व, देवत्व, पशुत्व आदि।
क	–	लायक, नायक, गायक आदि।
आवा	–	दिखावा, बुलावा आदि।
औड़ा	–	भगौड़ा, हथौड़ा आदि।

4. पेड़ों, अनाजों, द्रव-पदार्थों, समुद्रों, देशों, महीनों, पर्वतों, वारों, ग्रहों तथा रत्नों के नाम पुल्लिंग में होते हैं। जैसे–

पेड़	–	आम, अनार, बरगद, अशोक, शीशम आदि।
अनाज	–	चना, जौ, बाजरा, मक्का, ज्वार आदि।
द्रव्य-पदार्थ	–	ताँबा, दूध, पानी, कोयला, घी आदि।
समुद्र	–	अरब सागर, हिन्द सागर, काला सागर आदि।
देश	–	चीन, जर्मनी, जापान, रूस, ब्राजील आदि।
पर्वत	–	सतपुड़ा, यूराल, विन्ध्याचल आदि।
माह	–	मार्च, अप्रैल, वैशाख, सावन, भादों आदि।
वार	–	सोमवार, मंगलवार, बृहस्पतिवार आदि।
ग्रह	–	बुध, मंगल, सूर्य, चन्द्र आदि।

5. शरीर के कुछ अंग भी पुल्लिंग होते हैं। **जैसे**–कान, गला, नाक, हाथ, पैर, सिर, मस्तक, अंगूठा, हृदय आदि।
6. 'खाना', 'दान', 'वाला' तथा 'एरा' से समाप्त होने वाले शब्द भी पुल्लिंग होते हैं। **जैसे**–पागलखाना, जेलखाना, डाकखाना, फूलदान, इत्रदान, दूधवाला, पानवाला, चायवाला, ममेरा, सपेरा, लुटेरा आदि।

स्त्रीलिंग की पहचान–

1. संस्कृत के आकारान्त शब्द स्त्रीलिंग कहलाते हैं। **जैसे**–अहिंसा, परीक्षा, माया, सभा, प्रतिज्ञा, सूचना, प्रतिभा आदि।
2. उकारान्त तत्सम संज्ञाएँ स्त्रीलिंग होती हैं। **जैसे**–वस्तु, वायु, मृत्यु, आयु आदि।
3. भाषा के नाम भी स्त्रीलिंग होते हैं। **जैसे**–अंग्रेज़ी, उर्दू, जापानी, चीनी, हिंदी, रूसी, पंजाबी आदि।
4. ईकारान्त संज्ञाएँ स्त्रीलिंग होती हैं। **जैसे**–चिट्ठी, रोशनी, चोटी, दूरी, गर्मी, सर्दी, नौकरी, नदी आदि।
5. शरीर के कुछ अंग भी स्त्रीलिंग होते हैं। **जैसे**–आँख, नाक, जीभ, पलक, जाँघ, ठोड़ी आदि।
6. कुछ बोलियाँ भी स्त्रीलिंग होती हैं। **जैसे**–कश्मीरी, पहाड़ी, पंजाबी, राजस्थानी, बंगाली, गुजराती, मराठी आदि।
7. कुछ अन्य शब्द भी स्त्रीलिंग होते हैं। **जैसे**–

आई	–	पढ़ाई, बुराई, लड़ाई, चढ़ाई, भलाई आदि।
आहट	–	मुस्कुराहट, गरमाहट, कड़वाहट आदि।
इया	–	कुटिया, लुटिया, लठिया, चुहिया आदि।
ता	–	सरलता, शिशुता, दासता, मित्रता आदि।
आवट	–	थकावट, बुनावट, सजावट आदि।
नी	–	छलनी, भरनी, जननी, करनी आदि।
इमा	–	हरीतिमा, लालिमा, कालिमा आदि।

8. नदियों व झीलों के नाम भी स्त्रीलिंग में होते हैं। **जैसे**–

नदी–गंगा, यमुना, गोदावरी, झेलम, सिन्धु आदि।

झील–बेकाल, डल, चिलका आदि।

पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के नियम–

1. 'अ' को 'आ' करके–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
प्रिय	प्रिया	बाल	बाला

अध्यक्ष	अध्यक्षा	आचार्य	आचार्या
शिक्षक	शिक्षिका	शिष्य	शिष्या

2. 'अ'/'आ' का 'ई' करके–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
पुत्र	पुत्री	दादा	दादी
घोड़ा	घोड़ी	बेटा	बेटी
लड़का	लड़की	दास	दासी

3. शब्द के अंत में 'आइन' जोड़कर–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
ठाकुर	ठकुराइन	पण्डित	पण्डिताइन
हलवाई	हलवाइन	दूबे	दुबाइन

4. 'आ' को 'इया' बनाकर–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
लोटा	लुटिया	चूहा	चुहिया
बूढ़ा	बुढ़िया	कुत्ता	कुतिया

5. शब्द के अंत में 'इन' जोड़कर–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
कहार	कहारिन	पाप	पापिन
लुहार	लुहारिन	नाग	नागिन

6. 'अक' के स्थान पर 'इका' लगाकर–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
नायक	नायिका	बालक	बालिका
लेखक	लेखिका	सेवक	सेविका
गायक	गायिका	वाचक	वाचिका

7. शब्द के अंत में 'आनी' जोड़कर–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
जेठ	जेठानी	सेठ	सेठानी
भव	भवानी	इन्द्र	इन्द्राणी
रुद्र	रुद्राणी	देवर	देवरानी

8. अंत में 'ती' जोड़कर–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
रूपवान	रूपवती	भगवान	भगवती
महान्	महती	श्रीमान्	श्रीमती
बुद्धिमान्	बुद्धिमती	वेगवान	वेगवती

9. शब्द के अंत में 'नी' को जोड़कर–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
जाट	जाटनी	हंस	हंसनी
भील	भीलनी	मोर	मोरनी
ऊँट	ऊँटनी	शेर	शेरनी

10. 'ई' की जगह 'इनी' जोड़कर–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
स्वामी	स्वामिनी	तपस्वी	तपस्विनी
यशस्वी	यशस्विनी	अभिमानी	अभिमानिनी

11. अनेक शब्द स्त्रीलिंग में भिन्न रूप हो जाते हैं–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
भाई	बहन	पिता	माता
कवि	कवयित्री	बिलाव	बिल्ली
बैल	गाय	पुरुष	स्त्री
राजा	रानी	नर	मादा
आदमी	औरत	लड़का	लड़की
सम्राट	साम्राज्ञी	वर	वधू
ससुर	सास	विधुर	विधवा

वचन (Number)

वचन की परिभाषा–शब्द के जिस रूप से यह मालूम हो कि वह एक के लिए है अथवा एक से अधिक के लिए है, उसे 'वचन' कहते हैं। जैसे–

'क' एकवचन	'ख' बहुवचन
1. पुस्तक अच्छी है।	1. पुस्तकें अच्छी हैं।
2. बच्चा रो रहा है।	2. बच्चे रो रहे हैं।
3. गाय चरती है।	3. गाएँ चरती हैं।
4. छात्र नाचती है।	4. छात्राएँ नाचती हैं।

वर्ग 'क' के वाक्यों में पुस्तक, बच्चा, गाय तथा छात्र से एक का बोध होता है। जबकि वर्ग 'ख' के वाक्यों में पुस्तकें, बच्चे, गाएँ तथा छात्राएँ अनेक होने का बोध कराती हैं।

वचन के प्रकार

हिंदी में दो प्रकार के वचन होते हैं–

1. एकवचन (Singular Number) 2. बहुवचन (Plural Number)

इन दोनों प्रकार के वचनों की आवश्यक जानकारी निम्नलिखित है–

1. **एकवचन (Singular Nubmer)**–जिस शब्द से किसी एक वस्तु, व्यक्ति या पदार्थ का बोध हो उसे 'एकवचन' कहते हैं। जैसे–पुस्तक, गाड़ी, छात्र, कलम, बच्चा, मुर्गी आदि।
2. **बहुवचन (Plural Number)**–जिस शब्द से एक से अधिक वस्तुओं, व्यक्तियों या पदार्थों का बोध हो, उसे 'बहुवचन' कहते हैं। **जैसे**–पुस्तकें, गाड़ियाँ, छात्राएँ, कलमें, बच्चे, मुर्गियाँ आदि।

वचन की पहचान

वचन की पहचान संज्ञा, सर्वनाम या क्रिया के रूप से भी होती है। **जैसे–**

1. भौंरा उड़ता है।	1. भौंरे उड़ते हैं।
2. वह घूमने गयी।	2. वे घूमने गयीं।
3. मैं लिखता हूँ।	3. हम लिखते हैं।

प्रारम्भ के तीन वाक्यों में भौंरा, वह तथा मैं शब्द एकवचन हैं। बाद के तीन वाक्यों में भौंरे, वे तथा हम शब्द बहुवचन है। भौंरा संज्ञा है–संज्ञा द्वारा वचन की पहचान होती है। वह, मैं सर्वनाम हैं–सर्वनाम द्वारा वचन की पहचान होती है। अब निम्नलिखित 'क' और 'ख' वर्ग में दिए वाक्यों को पढ़िए–

'क'	'ख'
1. हिरन पानी पी रहा है।	1. हिरन पानी पी रहे हैं।
2. मोर नाचता है।	2. मोर नाचते हैं।
3. बालक पत्र लिखेगा।	3. बालक पत्र लिखेंगे।

उपर्युक्त वाक्यों में संज्ञा से वचन का पता नहीं चलता है, क्योंकि दोनों वर्गों में यह एक ही है। इन वाक्यों में वचन की पहचान क्रिया के रूप से होती है। यहाँ वर्ग 'क' के वाक्यों में पी रहा है, नाचता है तथा लिखेगा क्रियाएँ एकवचन की हैं तथा वर्ग 'ख' में पी रहे हैं, नाचते हैं, और लिखेंगें क्रियाएँ बहुवचन का बोध कराती हैं।

वचन संबंधी महत्त्वपूर्ण प्रयोग

(क) एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग–

(अ) आदर (सम्मान) प्रकट करने के लिए भी एक व्यक्ति के लिए बहुवचन का प्रयोग होता है।

1. पं. नेहरू भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे।
2. मेरे पिता अध्यापक एवं लेखक थे।
3. अटल जी अत्यन्त उदार एवं मृदुभाषी हैं।
4. गुरुजी आप कल नहीं आए।

इन वाक्यों में थे, हैं, आए आदि बहुवचन क्रियाएँ एक व्यक्ति के लिए सम्मान प्रकट करने हेतु प्रयुक्त की गई हैं।

(ब) कभी-कभी बड़प्पन दिखाने के लिए 'मैं' की जगह 'हम' का प्रयोग करते हैं।

जैसे–प्रधानाचार्य ने अध्यापक से कहा–हम डी. आई. ओ. एस. ऑफिस जा रहे हैं।

(स) आजकल 'तू' एकवचन के स्थान पर बहुवचन शब्द 'तुम' का प्रयोग करते हैं।

(ख) बहुवचन के लिए एकवचन की परिभाषा–कभी-कभी जातिवाचक शब्द एकवचन में ही बहुवचन का बोध कराते हैं। **जैसे–**

1. नागपुर का संतरा प्रसिद्ध है।
2. मेरे पिता जी के पास एक लाख रुपया है।

इन वाक्यों में संतरा तथा रुपया एकवचन होने पर भी बहुवचन में ही प्रयोग किए गए हैं।

(ग) सदैव एकवचन में प्रयोग किए जाने वाले शब्द–आकाश, जनता, वर्षा, घी, सत्य, झूठ, पानी आदि शब्द सदैव एकवचन में ही प्रयोग किए जाते हैं। **जैसे–**

1. **आकाश** साफ है।
2. **जनता** अपना अच्छा-बुरा समझती है।

3. इस वर्ष अच्छी **वर्षा** हुई।
4. हाथरस का **घी** शुद्ध होता है।
5. आगरे का **पेठा** मशहूर है।
6. विजय सदैव **सत्य** की ही होती है।

(घ) सदैव बहुवचन में प्रयुक्त किए जाने वाले शब्द–होश, दर्शन, आँसू, प्राण, हस्ताक्षर, समाचार आदि शब्द हमेशा बहुवचन में ही प्रयुक्त होते हैं। **जैसे–**

1. सुनील जी की माता के **प्राण** निकल गए।
2. बिहार के **चुनाव-समाचार** अच्छे नहीं हैं।
3. यह सुनकर शैलेंद्र जी के **होश** उड़ गए।
4. अरे भाई ! आपके तो **दर्शन** ही **दुर्लभ** हो गए हैं।
5. भारत ने सी. टी. बी. टी. पर **हस्ताक्षर** नहीं किए हैं।
6. शहनाज की आँखों में **आँसू** आ गए हैं।

एकवचन से बहुवचन बनाने के नियम

1. आकारान्त पुल्लिंग शब्दों के अंत में 'आ' को 'ए' में बदलकर–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
बेटा	बेटे	लोटा	लोटे
पंखा	पंखे	मोजा	मोजे
गधा	गधे	कुत्ता	कुत्ते
कौआ	कौए	घोड़ा	घोड़े
भाला	भाले	तोता	तोते

2. आकारान्त स्त्रीलिंग के अंत में 'ए' को 'ऐ' में बदलकर–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
गाय	गायें	मेज	मेजें
भैंस	भैंसें	बहिन	बहिनें
माता	माताएँ	कन्या	कन्याएँ
रात	रातें	पुस्तक	पुस्तकें
बात	बातें	दीवार	दीवारें
सभा	सभाएँ	महिला	महिलाएँ
बाला	बालाएँ	माला	मालाएँ
लता	लताएँ	कथा	कथाएँ

3. ईकारान्त स्त्रीलिंग के 'ई' को 'इयाँ' में बदलकर–

डाली	डालियाँ	चाबी	चाबियाँ
चींटी	चींटियाँ	राखी	राखियाँ
पत्ती	पत्तियाँ	चोटी	चोटियाँ
घाटी	घाटियाँ	पहाड़ी	पहाड़ियाँ

4. विविध प्रकार से–

चुहिया	चुहियाँ
गौ	गौएँ
कुतिया	कुतियाँ
वस्तु	वस्तुएँ
सखी	सखियाँ

डिबिया	डिबियाँ
वधू	वधुएँ
गुड़िया	गुड़ियाँ
धेनु	धेनुएँ
तत्व	तत्वों

5. कुछ शब्दों के अंत में वृन्द, वर्ग, जन, लोग, गण आदि लगाकर बहुवचन बनाते हैं।

गुरु	गुरुजन
आप	आप लोग
मजदूर	मजदूर वर्ग

अध्यापक	अध्यापकवृन्द
प्रजा	प्रजाजन
छात्र	छात्रगण

ध्यान रखने योग्य विशेष बिन्दु–

1. कुछ संबंधसूचक संज्ञाएँ दोनों वचनों में समान रहती हैं। जैसे –मामा, नाना, दादा, काका, चाचा, पापा आदि।
2. धातुएँ सदैव एकवचन में ही प्रयोग की जाती हैं। जैसे–1. सोना महंगा है। 2. ताँबा सस्ता है।
3. जिन शब्दों के अंत में आ, ई, इ, उ, ऊ तथा औ आए तथा साथ में जब, का, के लिए, के, की, में आदि शब्द (परसर्ग) का प्रयोग हो, तो बहुवचन में ओ, यो, ओ हो जाता है। जैसे–

1. चोर भाग गया	1. चोर भाग गए।	3. भागे हुए चोरों को पकड़ो।
2. छात्र लिखता है।	2. छात्र लिखते हैं।	3. छात्रों ने लिखा।

4. जिन शब्दों के अंत में जाति, सेना या दल शब्द आते हैं, वे एकवचन में प्रयुक्त होते हैं। जैसे- जलसेना, सेवकदल आदि।
5. शब्द-युग्म को बहुवचन में बनाने के लिए केवल अंतिम शब्द में ही परिवर्तन करते हैं, दोनों में नहीं। जैसे- जीवन-शैली-जीवन-शैलियों आदि।

अभ्यास

1. 'लिंग' की परिभाषा लिखिए।

2. लिंग कितने प्रकार के होते हैं? प्रत्येक को स्पष्ट कीजिए।

3. पाँच ऐसे पुल्लिंग शब्द लिखिए जिनके अंत में पन, त्व तथा आ आया हो।

4. नीचे दिए हुए शब्दों को स्त्रीलिंग में बदलो–

अध्यक्ष	–	_____	बिलाव	–	_____
भगवान	–	_____	युवक	–	_____
हंस	–	_____	भव	–	_____
नर	–	_____	ऊँट	–	_____

5. वचन किसे कहते हैं? वचन के प्रकार भी लिखिए।

6. क्रिया द्वारा वचन की पहचान तथा हानियाँ बताइए।

7. शरीर के कौन-कौन से अंग स्त्रीलिंग तथा कौन से अंग पुल्लिंग हैं?

6 सर्वनाम (Pronoun)

सर्वनाम (Pronoun) की परिभाषा–जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें 'सर्वनाम' कहते हैं। जैसे–मैं, हम, तुम, वह, वे आदि।

सर्वनाम के प्रकार

हिंदी में सर्वनाम छः प्रकार के होते हैं–

1. पुरुषवाचक सर्वनाम (Personal Pronoun)
2. निश्चयवाचक सर्वनाम (Demonstrative Pronoun)
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम (Indefinite Pronoun)
4. निजवाचक सर्वनाम (Reflexive Pronoun)
5. संबंधवाचक सर्वनाम (Relative Pronoun)
6. प्रश्नवाचक सर्वनाम (Interrogative Pronoun)

1. **पुरुषवाचक सर्वनाम (Personal Pronoun)**–जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग तीनों पुरुष–उत्तम, मध्यम व अन्य में होता है, उन्हें 'पुरुषवाचक सर्वनाम' कहते हैं। जैसे–मैं, हम, तुम, वे आदि।

उदाहरण– मैंने तुमसे कहा कि वह तुम्हारे साथ नहीं जाएगी।

इस वाक्य में तीन सर्वनाम हैं–**मैंने, तुमसे** तथा **वह**।

इसमें, मैंने–कहने वाले (बोलने वाले) के लिए,

तुमसे–सुनने वाले के लिए,

वह–अन्य पुरुष के लिए, प्रयोग किए गए हैं।

इसी आधार पर पुरुषवाचक सर्वनाम के निम्नलिखित तीन प्रकार होते हैं–

(अ) उत्तमपुरुष वाचक (First Person)

(ब) मध्यमपुरुष वाचक (Second Person)

(स) अन्यपुरुष वाचक (Third Person)

(अ) उत्तमपुरुष वाचक (First Person)–जिस सर्वनाम का प्रयोग बोलने वाला अपने लिए करता है, उसे 'उत्तमपुरुष वाचक सर्वनाम' कहते हैं। **जैसे–** मैं, हम, मेरा आदि।

उदाहरण–

1. **मेरा** स्कूटर नया है।
2. **मैंने** खाना खाया।
3. **हम** मंदिर जाते हैं।
4. **हमारा** कमरा स्वच्छ व साफ़-सुथरा रहता है।

इन वाक्यों में मेरा, मैंने, हम तथा हमारा शब्द बोलने वाला अपने लिए प्रयोग करता है।

(ब) मध्यमपुरुष वाचक (Second Person)–जिस सर्वनाम का प्रयोग सुनने वाले के लिए किया जाता है, उसे **'मध्यमपुरुष वाचक सर्वनाम'** कहते हैं। **जैसे**–तुम, तुमको, तुम्हारा, तेरा आदि।

उदाहरण–
1. **तू** यहाँ क्यों आया है?
2. अब **तुम** क्या कर रहे हो?
3. **तुम्हारा** भाई कहाँ रहता है?

(स) अन्यपुरुष वाचक (Third Person)–जिस सर्वनाम शब्द का प्रयोग किसी अन्य व्यक्ति के लिए होता है, उसे **'अन्यपुरुष वाचक सर्वनाम'** कहते हैं। **जैसे**–वह, उसने, वे, उन्होंने, उन्हें, उसे आदि।

उदाहरण–
1. **यह** मेरी पुस्तक है।
2. **वे** मैदान में खेल रहे हैं।
3. **उन्होंने** चार पेड़ लगाए।
4. **वह** कहाँ पढ़ता है?

2. निश्चयवाचक सर्वनाम (Demonstrative Pronoun)–जिस सर्वनाम से किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति की ओर संकेत हो, उसे **'निश्चयवाचक सर्वनाम'** कहते हैं। **जैसे**–वे, ये, वह, यह आदि।

वे–दूर की वस्तुओं या व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त होता है।	(बहुवचन है।)
ये–पास की वस्तुओं या व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त होता है।	(बहुवचन है।)
वह–दूर की वस्तु या व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त होता है।	(एकवचन है।)
यह–पास की वस्तु या व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त होता है।	(एकवचन है।)

उदाहरण–
(i) **वे** पुस्तकें मीना की हैं।
(ii) **ये** पुस्तकें मेरी हैं।
(iii) **वह** बाग हमारा है।
(iv) **यह** बाग मेरा है।

इस सर्वनाम को 'संकेतवाचक सर्वनाम' भी कहते हैं।

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम (Indefinite Prounoun)–जिस सर्वनाम से किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु की ओर संकेत न हो, उसे **'अनिश्चयवाचक सर्वनाम'** कहते हैं। जैसे–कोई, किसी को, कुछ, किन्हीं आदि।

उदाहरण–
(i) श्याम ने किसी जानवर को पानी पिलाया।
(ii) भिखारी को कुछ पैसे दे दो।
(iii) पिता जी से कोई मिलने आया है।

4. निजवाचक सर्वनाम (Reflexive Pronoun)–जिस सर्वनाम शब्द से वाक्य के कर्त्ता के साथ अपनापन प्रकट हो, उसे 'निजवाचक सर्वनाम' कहते हैं। जैसे–स्वयं, आप, अपने, खुद आदि।

उदाहरण–
(i) पहाड़ी क्षेत्रों में महिलाएँ खेती का काम भी अपने आप ही करती हैं।
(ii) सैनिक **खुद** लड़ते हैं।
(iii) **आप** राहुल के मामा जी हो।
(iv) प्रत्येक छात्र को स्वयं **अपना** कार्य पूरा करना चाहिए।

ध्यान देने योग्य बातें–

1. आजकल 'मैं' के स्थान पर 'हम' का प्रयोग किया जाने लगा है। जैसे- (क) **हमारी** बात ध्यान से सुनो। (ख) हम कल मद्रास जाएँगे।
2. आदर के लिए संज्ञाओं की भांति सर्वनाम का प्रयोग भी बहुवचन की तरह ही होता है।

   जैसे–जौनपुर गए हैं मेरे चाचाजी, **वे** आज आएँगे।
3. 'तू' का प्रयोग अब न के बराबर किया जाता है। कभी-कभी अधिक प्रेम, निकटता तथा अनादर प्रकट करने के लिए इसका ही प्रयोग करते हैं। **जैसे–तू** मूर्ख है।
4. 'तू' की जगह 'तुम' का प्रयोग शिष्टाचार के लिए एकवचन में करते हैं।
5. 'मैं' की जगह हम का प्रयोग राजा, महाराजा, अधिकारीगण तथा लेखक आदि अपने लिए करते हैं।

   जैसे–(i) **हम** कल निरीक्षण करने जा रहे हैं।

   (ii) **हम** आज ही कूच करेंगे।
6. आदर हेतु बहुवचन के प्रयोग में 'आप' के साथ-साथ 'लोग' शब्द को भी जोड़ देते हैं। **जैसे–आप लोग** भी नाश्ता कर लीजिए।
7. संबंधवाचक शब्दों में 'जो-सो' की जगह 'जो-वह' का प्रयोग करने लगे हैं। **जैसे–वह** पास होगा जो पढ़ेगा।
8. कभी-कभी 'सब' एवं 'हर' विशेषण का प्रयोग अनिश्चयवाचक सर्वनाम 'कोई' के पहले करते हैं।

   जैसे–(i) आजकल अधिक की होड़ में **सब कोई** परेशान हैं।

   (ii) **हर कोई** इतनी मेहनत नहीं कर पाता ।
9. बल देने के लिए दो 'कोई' तथा 'कुछ' के बीच 'न' लगा देते हैं।

   जैसे–(i) सुनीता **कुछ-न-कुछ** अवश्य खिलाएगी।

   (ii) आखिर मैच में **कोई-न-कोई** तो जीतेगा।
10. 'कुछ-का-कुछ' का प्रयोग 'उल्टे' अर्थ में किया जाता है। **जैसे–**अरे भाई! तुम तो **कुछ-का-कुछ** समझ लेते हो।

5. संबंधवाचक सर्वनाम (Relative Pronoun)–जिस सर्वनाम द्वारा वाक्य में किसी दूसरे सर्वनाम के साथ संबंध प्रकट किया जाए उसे हम 'संबंधवाचक सर्वनाम' कहते हैं। **जैसे–**जैसा, जो, सो, जिसने आदि।

उदाहरण– (i) **जो** सोएगा, वही खोएगा।

(ii) **जिसने** कानून तोड़ा, सज़ा उसी को मिलेगी।

(iii) **जो** जैसा करेगा, वह वैसा ही भरेगा।

6. प्रश्नवाचक सर्वनाम (Interrogative Pronoun)–जिस सर्वनाम का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है, उसे '**प्रश्नवाचक सर्वनाम**' कहते हैं। जैसे–किसने, किससे, कौन, क्या, किसे, कहाँ आदि।

उदाहरण– (i) सरकारी कानून **किसने** तोड़ा?

(ii) आतंकवादी **कहाँ** रहते हैं?

(iii) **क्या** लालू यादव की सरकार बन जाएगी?

(iv) बिहार में मुख्यमंत्री **कौन** होगा?

रूप-रचना

कुछ सर्वनाम शब्दों की रूप-रचना निम्नवत् है–

पुरुषवाचक शब्द 'मैं'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	मैं, मैंने	हम, हमने, हम लोगों ने
कर्म	मुझे, मुझको	हमें, हमको, हम लोगों को
करण	मुझसे, मेरे द्वारा	हमसे, हमारे द्वारा
संप्रदान	मुझसे, मुझको, मेरे लिए	हमें, हमको, हम लोगों के लिए
अपादान	मुझसे	हमसे, हम लोगों से
संबंध	मेरा, मेरी, मेरे	हमारा, हमारी, हमारे
अधिकरण	मुझमें, मुझ पर	हममें, हम पर

संबंधवाचक शब्द 'जो'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	जो, जिसने	जो, जिन्होंने
कर्म	जिसे, जिसको	जिन्हें, जिनको
करण	जिससे, जिसके द्वारा	जिनसे, जिनके द्वारा
संप्रदान	जिसके लिए, जिसको	जिनके लिए, जिनको
अपादान	जिससे	जिनसे
संबंध	जिसका, जिसके, जिसकी	जिनका, जिनके, जिनकी
अधिकरण	जिसमें, जिस पर	जिनमें, जिन पर

निश्चयवाचक शब्द 'यह'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	यह, इनके	ये, इन्होंने
कर्म	इसे, इसको	इन्हें, इनको
करण	इससे, इसके द्वारा	इनसे, इनके द्वारा
संप्रदान	इसके लिए, इसको	इनके लिए, इनको
अपादान	इससे	इनसे
संबंध	इसका, इसके, इसकी	इनका, इनके, इनकी
अधिकरण	इसमें, इस पर	इनमें, इन पर

अनिश्चयवाचक शब्द 'कोई'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	कोई, किसी ने	किन्हीं ने
कर्म	किसी को	किन्हीं को
करण	किसी से, किसी के द्वारा	किन्हीं से, किन्हीं के द्वारा
संप्रदान	किसी को, किसी के लिए	किन्हीं को, किन्हीं के लिए
अपादान	किसी से	किन्हीं से
संबंध	किसी का, किसी के, किसी की	किन्हीं का, किन्हीं के, किन्हीं की
अधिकरण	किसी में, किसी पर	किन्हीं में, किन्हीं पर।

प्रश्नवाचक शब्द 'कौन'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	कौन, किसने	किन्होंने
कर्म	किसे, किसको	किन्हें, किनको
करण	किससे, किसके द्वारा	किनसे, किनके द्वारा
संप्रदान	किसके लिए, किसको	किनके लिए, किनको
अपादान	किससे	किनसे
संबंध	किसका, किसकी, किसके	किनका, किनकी, किनके
अधिकरण	किसमें, किस पर	किनमें, किन पर

अभ्यास

1. सर्वनाम की परिभाषा, उदाहरण सहित दीजिए।

2. पुरुषवाचक सर्वनाम की परिभाषा सोदाहरण लिखिए।

3. निम्नलिखित सर्वनामों के रूप सभी कारकों में लिखिए–तू, जो, मैं।

4. पुरुषवाचक तथा निजवाचक सर्वनाम के रूप में 'आप' शब्द का प्रयोग करते हुए तीन-तीन वाक्य बनाइए।

5. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो–

(क) यह खिलौना _____ लाया है।

(ख) _____ भी प्रश्न नहीं लिखा गया।

(ग) _____ कार्यक्रम में भाग ले वह आगे आए।

(घ) दर्द के मारे _____ मैदान से वापस लौट आया।

6. निम्नलिखित वाक्यों में से सर्वनाम छाँटिए–

(क) राम मेरी बात का उत्तर दो।

(ख) मैं तो रूपा से दोस्ती करूँगा।

(ग) जो करेगा वो भरेगा।

(घ) ईश्वर! तू बड़ा दयालु है।

(ङ) मैं आपकी क्या सेवा करूँ?

7 विशेषण (Adjective)

विशेषण (Adjective) की परिभाषा–जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता (गुण, दोष, संख्या, मात्रा आदि) बताते हैं, उन्हें 'विशेषण' कहते हैं। जैसे–

(क) अनुज ने **शुभ** समाचार सुनाया।

(ख) प्रशान्त ने **मीठे** आम खाए।

विशेष्य–विशेषण जिस शब्द की विशेषता बताता है उसे विशेष्य कहते हैं।

विशेष्य संज्ञा या सर्वनाम शब्द होता है। विशेषण शब्द विशेष्य से पहले भी प्रयुक्त हो सकता है तथा बाद में भी। जैसे–

पहले – मेरे पास **नीली** कार है।

बाद में – मेरी कार **नीली** है।

विधेय-विशेषण– विशेष्य के बाद प्रयोग होने वाले विशेषण '**विधेय-विशेषण**' कहलाते हैं।

प्रविशेषण–जो शब्द विशेषणों की भी विशेषता बताते हैं उन्हें '**प्रविशेषण**' कहते हैं।

विशेषण के प्रकार

हिंदी में विशेषण चार प्रकार के होते हैं–

1. संकेतवाचक विशेषण (Demonstrative Adjective)
2. परिमाणवाचक विशेषण (Adjective of Quantity)
3. संख्यावाचक विशेषण (Adjective of Number)
4. गुणवाचक विशेषण (Adjective of Quality)

1. संकेतवाचक विशेषण (Demonstrative Adjective)–जब सर्वनाम शब्द संज्ञा से पहले लगकर विशेषण का कार्य करने लगता है, उसे '**संकेतवाचक विशेषण**' कहते हैं। **जैसे–**

(i) **वह** पक्षी बहुत तेज़ उड़ता है।

(ii) **यह** गाय बड़ी सीधी है।

2. परिमाणवाचक विशेषण (Adjective of Quantity)–जो शब्द संज्ञा तथा सर्वनाम की मात्रा या परिमाण को प्रकट करें, उन्हें '**परिमाणवाचक विशेषण**' कहते हैं। **जैसे–**

(i) मैं **तीन लीटर** तेल लाया। (ii) आज **100 ग्राम** पनीर ले जाना।

परिमाणवाचक विशेषण भी दो प्रकार के होते हैं–

(अ) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण–जिन विशेषणों से विशेष्य के निश्चित परिमाण का ज्ञान हो उन्हें '**निश्चित परिमाणवाचक विशेषण**' कहते हैं। जैसे–मैं **2 किलो** दही तथा **1 किलो** जलेबी लाया।

(ब) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण–जिन विशेषणों से विशेष्य के निश्चित परिमाण का ज्ञान न हो, उन्हें '**अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण**' कहते हैं। **जैसे**–बाज़ार से **कुछ** सब्ज़ियाँ ले आना।

3. **संख्यावाचक विशेषण (Adjective of Number)**–जिस विशेषण से संज्ञा या सर्वनाम शब्द की संख्या प्रकट हो उसे '**संख्यावाचक विशेषण**' कहते हैं। इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं–

स्थान	–	नागरिक, शहरी, ग्रामीण आदि।
गुण	–	सच्चा, झूठा, दयालु, धर्मिक आदि।
आकार	–	बड़ा, छोटा, लंबा, गोल आदि।
दोष	–	दुष्ट, झूठ, पाप आदि।
स्वाद	–	नमकीन, कड़ुवा आदि।
रंग	–	नीला, पीला, हरा, लाल आदि।

4. **गुणवाचक विशेषण (Adjective of Quality)**–जिस शब्द से संज्ञा या सर्वनाम शब्द के गुण अथवा दोष आदि प्रकट हों उसे 'गुणवाचक विशेषण' कहते हैं।

विशेषण की अवस्थाएँ

तुलनात्मक दृष्टिकोण से विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं–

1. **मूलावस्था (Positive Degree)**–जब विशेषणों का सामान्य रूप से प्रयोग करते हुए उनकी विशेषता की किसी से तुलना नहीं की जाती है तथा केवल विशेषता के संबंध में सामान्य कथन ही होता है तब उसे विशेषण की मूलावस्था कहते हैं। **जैसे**–मुकेश **सीधा** बालक है।

2. **उत्तरावस्था (Comparative Degree)**–जब एक वस्तु की विशेषता की तुलना किसी दूसरी वस्तु की विशेषता से जाती है और एक को दूसरी से श्रेष्ठ बताया जाता है तो उसे विशेषण की **उत्तरावस्था** कहते है। **जैसे**–मृगांकी शालिनी से **अधिक** लंबी है।

3. **उत्तमावस्था (Superalative Degree)**–जब एक वस्तु की विशेषता की तुलना बहुत सी वस्तुओं के साथ की जाती है और उसे सबसे श्रेष्ठ बताया जाता है तब वह '**उत्तमावस्था**' कहलाती है। **जैसे**–अंजू कक्षा में **सबसे** सुंदर है।

मूलावस्था से उत्तरावस्था तथा उत्तमावस्था के रूप बनाना–तद्भव विशेषण शब्दों से उत्तरावस्था अथवा उत्तमावस्था के विशेषण 'से' तथा 'सबसे' आदि प्रविशेषण लगाकर बनाए जाते हैं, किंतु तत्सम शब्दों से उत्तरावस्था के विशेषण बनाने के लिए उनके साथ 'तर' प्रत्यय तथा उत्तमावस्था के विशेषण बनाने के लिए उनके साथ 'तम' प्रत्यय लगाया जाता है।

नीचे कुछ विशेषणों की तीनों अवस्थाओं के रूप दिए जा रहे हैं–

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
श्रेष्ठ	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम
लघु	लघुतर	लघुतम
महान	महानतर	महानतम
कुशल	कुशलतर	कुशलतम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
दीर्घ	दीर्घतर	दीर्घतम
निम्न	निम्नतर	निम्नतम

न्यून	न्यूनतर	न्यूनतम
कठोर	कठोरतर	कठोरतम
दृढ़	दृढ़तर	दृढ़तम
सूक्ष्म	सूक्ष्मतर	सूक्ष्मतम
तीव्र	तीव्रतर	तीव्रतम
नवीन	नवीनतर	नवीनतम
गुरु	गुरुतर	गुरुतम
प्रिय	प्रियतर	प्रियतम

परिमाणवाचक तथा संख्यावाचक विशेषणों में अंतर–सब, कुछ, थोड़े, बहुत, अधिक जैसे विशेषण जब गिनी जाने वाली वस्तुओं के साथ प्रयोग किए जाते हैं तो ये संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं। जब इनका प्रयोग ऐसी वस्तु से किया है जिन्हें गिना नहीं जा सके तब ये परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं। **जैसे**–

परिमाण	संख्यावाचक
1. मैने दस किलो घी खरीदा।	1. मैंने दस लड़कों को बुलाया।
2. हमारे घर में बहुत अनाज है।	2. हमारे घर में बहुत रुपया है।

सर्वनाम तथा सार्वनामिक विशेषणों में अंतर

यह, वह, ये, वे, कौन, कोई जैसे सर्वनाम कभी-कभी विशेषण का कार्य भी करते हैं अर्थात् जब ये संज्ञा के स्थान पर नहीं बल्कि संज्ञा के साथ प्रयोग किए जाते हैं तब से सार्वनामिक विशेषण (संकेतवाचक विशेषण) कहलाते हैं। जैसे–

सर्वनाम	सार्वनामिक विशेषण
1. **यह** कल आया था।	1. **यह** बालक कल आया था।
2. **वे** दौड़ रहे हैं।	2. **वे** लड़के दौड़ रहे हैं।
3. **कोई** आ रहा है।	3. **कोई** लड़का आ रहा है।

विशेषणों की रचना

कुछ शब्द मूल रूप से ही विशेषण होते है **जैसे**–बुरा, चतुर, उच्च, तीव्र, निम्न, दृढ़ तथा योग्य आदि।

कुछ विशेषणों की रचना संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, अव्यय आदि के द्वारा की जाती है। इनके उदाहरण निम्नवत हैं–

संज्ञा	विशेषण	संज्ञा	विशेषण
नीति	नैतिक	पीड़ा	पीड़ित
विचार	वैचारिक	जीव	जीवित
दिन	दैनिक	द्रव	द्रवित
भूत	भौतिक	घृणा	घृणित
शब्द	शाब्दिक	पुष्प	पुष्पित
साहित्य	साहित्यिक	प्यार	प्यारा

अव्यय	विशेषण
समाज	सामाजिक
योग	योगी
लोभ	लोभी
सुख	सुखी
धन	धनी
स्थान	स्थानीय
स्वर्ग	स्वर्गीय
राष्ट्र	राष्ट्रीय
वन	वनैला
पान	पानवाला
मल	मलीन
पंक	पंकिल
स्वर्ण	स्वर्णिम
श्रद्धा	श्रद्धालु
दया	दयालु
श्री	श्रीमान्
दया	दयावान
यह	ऐसा
वह	वैसा
पठ	पठित
पालना	पालने वाला
वन्दना	वन्दनीय
टिकना	टिकाऊ
ऊपर	ऊपरी
बाहर	बाहरी

अव्यय	विशेषण
भटक	भटका
पुत्र	पुत्रवती
रूप	रूपवती
सांप	सपेरा
फूफा	फूफेरा
चमक	चमकीला
गर्व	गर्वीला
रंग	रंगीला
दूध	दूधवाला
कुल	कुलीन
जयपुर	जयपुरिया
रक्त	रक्तिम
आदि	आदिम
शंका	शंकालु
गति	गतिमान
बल	बलवान
गुण	गुणवती
कौन	कैसा
तुम	तुम्हारा
बेचना	बिकाऊ
खाना	खाऊ
उड़ना	उड़ाऊ
चढ़ना	चढ़ाऊ
पीछे	पिछला
आगे	अगला

विशेषणों के लिंग तथा वचन

1. 'अ' से अंत होने वाले विशेषणों में लिंग, वचन तथा कारक में कोई परिवर्तन नहीं होता। **जैसे**–कमज़ोर लड़का, कमज़ोर लड़के।
2. 'आ' से अंत होने वाले विशेषणों में लिंग, वचन अथवा कारक उनके विशेष्य के अनुसार परिवर्तित होते हैं। जैसे-कच्चा आम, कच्चे आम, कच्ची सब्ज़ियाँ आदि।

3. 'ई' तथा 'उ' के अंत वाले विशेषणों के लिंग, वचन और कारकों में भी कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे–दयालु लोग, दयालु लड़के आदि।

4. संकेतवाचक विशेषणों में यह सर्वनामों की भाँति बदलते हैं। **जैसे**–यह बालक, ये बालक, इन बालकों ने, इस बालक ने आदि।

5. जब संज्ञा का लोप हो जाता है और विशेषणों का ही संज्ञा की तरह प्रयोग होता है।

6. कभी-कभी कुछ शब्द विशेषणों की भी विशेषता बताते हैं। **जैसे**–1. लड़का **बहुत** दुबला है। 2. वह काफ़ी सुंदर है।

   इन वाक्यों में बहुत तथा काफ़ी शब्द अपने से आगे प्रयुक्त दुबला तथा सुंदर विशेषण शब्दों की विशेषता बता रहे हैं। ऐसे शब्दों को '**प्रविशेषण**' कहते हैं।

अभ्यास

1. विशेषण से आप क्या समझते हैं? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

2. विशेषण के विभिन्न प्रकार लिखिए।

3. विशेषण तथा विशेष्य के अंतर को स्पष्ट कीजिए।

4. विशेषण की अवस्था से आप क्या समझते हैं?

5. सार्वनामिक विशेषण को सांकेतिक विशेषण भी कहते हैं, क्यों?

6. विशेषण की उत्तरावस्था मूलावस्था से किस प्रकार भिन्न है? स्पष्ट कीजिए।

7. निम्नलिखित वाक्यों में से विशेषण छाँटकर लिखिए–

(क) यह गाड़ी लखनऊ जा रही है।
(ख) महात्मा लाल वस्त्र पहनते हैं।
(ग) आठ धावक मैदान में दौड़ेंगे।
(घ) सब्ज़ी में कम नमक है।

8. रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त विशेषण से कीजिए–

(क) दिनेश आज _____ लीटर दूध ले आओ।
(ख) रात्रि में _____ तारे निकलते हैं।
(ग) मेरी शर्ट में _____ बटन लगे हैं।
(घ) अच्छे _____ समय पर विद्यालय जाते हैं।

8 क्रिया (Verb)

क्रिया (Verb) की परिभाषा–जिन शब्दों से किसी कार्य के होने अथवा कार्य किए जाने का ज्ञान होता हो, उन्हें क्रिया कहते हैं। जैसे–खाएगा, पढ़ेगा, खेलता है।

उदाहरण– (अ) सूर्य प्रातः उगता है।
(ब) सीता नाच रही है।
(स) बच्चे रो रहे हैं।

इन वाक्यों में काले छपे शब्द क्रियाएँ हैं।

धातु–क्रिया के मूल रूप को धातु कहा जाता है।

जैसे– **खा** से खाना। **उठ** से उठना आदि।

क्रिया के प्रकार

(क) कर्म की दृष्टि से क्रिया के प्रकार–कर्म के आधार पर क्रियाओं को दो वर्गों में बाँटा गया है–

(अ) अकर्मक क्रिया (Intransitive verb)

(ब) सकर्मक क्रिया (Transitive verb)

(अ) अकर्मक क्रिया–वे क्रियाएँ जिनके साथ कर्म न हो तथा कर्त्ता क्रिया के व्यवहार का पालन करता हो तथा फल कर्त्ता पर पड़े अकर्मक क्रिया कहलाती हैं। **जैसे**–बच्चा रो रहा है। सुमन गा रही है।

(ब) सकर्मक क्रिया–वे क्रियाएँ जिनके साथ कर्म लगे तथा क्रिया का फल कर्त्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़े, उन्हें सकर्मक क्रिया कहते हैं **जैसे–**

1. वह रिवाल्वर चलाता है।
2. सचिन क्रिकेट खेलता है।
3. सुनीता गाना गाती है।

इन वाक्यों में क्रिया का फल कर्म पर पड़ रहा है। अतः ये सकर्मक क्रियाएँ हैं।

पहचान–वाक्य में क्रिया के साथ 'क्या', 'किस' तथा 'किसको' शब्द लगाकर प्रश्न करने पर यदि उचित उत्तर मिले, तो क्रिया 'सकर्मक' होती है।

यदि उचित उत्तर न मिले, तो क्रिया 'अकर्मक' होती है।

सकर्मक क्रिया के प्रकार–सकर्मक क्रियाएँ भी दो प्रकार की होती हैं–

(अ) एककर्मक क्रिया–जब वाक्य में एक ही कर्म होता है, तो उसे '**एककर्मक क्रिया**' कहते हैं।

जैसे–
1. माँ बच्चे को सुलाती है।
2. ग्वाले पशु चराते हैं।
3. मैकू पेड़ से फल तोड़ता है।
4. नज़मा ड्रामा करती है।

इन वाक्यों में क्रिया के साथ एक ही कर्म है। अतः इसे '**एककर्मक क्रिया**' कहते हैं।

(ब) द्विकर्मक क्रिया–जब वाक्य में दो कर्म होते हैं और क्रिया का प्रभाव दोनों ही कर्मों पर पड़ता है, तो उसे 'द्विकर्मक क्रिया' कहते हैं। **जैसे**–स्त्री बच्चे को **दूध** पिलाती है। इस वाक्य में 'पिलाती है' क्रिया का प्रभाव 'बच्चे' तथा 'दूध' दोनों कर्मों पर पड़ रहा है। अत: यहाँ 'पिलाती है' क्रिया 'द्विकर्मक' है।

सकर्मक क्रिया का अकर्मक क्रिया के रूप में प्रयोग–जहाँ पर सकर्मक क्रिया केवल कार्य को प्रकट करती है, कर्म की आवश्यकता नहीं समझी जाती है–वहाँ पर सकर्मक क्रिया भी अकर्मक क्रिया ही समझी जाती है। जैसे–बच्चा देखता है।

इस वाक्य में केवल इतना ही स्पष्ट है कि बालक देख सकता है, अंधा नहीं है। अत: यहाँ 'देखता है' क्रिया सकर्मक होते हुए भी अकर्मक है।

जब वाक्य इस प्रकार हो, **जैसे**–बच्चा टी.वी. देखता है। इस प्रकार के वाक्य में 'देखता है' क्रिया पुन: सकर्मक हो जाती है।

द्विकर्मक क्रिया के संबंध में ध्यान रखने योग्य बातें–

1. इनमें मुख्य कर्म के साथ 'को' परसर्ग नहीं आता।
2. गौण कर्म निर्जीव होता है तथा इसके साथ 'को' परसर्ग लगा होता है।
3. मुख्य कर्म निर्जीव होता है।
4. मुख्य कर्म गौण कर्म के बाद तथा क्रिया से पहले आता है।

अपूर्ण क्रिया–जो क्रिया पूर्ण होने के लिए किसी शब्द की अपेक्षा रखती है, उसे '**अपूर्ण क्रिया**' कहते हैं। इसमें अर्थ को पूरा करने के लिए या तो कर्त्ता के पूरक की या कर्म के पूरक की आवश्यकता पड़ती है।

जैसे– 1. अध्यापक _____ हैं।

2. हमने अनिल को _____ बनाया।

(ख) रचना के आधार पर क्रिया के प्रकार–इन क्रियाओं को '**यौगिक क्रिया**' कहते हैं।

यौगिक क्रिया–वाक्य में जो क्रिया दो या दो से अधिक शब्दों या क्रिया के योग से बनती है, उसे '**यौगिक क्रिया**' कहते हैं।

रचना के आधार पर क्रियाएँ पाँच प्रकार की होती हैं–

1. प्रेरणार्थक क्रिया (Causative Verb)
2. नामधातु क्रिया (Nominal Verb)
3. कृदन्त क्रिया (Suffix-Ending Verb)
4. पूर्वकालिक क्रिया (Puravkalik Verb)
4. संयुक्त क्रिया (Puravkalik Verb) ज़

1. प्रेरणार्थक क्रिया (Causative Verb)–जब वाक्य में कर्त्ता स्वयं क्रिया न करके किसी अन्य व्यक्ति को प्रेरित करके उससे क्रिया कराता है, तो उसे '**प्रेरणार्थक क्रिया**' कहते हैं।

जैसे– 1. आचार्य जी ने राहुल को सुषमा से बुलवाया।

2. पिता ने पुत्र से पत्र लिखवाया।

वाक्य 1. में आचार्य जी ने राहुल को स्वयं न बुलाकर सुषमा से बुलवाया अथवा कर्त्ता ने स्वयं कार्य न करके दूसरे व्यक्ति से करवाया है। अत: यहाँ बुलवाया प्रेरणार्थक क्रियाए है।

2. पिता जी ने स्वयं पत्र लिखने का कार्य नहीं किया, बल्कि पुत्र से लिखवाया। अत: लिखवाया प्रेरणार्थक किया है।

(अ) प्रथम प्रेरणार्थक–जब वाक्य में कर्त्ता स्वयं कार्य में सम्मिलित होता हुआ प्रेरणा देता है तब उसे '**प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया**' कहते हैं। **जैसे**–महात्मा जी सबको प्रवचन सुनाते हैं।

(ब) द्वितीय प्रेरणार्थक–जब वाक्य में कर्त्ता स्वयं कार्य न करके किसी अन्य को कार्य करने की प्रेरणा देता है तब उसे '**द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया**' कहते हैं।

जैसे– 1. वह आचार्य जी से बच्चों को पढ़वाते हैं।

2. पंडित जी शिष्यों से कथा करवाते हैं।

प्रेरक कर्त्ता– प्रेरणा करने वाला प्रेरक कर्त्ता कहलाता है।

प्रेरित कर्त्ता– जिसमें काम की प्रेरणा की जाती है वह **प्रेरित कर्त्ता** कहलाता है।

2. नामधातु क्रिया (Nominal Verbs)–जब वाक्य में प्रयुक्त क्रियाएँ संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण शब्दों के साथ प्रत्यय लगाकर बनती हैं तब इन क्रियाओं को **नामधातु क्रिया** कहते हैं

जैसे– 1. सुमन ने लता की सारी चाट **हथिया ली**।

2. हमने गांधी जी की नीति **अपना ली** है।

यहाँ प्रथम वाक्य में 'हथिया ली' क्रिया है, यह क्रिया 'हाथ' संज्ञा शब्द से बनी है। दूसरे वाक्य में 'अपना ली है' क्रिया है। यह क्रिया 'अपना' सर्वनाम शब्द से बनी है अत: ये क्रियाएँ नामधातु क्रियाएँ हैं।

नामधातु बनाना

शब्द	प्रत्यय	नामधातु	क्रिया का सामान्य रूप
बात	या	बतिया	बतियाना
हाथ	या	हथिया	हथियाना
गर्म	आ	गरमा	गर्माना
आप	ना	अपना	अपनाना
झूठ	ला	झुठला	झुठलाना
दु:ख	आ	दुखा	दुखाना
शर्म	आ	शर्मा	शर्माना

3. कृदन्त क्रिया (Suffix-ending Verbs)–वाक्य में शब्दों के अंत में प्रत्यय (शब्दांश) लगा कर बनाई गई क्रियाओं को कृदन्त क्रिया कहते हैं। जैसे–

वर्तमानकालिक कृदन्त–

हँस + ता = हँसता लिख + ता = लिखता।

भूतकालिक कृदन्त–

पढ़ + आ = पढ़ा खेल + आ = खेला।

पूर्वकालिक कृदन्त–

देख + कर = देखकर खेल + कर = खेलकर।

4. पूर्वकालिक क्रिया–जब वाक्य में किसी क्रिया के समाप्त होने से पहले दूसरी क्रिया के होने का उल्लेख हो, तो उसे पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं।

जैसे– 1. बच्चा **रोकर** सो गया है।

2. तुम अभी **सोकर** आ रहे हो।

3. सुनील खाना **खाकर** आएगा।

इन वाक्यों में रोकर, सोकर तथा खाकर क्रियाएँ मुख्य क्रियाओं से पहले प्रयुक्त की गई हैं। अत: ये पूर्वकालिक क्रियाएँ हैं। पूर्वकालिक क्रिया की रचना करते समय मूल धातु में 'कर' जोड़ देते हैं जैसे रोकर,सोकर, खाकर, पढ़कर आदि।

एक मात्रा 'करना' क्रिया को पूर्वकालिक बनाने के लिए उसके साथ 'के' जोड़ देते हैं। ऐसा करने से 'करना' क्रिया का रूप करके हो जाता है।

5. संयुक्त क्रिया–जो क्रिया दूसरी क्रिया या शब्द-भेद के याग से बनती है, उसे संयुक्त क्रिया कहते है।

उपर्युक्त वाक्यों में **आया-जाया**, **पढ़ना-लिखना**, **लेना-देना**, आदि संयुक्त क्रियाओं के योग से होती है तो एक क्रिया मुख्य और दूसरी सहायक के रूप में प्रयुक्त होती है।

जैसे– 1. वह मेरे घर **आया-जाया** करता है।

2. आज **पढ़ना-लिखना** नहीं होगा।

3. उससे मेरा कोई **लेना-देना** नहीं है।

मूल क्रिया–जो क्रियाएँ मूल शब्दों से बनती हैं वे **'मूल क्रिया'** कहलाती हैं। **जैसे–**रोना, पढ़ना, खाना, लिखना आदि।

अभ्यास

1. 'क्रिया' से आपका क्या अभिप्राय है? उदाहरण सहित लिखिए।

2. कर्म के आधार पर क्रिया के प्रकार लिखिए।

3. 'पूर्वकालिक क्रिया' की परिभाषा लिखिए।

4. रचना के आधार पर क्रिया के प्रकार लिखिए।

5. क्रिया के प्रकार लिखिए।

6. 'संयुक्त क्रिया' से आप क्या समझते हैं? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

7. सकर्मक क्रिया का अकर्मक क्रिया के रूप में किस प्रकार से प्रयोग होता है? स्पष्ट कीजिए।

8. अकर्मक क्रिया तथा सकर्मक क्रिया में अंतर स्पष्ट कीजिए।

9. प्रेरणार्थक तथा नामधातु क्रिया में अंतर लिखिए।

10. 'यौगिक क्रिया' से आप क्या समझते हैं?

11. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) बकरी ने बचने के अनेक प्रयत्न _____।

(ख) भेड़िए ने बकरी पर आक्रमण _____।

(ग) राम ने सोहन के घर मिठाई _____।

(घ) पुलिस को देखकर अपराधी _____।

(ङ) राजीव ने पुत्री को डॉक्टर _____।

(च) इंजीनियर ने अनेक इमारतों के नक्शों _____।

12. निम्नलिखित वाक्यों के सम्मुख उनकी क्रियाओं के नाम लिखिए-

(क) बंदर पेड़ पर चढ़ गया। _____

(ख) गीता लिखकर गा रही है। _____

(ग) बहू ने शर्माना छोड़ दिया। _____

(घ) पंडित जी पूजा-पाठ करवाते हैं। _____

(ङ) राहुल ने पंकज से पत्र पढ़वाया। _____

(च) रीता ने सारिका के घर मिठाई भिजवाई। _____

(छ) सैनिक मरकर भी अमर हो गए। _____

13. निम्नलिखित क्रियाओं से वाक्य बनाइए–

बुलाना, पीना, लिखना, सोना, खाना, पढ़ना।

9 कारक तथा उसके भेद
(Case & Its Kinds)

कारक (Case) की परिभाषा–संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध क्रिया तथा दूसरे शब्दों के साथ प्रकट किया जाता है। उसे 'कारक' कहते हैं।

विभक्ति–कारकों का रूप प्रकट करने के लिए उनके साथ जो शब्द चिह्न लगते हैं उनको **'विभक्ति'** कहा जाता है। **जैसे–** से, को, के लिए, ने आदि।

परसर्ग–इन विभक्तियों को **'परसर्ग'** भी कहा जाता है क्योंकि ये संज्ञा, सर्वनाम आदि शब्दों के बाद जोड़े जाते हैं।

कारक के प्रकार

कारक आठ होते हैं तथा इनमें से प्रत्येक के लिए कुछ विभक्तियाँ निर्धारित होती हैं। ये कारक तथा इनसे संबंधित विभक्तियाँ इस प्रकार हैं–

	कारक	विभक्तियाँ
1.	कर्त्ता कारक	ने
2.	कर्म कारक	को
3.	करण कारक	से, के द्वारा
4.	संप्रदान कारक	के लिए, को (देना)
5.	अपादान कारक	से (की अपेक्षा)
6.	संबंध कारक	का, के, की, ना, नी, ने रा, रे, री
7.	अधिकरण कारक	में, पर, ऊपर
8.	संबोधन	हे!, रे!, अरे!, आदि।

उपर्युक्त आठ प्रकार के कारकों की आवश्यक जानकारी निम्नलिखित है–

1. **कर्त्ता कारक (Nominative Case)**–संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया करने वाले का बोध हो, उसे **'कर्त्ता कारक'** कहते हैं।

   जैसे–
   (i) **सुनीता** पत्र लिखती है।
   (ii) **अशोक** को बाजार जाना है।
   (iii) **कोमल** ने पत्र लिखा।
   (iv) **पुलिस** के द्वारा यह कार्य किया गया है।

   हिंदी में कर्त्ता कारक का प्रयोग 'ने' विभक्ति के साथ तथा इसके बिना भी किया जाता है,

   जैसे– (i) **मोहन** सोता है। (ii) मोहन **ने** स्नान किया।

   कर्त्ता कारक की 'ने' विभक्ति वाक्यों में क्रिया सदैव भूतकाल में रहती है।

2. **कर्म कारक (Objective Case)**–वाक्य में जिस शब्द पर क्रिया के काम का प्रभाव पड़े उसे **'कर्म कारक'** कहते हैं।

   जैसे– (i) पुलिस ने **चोर** को पकड़ा। (ii) प्रवीण ने **खाना** खाया।

हिंदी में कर्म कारक का प्रयोग 'को' विभक्ति के साथ तथा इसके बिना भी किया जाता है।

जैसे– (i) सुषमा **संतरा** खाती है। (ii) पुलिस ने **आतंकवादी** को पकड़ा।

विभक्ति 'को' का प्रयोग प्राणिवाचक कर्म के साथ होता है, निर्जीव संज्ञा के साथ नहीं।

3. करण कारक (Instrumental Case)–वाक्य में कर्त्ता जिस साधन की सहायता से काम करता है उसे '**करण कारक**' कहते हैं।

जैसे–
(i) माताजी ने **हाथ से** चावल खाए।
(ii) पुलिस ने **डंडे से** छात्रों को खदेड़ा।
(iii) ग्रामीण ने **नमक से** रोटी खा ली।

करण कारक की विभक्ति 'से, द्वारा, के द्वारा, के साथ' होती हैं। विभक्ति 'से' का प्रयोग केवल साधन के रूप में ही नहीं किया जाता, बल्कि कारण का बोध कराने के लिए भी किया जाता है। **जैसे**–वह डायरिया से मरा।

4. संप्रदान कारक (Dative Case)–वाक्य में कर्त्ता द्वारा जिसके लिए कुछ दिया या लिया जाए उसे '**संप्रदान कारक**' कहते हैं।

जैसे–
(i) केंद्र सरकार ने उड़ीसा **को** नौ करोड़ रुपए का पैकेज दिया।
(ii) अनिल पिता **के लिए** कपड़े लाया।
(iii) प्यासे व्यक्ति **को** पानी पिलाओ।
(iv) अमेरिका ने भारत **को** करोड़ों डॉलर की सहायता दी।

इन वाक्यों में उड़ीसा को, पिता के लिए प्यासे व्यक्ति को तथा भारत को संप्रदान कारक हैं। इनकी विभक्ति 'के लिए', 'के वास्ते' तथा 'को' हैं।

5. अपादान कारक (Ablative Case)–वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से एक वस्तु का दूसरी वस्तु के साथ संबंध ज्ञात हो, उसे '**अपादान कारक**' कहते हैं।

जैसे–
(i) बिल्ली कुत्तों से डरती है। (डरना)
(ii) गंगा नदी सतलुज नदी से लंबी है। (तुलना)
(iii) भारत नेपाल से विकसित देश है। (तुलना)

6. संबंध कारक (Possessive Case)–वाक्य में संज्ञा के जिस रूप से एक वस्तु का दूसरी वस्तु के साथ संबंध ज्ञात हो, उसे '**संबंध कारक**' कहते हैं। संबंध कारक की विभक्तियाँ का, के, की, रा, रे, री, ना, ने, नी हैं।

जैसे–
(i) अटल जी भारत **के** प्रधानमंत्री थे।
(ii) कश्मीर भारत **का** अभिन्न अंग है।
(iii) राधा श्रीकृष्ण भगवान **की** प्रेमिका हैं।

इन वाक्यों में भारत के, भारत का तथा श्रीकृष्ण भगवान की शब्द संबंध कारक हैं।

7. अधिकरण कारक (Locative Case)–वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के आधार का बोध हो, उसे '**अधिकरण कारक**' कहते हैं। अधिकरण कारक की विभक्ति 'में' तथा 'पर' (In, On, At, Into) हैं।

जैसे–
(i) ताजमहल आगरा **में** है। (In)
(ii) आलोक छत **पर** सो रहा है। (On)
(iii) मेंढक कुएँ **में** कूदा। (Into)
(iv) चित्र दीवार **पर** लगा है। (At)

इन वाक्यों में आगरा में, छत पर, कुएँ में, दीवार पर शब्द अधिकरण कारक हैं।

8. संबोधन कारक (Vocative Case)–वाक्य में संज्ञा के जिस रूप से किसी को पुकारने या बुलाने आदि का बोध हो, उसे '**संबोधन कारक**' कहते हैं।

संबोधन कारक की विभक्ति हैं–अरे !, ओ ! आदि। ये ही इस कारक के विभक्ति-चिह्न हैं।

जैसे–
1. अरे अतुल ! तुम कब आए?
2. हे भगवान ! सबकी रक्षा करो।
3. ओ राधा ! तुम आ गईं।

इन वाक्यों में अरे !, हे भगवान ! तथा ओ राधा ! शब्दों से किसी को पुकारना प्रकट होता है। अतः ये संबोधन कारक हैं।

कारकों में अंतर

1. कर्म कारक तथा संप्रदान कारक में अंतर–कर्म कारक में जिस शब्द के साथ 'को' जुड़ा होता है उस पर क्रिया का प्रभाव पड़ता है।

जैसे– (अ) शर्मा जी ने अतुल को पढ़ाया।
(ब) बच्चों ने कहानी को पढ़ा।

संप्रदान कारक के चिह्न 'को' का अर्थ है–'**के लिए**' या '**वास्ते**'। जहाँ किसी को कुछ देने या किसी के द्वारा कुछ काम करने का बोध हो, वहाँ 'को' का प्रयोग होता है तथा उसका आशय 'के लिए', 'के वास्ते' आदि से ही होता है।

जैसे–	**कर्म कारक**	**संप्रदान कारक**
1.	पिता जी **को** नमस्ते करो।	भूखे **को** खाना दो।
2.	वर्मा जी ने विपुल **को** पढ़ाया।	वहाँ पीने **को** पानी नहीं है।

2. करण कारक तथा अपादान कारक में अंतर–दोनों ही कारकों की विभक्ति 'से' है। करण कारक में 'से' का अर्थ–सहायता या द्वारा होता है। जबकि अपादान कारक में 'से' का अर्थ–पृथकता से होता है।

जैसे–	**करण कारक**	**अपादान कारक**
(i)	ईश्वर विशाल नेत्रों **से** सबको देखता है।	(ii) सोना खान **से** निकाला जाता है।
(iii)	अनिता कार **से** कॉलेज गई।	(iv) सोनिया इटली **से** भारत आई।

करण कारक में 'से' शब्द का अर्थ 'द्वारा' (नेत्रों से, कार से) होता है। जबकि अपादान कारक में, 'से' का अर्थ होता है–अलग करना।

विभक्तियों का प्रयोग

(क) विभक्ति 'ने' का प्रयोग–

(अ) 'ने' विभक्ति का प्रयोग वर्तमान काल में नहीं करते हैं।

जैसे–
1. प्रतिभा प्रातःकाल पढ़ती है।
2. राम काम करता है।

(ब) 'ने' विभक्ति का प्रयोग भूतकाल की सकर्मक क्रिया के साथ होता है। जैसे–

जैसे–
1. अशोक **ने** शादी की।
2. राम **ने** रावण को मारा।

(ख) विभक्ति 'को' का प्रयोग–

(अ) विभक्ति 'को' का प्रयोग प्राणिवाचक कर्म के साथ होता है, अप्राणिवाचक के साथ नहीं।

जैसे– 1. घोड़ा घास खाता है।

2. सुनीता ने गुड़िया को पत्र लिखा।

इन वाक्यों में घास अप्राणिवाचक कर्म है, जबकि गुड़िया प्राणिवाचक है। इसलिए गुड़िया के साथ विभक्ति 'को' का प्रयोग हुआ है।

(ब) जिन वाक्यों में 'चाहिए' तथा 'जाना है' क्रिया का प्रयोग हो, वहाँ भी इस विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

जैसे– 1. अनिल को दिल्ली जाना है।

2. रेखा को आराम चाहिए।

3. ममता को प्यार चाहिए।

(स) निश्चित समयसूचक संज्ञा के साथ भी इस विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

जैसे– 1. मैं 17 मार्च **को** कानपुर जा रहा हूँ।

2. हम 5 फरवरी **को** हरियाणा गए।

3. मनीषा! तुम रविवार को जाना।

(ग) विभक्ति 'से' का प्रयोग–

(अ) विभक्ति 'से' का प्रयोग कर्त्ता, कर्म, करण तथा अपादान कारक में किया जाता है।

जैसे– 1. वृद्ध महिला **से** चला नहीं जाता। (कर्त्ता)

2. सुषमा ने सारी बात धर्मेन्द्र **से** कह दी। (कर्म)

3. मैं कार **से** कानपुर जाऊँगा। (करण)

4. प्रतीश कल दिल्ली **से** आया। (अपादान)

(ब) विभक्ति 'से' का प्रयोग स्थान व समय सूचित करने के लिए भी किया जाता है।

जैसे–विवेक शाम 7 बजे **से** घर पर पढ़ रहा है।

(स) प्रेरित कर्त्ता के सामने इसी विभक्ति का प्रयोग करते हैं। **जैसे**–पाकिस्तान ने कोरिया **से** मिसाइल बनवाई।

(घ) विभक्ति 'पर' का ऊपर के लिए प्रयोग–

'पर' का ऊपर के लिए प्रयोग अधिकरण कारक में होता है।

जैसे– 1. बच्चों ! छत पर मत कूदो। (छत के ऊपर)

2. बंदर वृक्ष पर बैठा है। (वृक्ष के ऊपर)

(ङ) 'में' विभक्ति का प्रयोग अधिकरण कारक में होता है। **जैसे**–राष्ट्रपति भवन में 300 कमरे हैं।

(च) 'के लिए' विभक्ति का प्रयोग केवल संप्रदान कारक में होता हैं। **जैसे**–अमिता शादी के लिए इटावा गई।

रूप-रचना

संज्ञा के शब्द से रूप, लिंग तथा वचन के अनुसार कारकों में होने वाले परिवर्तनों को 'रूप-रचना' कहते हैं। कुछ प्रमुख संज्ञा शब्दों की रूप-रचना निम्नलिखित है–

अकारान्त पुल्लिंग शब्द 'वृक्ष'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	वृक्ष, वृक्ष ने	वृक्षों, वृक्षों ने
कर्म	वृक्ष को	वृक्षों को
करण	वृक्ष से	वृक्षों से

संप्रदान	वृक्ष को, वृक्ष के लिए	वृक्षों को, वृक्षों के लिए
अपादान	वृक्ष से	वृक्षों से
संबंध	वृक्ष का, वृक्ष के, वृक्ष की	वृक्षों का, वृक्षों के, वृक्षों की
अधिकरण	वृक्ष में, वृक्ष पर	वृक्षों में, वृक्षों पर
संबोधन	हे वृक्ष!	हे वृक्षों!

आकारान्त पुल्लिंग शब्द 'बच्चा'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	बच्चा, बच्चे ने	बच्चे, बच्चों ने
कर्म	बच्चे को	बच्चों को
करण	बच्चे से	बच्चों से
संप्रदान	बच्चे को, बच्चे के लिए	बच्चों को, बच्चों के लिए
अपादान	बच्चे से	बच्चों से
संबंध	हे बच्चे !	हे बच्चो !
अधिकरण	बच्चे में, बच्चे पर	बच्चों में, बच्चों पर
संबोधन	बच्चे का, बच्चे के, बच्चे की	बच्चों का, बच्चों के, बच्चों की

इकारान्त पुल्लिंग शब्द 'कवि'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	कवि, कवि ने	कवियों, कवियों ने
कर्म	कवि को	कवियों को
करण	कवि से	कवियों से
संप्रदान	कवि को, कवि के लिए	कवियों को, कवियों के लिए
अपादान	कवि से	कवियों से
संबंध	कवि का, कवि के, कवि की	कवियों का, कवियों के, कवियों की
अधिकरण	कवि में, कवि पर	कवियों में, कवियों पर
संबोधन	हे कवि !	हे कवियो !

ईकारान्त पुल्लिंग शब्द 'माली'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	माली, माली ने	मालियों, मालियों ने
कर्म	माली को	मालियों को
करण	माली से	मालियों से
संप्रदान	माली को, माली के लिए	मालियों को, मालियों के लिए
अपादान	माली से	मालियों से
संबंध	माली का, माली के, माली की	मालियों का, मालियों के, मालियों की
अधिकरण	माली में, माली पर	मालियों में, मालियों पर
संबोधन	हे माली !	हे मालियो !

उकारान्त पुल्लिंग शब्द 'साधु'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	साधु, साधु ने	साधुओं, साधुओं ने
कर्म	साधु को	साधुओं को
करण	साधु से	साधुओं से
संप्रदान	साधु को, साधु के लिए	साधुओं को, साधुओं के लिए
अपादान	साधु से	साधुओं से
संबंध	साधु का, साधु के, साधु की	साधुओं का, साधुओं के, साधुओं की
अधिकरण	साधु में, साधु पर	साधुओं में, साधुओं पर
संबोधन	हे साधु !	हे साधुओ !

ऊकारान्त पुल्लिंग शब्द 'बाबू'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	बाबू, बाबू ने	बाबुओं, बाबुओं ने
कर्म	बाबू को	बाबुओं को
करण	बाबू से	बाबुओं से
संप्रदान	बाबू को, बाबू के लिए	बाबुओं को, बाबुओं के लिए
अपादान	बाबू से	बाबुओं से
संबंध	बाबू का, बाबू के, बाबू की	बाबुओं का, बाबुओं के, बाबुओं की
अधिकरण	बाबू में, बाबू पर	बाबुओं में, बाबुओं पर
संबोधन	हे बाबू !	हे बाबुओ !

आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द 'लता'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	लता, लता ने	लताओं, लताओं ने
कर्म	लता को	लताओं को
करण	लता से	लताओं से
संप्रदान	लता को, लता के लिए	लताओं को, लताओं के लिए
अपादान	लता से	लताओं से
संबंध	लता का, लता के, लता की	लताओं का, लताओं के, लताओं की
अधिकरण	लता में, लता पर	लताओं में, लताओं पर
संबोधन	हे लता !	हे लताओ!

ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्द 'रानी'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	रानी, रानी ने	रानियों, रानियों ने
कर्म	रानी को	रानियों को
करण	रानी से	रानियों से
संप्रदान	रानी को, रानी के लिए	रानियों को, रानियों के लिए

अपादान	रानी से	रानियों से
संबंध	रानी का, रानी के, रानी की	रानियों का, रानियों के, रानियों की
अधिकरण	रानी में, रानी पर	रानियों में, रानियों पर
संबोधन	हे रानी !	हे रानियो !

ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्द 'वधू'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	वधू, वधू ने	वधुओं, वधुओं ने
कर्म	वधू को	वधुओं को
करण	वधू से	वधुओं से
संप्रदान	वधू को, वधू के लिए	वधुओं को, वधुओं के लिए
अपादान	वधू से	वधुओं से
संबंध	वधू का, वधू के, वधू की	वधुओं का, वधुओं के, वधुओं की
अधिकरण	वधू में, वधू पर	वधुओं में, वधुओं पर
संबोधन	हे वधू !	हे वधुओ !

अभ्यास

1. कारक से आप क्या समझते हैं?
2. कारकों के विभिन्न प्रकार लिखिए।
3. संप्रदान कारक तथा कर्म कारक में अंतर स्पष्ट कीजिए?
4. विभक्ति किसे कहते हैं? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
5. विभक्ति तथा कारक में अंतर स्पष्ट कीजिए।
6. करण कारक तथा अपादान कारक में अंतर स्पष्ट कीजिए।
7. रिक्त स्थानों की पूर्ति विभक्तियों द्वारा कीजिए–
   (क) अंकित _____ पुस्तक खरीदी।
   (ख) अखिलेश, सिन्धी अपने ननिहाल _____ नहीं गए।
   (ग) प्रिया _____ अब आना चाहिए।
   (घ) मेरे _____ कौन जाएगा?
   (ङ) सुधा अपनी माता _____ मंदिर गई।
8. नीचे दी गई कारकों की विभक्तियों के सामने उनसे संबंधित कारकों के नाम लिखिए–
   साथ के – _____
   ने – _____
   में – _____
   को – _____
   से – _____

10 काल (Tense)

परिभाषा–क्रिया के जिस रूप से उसके कार्य-व्यापार का बोध होता हो, उसे काल कहते हैं।

जैसे– मैं पढ़ता हूँ। वह पढ़ता था। वे पढ़ेंगे।

यहाँ पढ़ता हूँ, पढ़ता था तथा पढ़ेंगे से पढ़ने की क्रियाओं के समय का बोध हो रहा है। ये समय बोधक शब्द अपनी-अपनी क्रिया के बदले रूप हैं।

काल के भेद

समय के आधार पर काल के तीन प्रकार हैं–

1. वर्तमान काल 2. भूतकाल 3. भविष्यत् काल

(अ) वर्तमान काल (Present Tense)–क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य वर्तमान में चल रहा है उसे **वर्तमान काल** कहते हैं।

जैसे– 1. मनोहर गेंद खेलता है। 2. दिनेश गेंद खेल रहा है।
3. मोहन गेंद खेल रहा होगा।

वर्तमान काल के प्रकार

1. **सामान्य वर्तमान काल**–क्रिया के जिस रूप से वर्तमान समय में काम का होना या करना पाया जाए, उसे **सामान्य** वर्तमान काल कहते हैं।

   जैसे– अखिलेश निबंध लिखता है।

2. **अपूर्ण वर्तमान काल**–क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य वर्तमान समय में शुरू होकर अभी समाप्त नहीं हुआ है, उसे **अपूर्ण वर्तमान काल** कहते हैं।

   जैसे– रमा खाना बना रही है।

3. **संदिग्ध वर्तमान काल**–क्रिया के जिस रूप से वर्तमान में कार्य होने का संदेह हो रहा हो, उसे **संदिग्ध वर्तमान काल** कहते हैं।

   जैसे– 1. वह अपना काम करती होगी। 2. जम्मू में लड़ाई हो रही होगी।

(ब) भूतकाल (Past Tense)–क्रिया के जिस रूप से कार्य का होना या करना बीते हुए समय में पाया जाता है, उसे **भूतकाल** कहते हैं।

जैसे– 1. सरला ने गीत गाया। 2. विमल ने मैच हारा।

भूतकाल के प्रकार

1. **सामान्य भूतकाल**–जिस काल में काम के होने का सामान्य रूप बीते हुए समय में प्रकट होता है उसे **सामान्य भूतकाल** कहते हैं।

   जैसे– (i) सिपाही ने चाय पी। (ii) नेता ने भाषण दिया।

2. **आसन्न भूतकाल**–जिस वाक्य में क्रिया बीते हुए समय में शुरू होकर निकट भूत में समाप्त हुई हो, उसे **आसन्न भूतकाल** कहते हैं। **जैसे**–रमेश स्टेशन गया।

3. **पूर्ण भूतकाल**–जिस वाक्य में काम बीते हुए समय में शुरू होकर समाप्त हो चुका हो, उसे **पूर्ण भूतकाल** कहते हैं। **जैसे**–दीपक ने चित्र बना लिया था।

4. **संदिग्ध भूतकाल**–जिस वाक्य में काम करने या होने का संदेह प्रतीत होता है, उसे **संदिग्ध भूतकाल** कहते हैं। **जैसे**–भारत ने क्रिकेट मैच खेला होगा।

5. **हेतु-हेतुमद् भूतकाल**–जिस वाक्य में कार्य बीते हुए समय में दूसरे कार्य पर आश्रित रहा हो, उसे **हेतु-हेतुमद् भूतकाल** कहते हैं। **जैसे**–यदि तुम सतर्कता बरतते तो चोरी नहीं होती।

(स) **भविष्यत् काल (Future Tense)**–क्रिया के जिस रूप से काम का आने वाले समय में होना या करना पाया जाए उसे **भविष्यत् काल** कहते हैं। **जैसे**–1. शुक्ला जी कल ऑफिस नहीं जाएँगे। 2. जॉर्ज बुश भारत आएँगे।

भविष्यत् काल के प्रकार

1. **सामान्य भविष्यत् काल**–क्रिया के जिस रूप से आने वाले समय में काम के करने का बोध हो, उसे **सामान्य भविष्यत् काल** कहते हैं। **जैसे**–राजू कल पटना जाएगा।

2. **संभाव्य भविष्यत् काल**–क्रिया के जिस रूप से काम के आने वाले समय में होने का संभावना हो, उसे **संभाव्य भविष्यत् काल** कहते हैं।

जैसे– (i) जब वह लखनऊ जाएगा तब मैं नहीं आऊँगा।

(ii) जब देवेश घर आएगा तब हम बरेली जाएँगे।

आपने क्या सीखा

(1) किए गए कार्यों का बोधक '**काल**' कहलाता है।

(2) काल के तीन भेद हैं-**वर्तमान काल**, **भूतकाल** तथा **भविष्यत्** काल।

अभ्यास

1. काल किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।

2. वर्तमान काल से आपका क्या आशय है?

3. भूतकाल से आप क्या समझते हैं? इसके प्रकार भी लिखिए।

4. नीचे दिए वाक्यों के काल तथा उनके प्रकार भी लिखिए–

(क) छात्र पुस्तक पढ़ रहे थे।

(ख) मैं घर जाऊँगा।

(ग) वह स्कूल जा रहा है।

(घ) मोना चित्र बनाएगी।

(ङ) शायद वह ईश्वर का दर्शन करे।

5. निम्नलिखित क्रियाओं से वाक्य बनाइए–

(क) खेलना _____

(ख) हँसना _____

(ग) कूदना _____

(घ) नाचना _____

6. नीचे दिए वाक्यों में निर्दिष्ट परिवर्तन कीजिए–

(क) राजू कल पटना जाएगा। (संदिग्ध भूतकाल)

(ख) जॉर्ज बुश भारत आए थे। (अपूर्ण वर्तमान काल)

(ग) वह अपना काम करती होगी। (सामान्य भविष्यत् काल)

11 क्रिया-विशेषण (Adverb)

परिभाषा–जो शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं, उन्हें क्रिया-विशेषण कहते हैं।

जैसे– 1. गोविन्द आजकल रात-दिन पढ़ता है।
2. गांधी जी ईमानदार पुरुष थे।
3. बूढ़ी औरतें धीरे-धीरे चलती हैं।

इन वाक्यों में 'रात-दिन', 'ईमानदार' तथा 'धीरे-धीरे' शब्द क्रिया की विशेषता बता रहे हैं। अत: ये क्रिया-विशेषण हैं।

क्रिया-विशेषण के भेद

ये निम्नलिखित चार प्रकार के होते हैं–

(अ) स्थानवाचक (Adverb of Place)

(ब) कालवाचक (Adverb of Time)

(स) परिमाणवाचक (Adverb of Quantity)

(द) रीतिवाचक (Adverb of Manner)

(अ) स्थानवाचक क्रिया-विशेषण–जिस क्रिया-विशेषण से क्रिया में होने वाले कार्य के स्थान का बोध हो, उसे **स्थानवाचक क्रिया-विशेषण** कहते हैं।

जैसे– 1. मुकेश इधर-उधर टहलता है। 2. मोहन तुम कहाँ जा रहे हो।

(ब) कालवाचक क्रिया-विशेषण–जिस क्रिया-विशेषण से क्रिया के होने या करने के समय का बोध हो, उसे **कालवाचक क्रिया-विशेषण** कहते हैं।

जैसे– 2. अंजू प्रतिदिन पूजा करती है। 2. आतंकवादी लगातार बढ़ रहे हैं।

(स) परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण–जिस क्रिया-विशेषण से क्रिया के परिमाण या मात्र का बोध हो, उसे **परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण** कहते हैं। **जैसे–**'दो किलो' घी ले आओ।

ये दो प्रकार होते हैं–

1. **निश्चित परिमाणवाचक–**जो परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण सर्वनाम पद के निश्चित परिमाण को प्रकट करे उसे **निश्चित परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण** कहते हैं। **जैसे–**पाँच किलो शक्कर, दो लीटर पानी।

2. **अनिश्चित परिमाणवाचक–**जो परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द के अनिश्चित परिमाण को प्रकट करे, उसे **अनिश्चित परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण** कहते हैं। **जैसे–**थोड़ा पानी, कुछ धन, काफी देर आदि।

(द) रीतिवाचक क्रिया-विशेषण–जिस क्रिया-विशेषण द्वारा क्रिया के होने की रीति या ढंग का बोध हो, उसे **रीतिवाचक विशेषण** कहते हैं। **जैसे–**एकाएक, अचानक, अवश्य, सम्भवत: आदि।

उदाहरण– 1. वह अचानक घर से भाग गया।
2. कोयल मीठा बोलती है।
3. वह सचमुच अच्छा व्यक्ति है।

आपने क्या सीखा

जो शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं उन्हें क्रिया-विशेषण कहते हैं। ये चार प्रकार के होते हैं।

अभ्यास

1. क्रिया-विशेषण से आप क्या समझते हैं?

2. क्रिया-विशेषण कितने प्रकार के होते हैं? सोदाहरण लिखिए ।

3. परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण तथा कालवाचक क्रिया-विशेषण में अंतर स्पष्ट कीजिए।

4. निम्नलिखित क्रिया-विशेषण शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

अचानक _____

लगातार _____

बाहर _____

कुछ _____

बिल्कुल _____

थोड़ा-सा _____

हमेशा _____

5. रिक्त स्थानों में क्रिया-विशेषण शब्दों की पूर्ति कीजिए–

(क) अनीता _____ गाती है।

(ख) रोगी _____ उठ बैठा।

(ग) बाबा जी को _____ सुनो।

(घ) छात्र _____ जागता रहा।

(ङ) वह _____ नहीं घबराया।

6. क्रिया तथा क्रिया-विशेषण में अंतर स्पष्ट कीजिए।

12

वाच्य
(Voice)

परिभाषा–क्रिया के जिस रूप से क्रिया के कर्त्ता, कर्म या भाव के बारे में कुछ कहने का बोध हो, उसे वाच्य कहा जाता है।

जैसे– 1. अनिल सच बोलता है।

2. सरिता पैर छू रही है।

वाच्य के भेद

वाच्य तीन प्रकार के के होते हैं–

1. कर्तृवाच्य (Active Voice)
2. कर्मवाच्य (Passive Voice)
3. भाववाच्य (Impersonal Voice)

1. कर्तृवाच्य (Active Voice)–क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि वाक्य में उसका प्रयोग कर्त्ता के लिंग तथा वचन के अनुरूप किया गया है, उसे कर्तृवाच्य कहते हैं। जैसे–सुधा चाय पीती है।

2. कर्मवाच्य (Passive Voice)–जिस वाक्य में क्रिया का लिंग, वचन व पुरुष कर्म के अनुसार होता है, उसे कर्मवाच्य कहते हैं।

जैसे– (i) मरीज से पैदल नहीं चला जाता।

(ii) लता से गाना नहीं गाया जाता।

3. भाववाच्य (Impersonal Voice)–क्रिया के जिस रूप में कर्त्ता तथा कर्म की प्रधानता न होकर केवल भाव ही प्रधान हो, उसे भाववाच्य कहते हैं। ए वाक्य सदैव नकारात्मक ही होते हैं।

जैसे– (i) रोहन से सोया नहीं जाता।

(ii) रामू से पढ़ा नहीं जाता।

वाच्य-परिवर्तन

किसी वाक्य में कही गई बात को दूसरे वाक्य में अलग ढंग से कहने को **वाच्य-परिवर्तन** कहते हैं। जैसे–

(अ) पृथ्वी गोल है, यह कौन नहीं जानता?

(ब) पृथ्वी गोल है, यह सब जानते हैं।

वाच्य-परिवर्तन का महत्त्व–अपने मन के विचारों को सुंदर रूप में प्रकट करने के लिए वाच्यांतरण का अच्छा अभ्यास होना चाहिए। अपनी बातों को प्रभावी बनाने के लिए भी वाच्य-परिवर्तन अत्यावश्यक है।

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में परिवर्तन–

	कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
1.	रमेश पत्र लिखता है।	रमेश से पत्र लिखा जाता है।
2.	वह गाना गाती है।	उससे गाना गाया जाता है।

कर्तृवाच्य से भाववाच्य में परिवर्तन–

	कर्तृवाच्य	भाववाच्य
1.	सुधा गाना नहीं गाती है।	सुधा से गाना नहीं गाया जाता।
2.	वह भीख नहीं माँगता है।	उससे भीख नहीं माँगी जाती।

आपने क्या सीखा

क्रिया के जिस रूप से क्रिया के कर्ता, कर्म या भाव के बारे में कुछ कहने का बोध हो, उसे वाच्य कहा जाता है।

अभ्यास

1. वाच्य की परिभाषा लिखिए।

2. वाच्य के कितने भेद होते हैं? सोदाहरण लिखिए।

3. कर्तृवाच्य तथा भाववाच्य के अंतर को स्पष्ट कीजिए।

4. निम्नलिखित वाक्यों को भाववाच्य में परिवर्तित कीजिए।

(क) रमा पत्र नहीं लिखती।

(ख) हम पढ़ नहीं सकते।

(ग) रमेश लेट नहीं सकता।

(घ) प्रियंका कॉफी बनाती है।

5. निम्नलिखित वाक्यों के वाच्य लिखिए–

(क) पारुल चाय पीती है। _____

(ख) रामू फल खाता है। _____

(ग) रवि ने भिखारी को भीख दी। _____

(घ) उसने अंगूर खाए। _____

(ङ) तुमसे मेला देखा गया। _____

6. कर्मवाच्य में परिवर्तित कीजिए–

(क) शिक्षक नहीं लिखता है।

(ख) भगवान सबकी इच्छा पूर्ण करे।

(ग) सेना ने दुश्मनों को भगाया।

(घ) आलोक से चला नहीं जाता।

13 पद-परिचय (Parsing)

पद का अर्थ–वाक्य में प्रयुक्त शब्दों को पद कहते हैं।

पद-परिचय (Parsing)–किसी भी वाक्य में आए संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि शब्दों का व्याकरण की दृष्टि से परिचय कराना अर्थात् उनके प्रकार, वचन, लिंग, कारक तथा काल आदि की जानकारी देना ही **पद-परिचय** कहलाता है। पद सात प्रकार के होते हैं। पद-परिचय की संक्षिप्त जानकारी निम्नवत् है–

1. संज्ञा का पद-परिचय–संज्ञा के पद-परिचय में पाँच बातें आवश्यक हैं–

(अ) प्रकार–व्यक्तिवाचक, भाववाचक, जातिवाचक
(ब) लिंग–स्त्रीलिंग, पुल्लिंग
(स) वचन–एकवचन, बहुवचन
(द) कारक–कर्त्ता, कर्म, करण, अधिकरण, संप्रदान, अपादान, संबंध, संबोधन,
(य) संबंध–क्रिया

उदाहरण–**'ममताभरी माँ'** ने अपने बच्चों को उठा लिया।

ममताभरी–भाववाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, संबंध कारक,

माँ–जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्त्ता कारक, उठा लिया क्रिया की कर्त्ता।

2. सर्वनाम का पद-परिचय–सर्वनाम के पद-परिचय में निम्न बातें आवश्यक हैं–

(अ) भेद–पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, संबंधवाचक, प्रश्नवाचक, निजवाचक
(ब) लिंग–पुल्लिंग, स्त्रीलिंग
(स) वचन–एकवचन, बहुवचन
(द) पुरुष–पुरुषवाचक सर्वनाम में उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, अन्य पुरुष
(य) कारक–कर्त्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण, संबोधन
(र) संबंध–क्रिया के साथ संबंध

उदाहरण–**वह** भागने योग्य नहीं है।

वह–पुरुषवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन, कर्त्ता कारक, 'भागना' क्रिया का कर्त्ता।

3. विशेषण का पद-परिचय–विशेषण के पद-परिचय में निम्नलिखित बातें आवश्यक हैं–

(अ) भेद–गुणवाचक, संख्यावाचक, संकेतवाचक, परिमाणवाचक
(ब) लिंग–पुल्लिंग, स्त्रीलिंग
(स) वचन–एकवचन, बहुवचन
(द) अवस्था–मूलावस्था, उत्तरावस्था, उत्तमावस्था
(य) विशेष्य– जिसकी विशेषता बताई जाए

उदाहरण–**पका** आम बहुत मीठा होता है।

पका–गुणवाचक विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन, मूलावस्था, 'आम' का विशेषण।

मीठा–गुणवाचक विशेषण, पुल्लिंग, मूलावस्था, 'आम' का विशेषण।

4. क्रिया-विशेषण का पद-परिचय–क्रिया-विशेषण के पद-परिचय में दो बातें जरूरी हैं–

(अ) भेद–कालवाचक, स्थानवाचक, परिमाणवाचक, रीतिवाचक।

(ब) वह क्रिया जिसकी विशेषता बताई जाती है।

उदाहरण–मरीज **धीरे-धीरे** चल रहा था।

धीरे-धीरे–रीतिवाचक, क्रिया-विशेषण।

5. संबंधबोधक का पद-परिचय–संबंधबोधक के पद-परिचय में भी दो बातें जरूरी हैं–

(अ) भेद–कालवाचक, स्थानवाचक, करणवाचक, समानतावाचक, विरोधवाचक

(ब) संबंध–संबंधी शब्द।

उदाहरण–वह रमा के **लायक** नहीं है।

लायक–समानतावाचक, संबंधबोधक, 'वह' सर्वनाम से संबंधी।

6. समुच्चयबोधक का पद-परिचय–समुच्चयबोधक के पद-परिचय में भी दो बातों का उल्लेख होता है–

(अ) भेद–समानाधिकरण तथा व्याधिकरण

(ब) योजित शब्द या वाक्य-जिन्हें मिलाता है।

उदाहरण–यह कलम मेरे भाई का है **इसलिए** मैं इसे किसी को नहीं दे सकता।

इसलिए–समानाधिकरण समुच्चयबोधाक, दो समान वाक्यों को मिलाता है।

7. विस्मयादिबोधक का पद-परियच–विस्मयादिबोधक के पद-परिचय में केवल यह बताया जाता है कि यह कौन-सा भाव व्यक्त करता है।

उदाहरण–अरे! आज आप आ गए।

अरे–विस्मयादिबोधक, आश्चर्यसूचक।

आपने क्या सीखा

1. वाक्य में प्रयुक्त शब्दों को पद कहते हैं।
2. पद सात प्रकार के होते हैं।
3. सर्वनाम के पद परिचय में उसके लिंग, वचन, पुरुष, कारक तथा संबंध का ज्ञान आवश्यक है।

अभ्यास

1. **पद से क्या आशय है?**
2. **पद-परिचय से आप क्या समझते हैं?**
3. **सर्वनाम का पद-परिचय विस्तार से समझाइए।**

14 पद-क्रम (Sequence)

परिभाषा–पद शब्द का शाब्दिक अर्थ है–योग्यतानुसार निश्चित पद। वाक्य में अपने नियत स्थान पर आने पर ही शब्द पद कहलाता है, जबकि वाक्य में किसी शब्द का स्थान कारकों के द्वारा निर्धारित होता है।

पद-क्रम–परसर्गों से युक्त शब्द 'पद' कहलाता है तथा पदों के योग से ही 'वाक्य' बनता है।

पदों का एक निश्चित क्रम ही सार्थक वाक्यों की रचना करने में सक्षम होता है। पदों का यह क्रम वहाँ आवश्यक हो जाता है, जहाँ परसर्गों का लोप होता है।

जैसे– देखा कृष्ण को अर्जुन ने।

यह वाक्य उलझा हुआ-सा लगता है। इस वाक्य को देखकर लगता है कि निश्चित ही यहाँ अर्थ का अनर्थ हो गया है। अब निम्नलिखित वाक्य को पढ़िए–

अर्जुन ने कृष्ण को देखा।

वाक्यों में पद-क्रम के सामान्य नियम

पद-क्रम के नियमों को पदों के अनुरूप कई भागों में विभक्त करते हैं, क्योंकि प्रत्येक पद के क्रम के नियम अलग-अलग हैं, जो इस प्रकार हैं–

1. **कर्त्ता और क्रिया**–वाक्य में सबसे पहले कर्त्ता और उसके बाद क्रिया आनी चाहिए। यह नियम तभी लगता है जब वाक्य में कर्त्ता और क्रिया हों।

   जैसे– (i) मीरा नाचती है।

   (ii) वह खाती है।

2. **कर्त्ता, कर्म तथा क्रिया**–वाक्य के आरंभ में कर्त्ता और अंत में क्रिया आती है। कर्म होने पर कर्त्ता के बाद कर्म तथा कर्म के बाद क्रिया आती है।

   जैसे– राम ने रावण को मारा।

3. **विशेषण और विशेष्य**–जब किसी विशेष्य की विशेषता को सामान्य रूप से बताया जाय तब विशेषण विशेष्य से पहले आता है।

   जैसे– अच्छे बालक दूध पीते हैं।

   इसमें कर्त्ता और कर्म दोनों विशेषण हैं अतः यहाँ दोनों ही विशेषण अपने-अपने विशेष्यों से पहले आए हैं।

4. **क्रिया-विशेषण तथा क्रिया**–क्रिया-विशेषण तथा क्रिया के क्रम को तीन प्रकार से व्यवस्थित किया गया है–

   (अ) सामान्यावस्था–इस अवस्था में क्रिया-विशेषण प्रायः क्रिया से पहले ही आता है।

   (ब) किसी बात पर बल देना–वाक्य में जब किसी बात पर बल देना होता है, तब क्रिया-विशेषण का क्रम बदलता रहता है।

   (स) प्रश्नवाचक वाक्य में–प्रश्नवाचक क्रिया-विशेषणों का क्रम इस आधार पर बदलता है कि हम उत्तर की अपेक्षा किस रूप में करते हैं।

जैसे– (i) क्या मैं अंदर आ जाऊँ?

(ii) तुमने बाजार से क्या खरीदा?

5. **समुच्चयबोधक अव्यय–**ये अव्यय दो शब्दों अथवा वाक्यों के बीच में आते हैं और उनका संबंध जोड़ते हैं।

जैसे– (i) पाप और पुण्य सभी करते हैं।

(ii) वह स्कूल गई और बच्चे घर आ गए।

6. **संबोधन और विस्मयादिबोधक पद–**जो शब्द संबोधन के रूप में या विस्मयादिबोधक के रूप में प्रयुक्त होते हैं उन्हें वाक्य के शुरू में रखा जाता है।

जैसे– (i) हाय! भारत मैच हार गया।

(ii) भाइयों! आज पन्द्रह अगस्त है।

7. **पूर्वकालिक क्रिया–**पूर्वकालिक क्रिया जहाँ भी प्रयुक्त होती है, वहाँ वह सदैव मुख्य क्रिया के पहले ही आती है।

जैसे– (i) पूजा करके चाय पियो।

(ii) लेटकर मत पढ़ो।

यदि वाक्य में मुख्य क्रिया कर्म पर आधारित है या मुख्य क्रिया का निषेध आदि किया गया है, तो पूर्वकालिक क्रिया और मुख्य क्रिया के बीच में वह कर्म अथवा निषेधात्मक शब्द आता है।

अभ्यास

1. **पद का अर्थ स्पष्ट करके लिखिए।**
2. **संबोधन और विस्मयादिबोधक पद से क्या आशय है?**
3. **विशेषण अपने विशेष्य के बाद कब आता है?**
4. **वाक्यों के पद-क्रम को ठीक करके लिखिए–**

(क) गीता भी है गा सकती। _____

(ख) गाय सफेद मुझे दो। _____

(ग) छोटे-छोटे खेल रहे हैं बच्चे। _____

(घ) आपका घर है सुंदर। _____

15 शब्द रचना के तत्व : संधि
(Elements of Word formation : Euphonic)

परिभाषा–संधि का अर्थ है–मेल। दो वर्णों के परस्पर मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे संधि कहते हैं। जैसे–देव + आलय = देवालय, परम + ईश्वर = परमेश्वर।

दो पदों को अलग-अलग करने को संधि-विग्रह कहते हैं।

संधि के भेद (Kinds of Sandhi)

संधियाँ तीन प्रकार की हैं–1. स्वर संधि, 2. व्यंजन संधि, 3. विसर्ग संधि।

1. स्वर संधि–स्वर के साथ स्वर के मेल को हम 'स्वर संधि' कहेंगे।

जैसे– विद्या + अर्थी–आ + अ = आ–विद्यार्थी।

स्वर संधि के भेद

स्वर संधि के पाँच भेद हैं–

1. दीर्घ संधि, 2. गुण संधि, 3. वृद्धि संधि, 4. यण् संधि, 5. अयादि संधि।

1. दीर्घ संधि–(अकः सवर्णे दीर्घः) जब ह्रस्व अथवा दीर्घ अ, इ, उ, ; स्वर के बाद क्रमशः ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ स्वर आएँ तो दोनों के स्थान पर आ, ई, ऊ, ॠ हो जाते हैं।

जैसे–

विद्या + आलय = विद्यालय।	गिरि + इन्द्र = गिरीन्द्र।
धन + आदेश = धनादेश।	सु + उक्ति = सूक्ति।

2. गुण संधि–(आद्गुणः)–जब अ अथवा आ के बाद इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ऌ आए, तो दोनों मिलकर क्रमशः ए, ओ, अर्, अल् हो जाते हैं।

जैसे–

महा + ईश = महेश।	सूर्य + उदय = सूर्योदय।
सर्व + ईश = सर्वेश।	देव + ऋषि = देवर्षि।

3. वृद्धि संधि–(वृद्धिरेचि)–जब अ अथवा आ के बाद ए या ऐ हो, तो दोनों के स्थान पर 'ऐ' तथा ओ या औ हो तो दोनों के स्थान पर 'औ' हो जाता है।

जैसे–

सदा + एव = सदैव।	तथा + एव = तथैव।
जल + ओघः = जलौघः।	महा + औषधि = महौषधि।

4. यण् संधि–(इकोयणचि)–जब इ, उ, ऋ, ऌ के बाद कोई असमान स्वर आए तो उनके स्थान पर क्रम इ को य्, उ को व्, ऋ, को र्, और ऌ को ल् हो जाता है।

जैसे–

इति + आदि = इत्यादि।	मातृ + आज्ञा = मात्रज्ञा।
सु + आगतम् = स्वागतम्।	मधु + अरि = मधवरि।

5. अयादि संधि–(एचोऽयवायावः)–जब ए, ओ, ऐ, औ के बाद कोई अन्य स्वर आए, तो इसके स्थान पर क्रम से अय्, अव्, आय्, आव् हो जाता है।

जैसे–

ने + अन = नयन।	गै + अक = गायक।
पो + अन = पवन।	पौ + अक = पावक।

2. व्यंजन संधि (हल् संधि)–व्यंजन के साथ स्वर अथवा व्यंजन के मेल को व्यंजन संधि कहते हैं।

जैसे– दिक् + अंत = दिगन्त। (क् को ग)।

व्यंजन संधि के भेद

व्यंजन संधि के भी अनेक भेद हैं–

1. यदि 'त' के आगे कोई स्वर या ग, घ, द, ध, ब, भ अथवा य, र, व हो तो त् के बदले द् हो जाता है।

जैसे– सत् + धर्म = सद्धर्म। सत् + आचार = सदाचार।

2. यदि क, च, त के बाद उसी वर्ग का तीसरा एवं चौथा वर्ण (ग, घ, ज, झ, द, ध, ब, भ) आए तो त् उसी वर्ग के तीसरे वर्ण में बदल जाता है।

जैसे– वाक् + ईश = वागीश। जगत् + ईश = जगदीश।
दिक् + अम्बर = दिगम्बर। दिक् + गज = दिग्गज।

3. यदि म् के बाद कोई स्पर्श व्यंजन आए, तो म् का अनुस्वार (ं) अथवा बाद वाले वर्ण के वर्ग का पाँचवाँ वर्ण हो जाता है।

जैसे– सम् + तोष = संतोष। सम् + कल्प = संकल्प।
सम् + गीत = संगीत। सम् + बंध = संबंध।

4. यदि म् के बाद कोई अंत:स्थ (य, र, ल, व) अथवा ऊष्म वर्ण (श, ष, स, ह, य, र, ल, व) हो, तो म् का अनुस्वार हो जाता है।

जैसे– सम् + योग = संयोग। सम् + वाद = संवाद।
सम् + हार = संहार। सम् + सार = संसार।

5. यदि त या द के बाद च या छ आए, तो त् या द् का च् हो जाता है। यदि त या द के बाद ज या झ हो, तो उनके स्थान पर ज् हो जाता है।

जैसे– सत् + जन = सज्जन। उत् + ज्वल = उज्ज्वल।
महत् + छत्र = महच्छत्र। उत् + छेदन = उच्छेदन।

6. यदि किसी वर्ग के पहले अक्षर के बाद उसी वर्ग का पाँचवाँ अक्षर आए, तो पहले अक्षर के स्थान पर पाँचवाँ अक्षर हो जाता है।

जैसे– उत् + नत = उन्नत। षट् + मार्ग = षण्मार्ग।
वाक् + मय = वाङ्मय। जगत् + नाथ = जगन्नाथ।

7. यदि त् के बाद कोई स्वर अथवा ग, घ, द, ध, ब, भ, तथा य, र, ल, व आए, तो त् का द् हो जाता है।

जैसे– सत् + आनन्द = सदानन्द। उत् + गम् = उद्गम।
उत् + घाटन = उद्घाटन। जगत् + ईश = जगदीश।

8. यदि 'छ' से पहले कोई स्वर आए, तो छ का 'च्छ' हो जाता है।

जैसे– परि + छेद = परिच्छेद। वि + छेद = विच्छेद।
वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया। अव + छेद = अवच्छेद।

3. विसर्ग संधि–विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन के मिलने से जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं।

जैसे– नम: + ते = नमस्ते।

विसर्ग संधि के भेद

विसर्ग संधि के अनेक भेद हैं–

1. यदि विसर्ग के पहले 'अ' हो तथा उसके बाद क,ख,प,फ में से कोई वर्ण हो, तो उस विसर्ग का कोई परिवर्तन नहीं होगा।

जैसे–

अंतः + पुर = अंतःपुर।	प्रातः + काल = प्रातःकाल।
रजः + कण = रजःकण।	प्रातः + स्मरण = प्रातःस्मरण।

2. यदि किसी विसर्ग के आगे र् हो, तो विसर्ग का लोप होकर उसका पहला स्वर दीर्घ हो जाता है।

जैसे–

निः + रोग = नीरोग।	पुनः + रमते = पुनारमते।
निः + रज = नीरज।	निः + रस = नीरस।

3. यदि अ के बाद विसर्ग हो तथा विसर्ग के बाद अ के अतिरिक्त कोई दूसरा स्वर आए, तो विसर्ग का लोप हो जाता है।

जैसे–

अतः एव = अतएव।	यशः + इच्छा = यशइच्छा।

4. यदि विसर्ग के बाद श, ष, स आए, तो विसर्ग का क्रम से श, ष, स हो जाता है।

जैसे–

दुः + शासन = दुश्शासन।	निः + शब्द = निश्शब्द।
निः + सार = निस्सार।	निः + शंक = निश्शंक।

5. यदि विसर्ग के पहले अ अथवा आ आए, और बाद में 'क' वर्ण हो, तो विसर्ग क स या ष हो जाता है।

जैसे–

पुरः + कार = पुरस्कार	नमः + कार = नमस्कार।
भाः + कर = भास्कर।	तिरः + कार = तिरस्कार।

आपने क्या सीखा

(1) निकटवर्ती दो वर्णों का मेल संधि कहलाता है।
(2) संधि के तीन भेद हैं–स्वर, विसर्ग तथा व्यंजन संधि।

अभ्यास

1. स्वर संधि किस कहते हैं? इसके प्रकार भी लिखिए।

2. दीर्घ संधि की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए।

3. यण् संधि से आपका क्या आशय है?

4. निम्नलिखित शब्दों में संधि कीजिए–

(क) उमा + ईश – _____ (ख) एक + एक – _____

(ग) ने + अनम् – _____ (घ) निः + रज – _____

(ङ) दिक् + गज – _____

5. नीचे लिखे शब्दों में संधि-विग्रह कीजिए–

(क) जगन्नाथ – _____ (ख) विद्यार्थी – _____

(ग) महर्षि – _____ (घ) सदैव – _____

(ङ) नीरोग – _____ (च) चयन – _____

16 समास (Compound)

परिभाषा–समास का अर्थ है–संक्षेप।

जब दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर संक्षिप्त शब्द निर्माण किया जाता है, तब उसे समास कहते हैं।

जैसे– राजा का पुत्र–राजपुत्र, विद्या का घर–विद्यालय।

समास-विग्रह–समास-पद के खण्डों को अलग-अलग करके एवं उनमें फिर से विभक्तियों को जोड़कर प्रदर्शित करने की विधि को समास-विग्रह कहते हैं। जैसे-सीताराम शब्द का समास-विग्रह होगा–सीता और राम।

समास के भेद अथवा प्रकार

समास छः प्रकार के होते हैं–

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विवगु समास
5. द्वंद्व समास
6. बहुव्रीहि समास

1. अव्ययीभाव समास–जिसका पहला पद अव्यय एवं प्रधान हो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं।

जैसे–

यथाशक्ति	–	शक्ति के अनुसार	प्रतिदिन	–	प्रत्येक दिन
आजीवन	–	जीवन पर्यन्त	यथाविधि	–	विधि के अनुसार

2. तत्पुरुष समास–जहाँ दूसरा पद प्रधान होता है, वहाँ तत्पुरुष समास होता है। जिस पद में जिस कारक चिह्न या विभक्ति का लोप हो उसी के आधार पर तत्पुरुष समास के छः भेद किए गए हैं–

(अ) कर्म कारक तत्पुरुष–जिस पद में द्वितीया विभिक्ति या कर्म कारक के चिह्न 'को' का लोप हो, वहाँ कर्मकारक तत्पुरुष समास होता है।

जैसे–

शरणागत	–	शरण को आया हुआ।	ग्रामगत	–	गाँव को गया हुआ।

(ब) करण कारक तत्पुरुष–इस समास में तृतीया विभक्ति के चिह्न 'से, के द्वारा' का लोप होता है।

जैसे–

ज्वरग्रस्त	–	ज्वर (बुखार) से ग्रस्त।
वाणहत	–	वाण से आहत।

(स) संप्रदान कारक तत्पुरुष–जहाँ चतुर्थी विभक्ति के चिह्न 'के लिए' का लोप हो, वहाँ संप्रदान कारक तत्पुरुष होता है।

जैसे–

दानपात्र	–	दान के लिए पात्र
विश्रामकक्ष	–	विश्राम (आराम) के लिए कमरा।

(द) अपादान कारक तत्पुरुष–जहाँ पंचमी विभक्ति के चिह्न 'से–अलगाव' का लोप हो, वहाँ अपादान कारक तत्पुरुष समास होता है।

जैसे–

जन्मान्ध	–	जन्म से अंधा।
पथभ्रष्ट	–	पथ (मार्ग) से भ्रष्ट।

(य) संबंध कारक तत्पुरुष–जहाँ षष्ठी विभक्ति अथवा संबंध कारक के चिह्न 'का, की, के आदि' का लोप हो, वहाँ संबंध कारक तत्पुरुष होता है।

जैसे– राष्ट्रपति – राष्ट्र का पति। राजमहल – राजा का महल।
राजपुत्र – राजा का पुत्र। विद्यालय – विद्या का आलय (घर)।

(र) अधिकरण कारक तत्पुरुष–जहाँ सप्तमी विभक्ति या अधिकरण कारक के चिह्न 'में, पर' का लोप हो, वहाँ अधिकरण कारक तत्पुरुष समास होता है।

जैसे– दानवीर – दान में वीर। कार्यकुशल – काम में कुशल (निपुण)।
वनवास – वन में वास। रणवीर – रण में वीर।

3. **कर्मधारय समास**–जिस समास में एक पद विशेषण तथा दूसरा पद विशेष्य हो, वहाँ पर कर्मधारय समास होता है।

जैसे– नीलाम्बर – नीला आकाश। सुपुत्र – अच्छा पुत्र।
महात्मा – महान् आत्मा। चन्द्रमुख – चन्द्रमा जैसा मुख।

4. **द्विगु समास**–जहाँ पर पहला पद संख्यावाचक तथा दूसरा पद प्रधान हो, वहाँ द्विगु स

जैसे– चौराहा – चार रास्तों का समूह। नवग्रह –
त्रिलोक – तीन लोकों का समूह। पंचवटी

5. **द्वंद्व समास**–जहाँ पर दोनों ही पद प्रधान हों तथा विग्रह करते समय दोनों प है, वहाँ द्वंद्व समास होता है।

जैसे– माता-पिता – माता और पिता। पाप-पुण्य
राम-कृष्ण – राम और कृष्ण। सुख-दुःख

6. **बहुव्रीहि समास**–जहाँ पर अन्य पद की प्रधानता हो, वहाँ पर बहुव्रीहि समास हो

जैसे– पीताम्बर – पीला है वस्त्र जिसका अर्थात् (कृष्ण)
दशानन – दस हैं सिर जिसके अर्थात् (रावण)
महावीर – महान् वीर है जो अर्थात् (हनुमान)
गजानन – हाथी का मुँह है जिसका अर्थात् (गणेश)

आपने क्या सीखा

(1) समास का शाब्दिक अर्थ है–संक्षेपीकरण।
(2) समास के छः प्रकार बताए गए हैं।
(3) अव्यय वाले पद को अव्ययीभाव तथा संख्यावाची को द्विगु समास माना जाता है।

अभ्यास

1. समास किसे कहते हैं?
2. समास कितने प्रकार के होते हैं, प्रत्येक का नामोल्लेख करें।
3. अव्ययीभाव समास की परिभाषा देते हुए सोदाहरण स्पष्ट करें।
4. द्विगु और द्वंद्व समास में अंतर समझाइए।
5. कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अंतर बताइए।
6. पाठ से द्विगु तथा द्वंद्व के दो-दो उदाहरण ढूँढकर लिखें।

17 उपसर्ग (Prefix)

पिछली कक्षाओं में आपने उपसर्ग के बारे में बहुत कुछ पढ़ा, फिर भी यहाँ हम कुछ नई जानकारियाँ आपको देने जा रहे हैं–

परिभाषा–जो शब्दांश किसी शब्द के पहले लगते हैं और उसके अर्थ को बदलते या प्रभावित करते हैं, वे उपसर्ग कहलाते हैं।

विशेष–शब्दों के प्रारंभ में उपसर्ग तथा अंत में प्रत्यय लगते हैं।

संधि तथा समास की तरह उपसर्ग भी शब्द रचना का एक आवश्यक तत्त्व है। इन्हें शब्दों से पूर्व लगाने से नए शब्दों की रचना की जा सकती है।

हिंदी उपसर्ग लगभग नहीं के बराबर हैं। ये उपसर्ग या तो संस्कृत के हैं अथवा उर्दू के।

संस्कृत के उपसर्ग–प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आ, नि, अधि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप, आ आदि।

हिंदी में प्रयुक्त होने वाले उपसर्ग

हिंदी में चार प्रकार के उपसर्ग प्रयुक्त होते हैं–

1. संस्कृत के उपसर्ग
2. हिंदी के उपसर्ग
3. उर्दू के उपसर्ग
4. उपसर्ग की तरह प्रयुक्त संस्कृत के अव्यय

1. संस्कृत के उपसर्ग–

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्ग से बना शब्द
अ	नहीं	अन्याय, अस्पष्ट, अज्ञान
अति	अधिक	अतिवृष्टि, अत्याचार
अभि	सामने	अभिनय, अभिमुख
निर्	रहित	निराकार, निरभिमानी, निर्मल
प्र	अधिक	प्रचण्ड, प्रकाण्ड, प्रखर
उप	निकट, छोटा	उपवन, उपदेश, उपलक्षण
उत्	श्रेष्ठ	उत्थान, उत्कर्ष, उत्पात
अध	नीचे	अधोमुखी, अधोगति
निस्	रहित	निस्संतान, निस्तार, निस्संदेह

2. हिंदी के उपसर्ग–

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्ग से बने शब्द
अ	अभाव, कमी	अपढ़, अचल, अगम
दु	खराब, बुरा	दुर्जन, दुबला, दुकान
सु	अच्छा	सुपुत्र, सुजन, सुदिन
उन	एक कम	उन्तीस, उन्सठ, उन्यासी
कु	खराब	कुपुत्र, कुरूप, कुदिन

3. उर्दू के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्ग से बने शब्द
ना	नहीं	नालायक, नामर्द
बद	बुरा	बदनाम, बदसूरत
गैर	निषेध	गैर हाजिर, गैर कानूनी
ला	बिना	लापरवाह, लाइलाज
बे	बिना	बेईमान, बेकाबू, बेदखल

4. उपसर्ग की तरह प्रयुक्त संस्कृत के अव्यय–

कम	थोड़ा	कमउम्र, कमजोर
खुश	अच्छा	खुशबू, खुशनुमा
हम	समान	हमशक्ल, हमउम्र
हर	प्रति	हरक्षण, हरपल
चिर	बहुत देर तक	चिरयु, चिरकाल
पुन:	फिर नीचे	पुनर्जन्म, पुनर्निमाण
अध:	नीच	अधा: पतन, अधोगति
अंत:	के बीच	अतं: करण, अंतरात्मा

आपने क्या सीखा

1. जो मूल शब्द में लगकर अर्थ बदल देते हैं, उन्हें 'उपसर्ग' कहा जाता है।
2. हिंदी में चार प्रकार के उपसर्ग प्रयोग किए जाते हैं।
3. उपसर्ग शब्द-रचना का आवश्यक तत्त्व है।
4. उपसर्ग से नए शब्दों की रचना की जा सकती है।

अभ्यास

1. उपसर्ग की परिभाषा दीजिए।

2. उपसर्ग से शब्द-रचना कैसे की जाती है?

3. निम्नलिखित शब्दों के साथ उचित उपसर्ग लगाइए–

(क) पुत्र – _____ (ख) मान – _____

(ग) इलाज – _____ (घ) मर्द – _____

(ङ) लायक – _____ (च) दिन – _____

4. उपसर्ग के प्रकारों के नाम उनके सामने लिखिए–

(क) हरक्षण – _____ (ख) निर्मल – _____

(ग) गैरकानूनी – _____ (घ) अन्याय – _____

(ङ) प्रचण्ड – _____ (च) कुपुत्र – _____

18 प्रत्यय (Suffix)

जिस प्रकार उपसर्ग शब्दों से मिलकर नए शब्दों की रचना करते हैं उसी प्रकार '**प्रत्यय**' भी शब्द या धातु के अंत में लगकर नए शब्दों की रचना में सहायक होते हैं। भाषा की समृद्धि में **प्रत्ययों** का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है।

प्रत्यय की परिभाषा–वे शब्दांश जो शब्दों के अंत में लगकर उनकी बनावट तथा अर्थ में परिवर्तन करते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे–लड़ाई, घबराहट, गवैया, मिलनसार आदि।

प्रत्यय के भेद

प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं–

1. कृत या कृदंत प्रत्यय
2. तद्धित प्रत्यय

1. कृदंत प्रत्यय–ऐसे प्रत्यय जो धातुओं या क्रियाओं के पीछे लगाए जाते हैं, कृदंत या कृत प्रत्यय कहलाते हैं। इस प्रत्यय के पाँच भेद होते हैं–

(क) कर्तृवाचक प्रत्यय–जो क्रिया करने वाले को सूचित करते हैं, वे कर्तृवाचक प्रत्यय कहलाते हैं। **जैसे**–गानेवाला, करैया, पालनहार, झगड़ालू, गायक आदि।

(ख) कर्मवाचक प्रत्यय–ये प्रत्यय सकर्मक क्रिया के सामान्य भूत में हुआ या हुई लगाने से बनते हैं। जैसे–इनमें 'हुआ' या 'हुई' का कोई प्रयोग नहीं है।

(ग) भाववाचक प्रत्यय–ये कृदंत प्रत्यय भाववाचक संज्ञा का काम करते हैं। **जैसे**–मिलना से मिलाप, चिकना से चिकनाहट, बनावट से बनाव आदि।

(घ) क्रिया बोधक प्रत्यय–इस प्रत्यय से क्रिया के अर्थ का बोध होता है। **जैसे**–आते हुए, लिखते हुए, हँसते हुए आदि।

(ङ) करण वाचक प्रत्यय–इस प्रत्यय में क्रिया के अंत में ना, आ, ई, नी, अन आदि लगाने से शब्द बनते हैं। **जैसे**–बेलना, झूला, ओढ़ना, ठेला, चलनी, कतरनी, जलन, चुभन आदि।

2. तद्धित प्रत्यय–संज्ञा शब्द में जब किसी प्रत्यय को जोड़ने पर दूसरी संज्ञा बनती है तो उस प्रत्यय को तद्धित प्रत्यय कहते हैं। **जैसे**–शहर से शहरी, सोना से सुनार आदि।

तद्धित प्रत्यय के छः भेद हैं–

(क) कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय–इससे कर्तृवाचक का बोध होता है। ये 'हारा' या 'वाला' लगाने से बनते हैं। **जैसे**–ताँगेवाला, लकड़हारा, पालनहारा, ठेलेवाला आदि।

(ख) भाववाचक तद्धित प्रत्यय–ये गुण, स्वभाव, धर्म आदि के सूचक हैं। **जैसे**–लंबा-लंबाई, मनुष्य-मनुष्यता, लड़का–लड़कपन, चढ़ना-चढ़ाई आदि।

(ग) अव्ययवाचक तद्धित प्रत्यय–अव्ययवाचक प्रत्ययों को लगाने से बनते हैं। भर, तक, था, दा आदि से बनते हैं। **जैसे**–दिनभर, आजतक, अन्यथा, सर्वदा आदि।

(घ) गुणवाचक तद्धित प्रत्यय–ये गुण भाव का प्रदर्शन करते हैं। **जैसे**–भूख से भूखा, नगर से नागरिक आदि।

(ङ) अपत्यवाचक तद्धित प्रत्यय–इस प्रत्यय से उत्पन्न होने का ज्ञान होता है। **जैसे**–जनक से जानकी, पर्वत से पर्वतीय, सूर्य से सौर, कुरु से कौरव आदि।

(च) संबंधवाचक तद्धित प्रत्यय–जो संबंध की सूचना देते हैं। **जैसे**–शैव (शिव का उपासक), वैष्णव (विष्णु का उपासक), ममेरा, चचेरा, फूफा से फूफेरा आदि।

अभ्यास

1. प्रत्यय की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए।

2. प्रत्यय कितने प्रकार के हैं? उनके नाम लिखिए।

3. कृदंत प्रत्यय किसे कहते हैं? इसके भेद भी लिखिए।

4. तद्धित प्रत्यय को उदाहरण सहित समझाइए।

5. निम्नलिखित प्रत्यय किस प्रत्यय के अंतर्गत आते हैं–

(क) मिलनसार

(ख) रोना

(ग) गायक

(घ) चटनी

(ङ) सपेरा

(च) ननिहाल

6. कृदंत प्रत्यय तथा तद्धित प्रत्यय में अंतर स्पष्ट करते हुए पाठ से कम से कम दो-दो उदाहरण भी दीजिए।

_____

_____

_____

_____

कृदंत प्रत्यय

1. _____

2. _____

तद्धित

1. _____

3. _____

19 अव्यय (Indeclinable)

परिभाषा–जिन शब्दों के रूप सदा एक से बने रहते हैं अर्थात् लिंग, वचन, समय तथा कारक आदि के कारण उनमें कोई विकार उत्पन्न नहीं होता, उन्हें अव्यय (अविकारी शब्द) कहते हैं।

जैसे– आज, अब, कल, तब, और आदि।

विकार से तात्पर्य है–परिवर्तन।

अव्यय के भेद

अव्यय के चार भेद (प्रकार) बताए गए हैं–

1. क्रिया-विशेषण (Adverb)
2. संबंधबोधक (Adverb of Vocative)
3. समुच्चयबोधक (Adverb of Conjuction)
4. विस्मयादिबोधक (Adverb of Inerjection)

1. क्रिया-विशेषण (Adverb)–जो शब्द क्रिया की विशेषता बताए, उसे क्रिया-विशेषण कहते हैं।

जैसे– रमेश रोज़ स्कूल जाता है। लड़का ज़ोर से चिल्लाया ।

नोट–'क्रिया विशेषण' का विस्तृत वर्णन अध्याय 11 में किया जा चुका है।

2. संबंधबोधक (Adverb of Vocative)–जो अव्यय संज्ञा अथवा सर्वनाम का संबंध वाक्य के किन्हीं अन्य शब्दों से प्रकट करते हों, **'संबंधबोधक अव्यय'** कहलाते हैं।

जैसे– कृष्ण की पुस्तक नरेन्द्र के पास है।

वाचक शब्द–समान, ऊपर, नीचे, भीतर, पास, निकट, आस-पास, कारण, तुल्य, सदृश, मध्य, समेत, पहले, बिना, पीछे, पूर्व, उपरान्त आदि संबंधबोधक अव्यय के वाचक शब्द हैं।

3. समुच्चयबोधक अव्यय (Adverb of Conjuction)–शब्दों और वाक्यों को आपस में मिलाने वाले अव्यय **समुच्चयबोधक अव्यय** कहलाते हैं।

जैसे– राम और सीता।

इस वाक्य में **और** शब्द राम तथा सीता को जोड़ता है। अत: 'और' शब्द समुच्चयबोधक है।

समुच्चयबोधक के दो भेद हैं–

(क) **संयोजक**–संयोजक अव्यय दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ते हैं। **जैसे**–और, तथा, तथापि, यदि, अगर, मगर, भी।

(ख) **विभाजक**–विभाजक अव्यय दो शब्दों या वाक्यों को तोड़ते भी हैं और इनके अर्थों को भी अलग करते हैं। **जैसे**–वह जाए या तुम जाओ।

4. विस्मयादिबोधक अव्यय (Adverb of Interjection)–जिन शब्दों से चित्त के सुख-दु:ख और आश्चर्य का भाव प्रकट होता है, उन्हें विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं।

जैसे– (क) अहा! वह जीत गया। (ख) हाय ! वह गिर पड़ा है।

उक्त वाक्यों में '**अहा !**' और 'हाय !' शब्द क्रमश: खुशी और खेद प्रकट करते हैं। अत: ये **विस्मयादिबोधक अव्यय** हैं।

नोट–इन शब्दों के अंत में विस्मयादिबोधक चिह्न (!) अवश्य आता है।

वाचक शब्द–अरे !, ओह !, क्या !, आह !, हाय !, अफसोस !, छि:-छि: !, वाह ! आदि हैं।

आपने क्या सीखा

1. जो सदा एक से बने रहते हैं उन्हें 'अव्यय' कहा जाता है।
2. अव्यय चार प्रकार के होते हैं–क्रिया-विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक।
3. शब्दों और वाक्यों को मिलाने वाले समुच्चयबोधक अव्यय कहलाते हैं।
4. जो आश्चर्यबोधक शब्द हैं, वे विस्मयादिबोधक अव्यय हैं।

अभ्यास

1. अव्यय की परिभाषा उदाहरण सहित दें।

2. अव्यय के भेद लिखिए।

3. संबंधबोधक किसे कहते हैं? इसके अन्य भेद बताइए।

4. समुच्चयबोधक की परिभाषा सोदाहरण दीजिए।

5. नीचे दिए वाक्य किस प्रकार के अव्यय हैं–

(क) राम और सीता वन गए।

(ख) अरे ! वह जीत गया।

(ग) पुस्तक के भीतर चित्र हैं।

(घ) नागेश रोज़ मंदिर जाता है।

6. विस्मयादिबोधक अव्यय से आपका क्या तात्पर्य है?

20 वाक्य-संरचना
(Sentence Structure)

परिभाषा–'वाक्य' सार्थक शब्दों के उस समूह को कहते हैं जिससे वक्ता के कथन का पूरा अर्थ समझ में आ जाए। अर्थात् वाक्य सार्थक शब्दों का वह व्यवस्थित एवं क्रियायुक्त समूह है जिससे विचारों की पूर्णता का ज्ञान प्राप्त होता है। जैसे–1. वह विद्यालय जाता है। 2. वे लोग चले गए। यहाँ चार सार्थक शब्दों का समूह है जिससे वक्ता के कथन का पूरा आशय प्राप्त होता है।

वाक्य के भेद

वाक्य के भेद मुख्य रूप से दो दृष्टि से किए जाते हैं–

(क) स्वरूप/रचना की दृष्टि से

(ख) अर्थ की दृष्टि से

(क) स्वरूप/रचना की दृष्टि से–स्वरूप/रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन भेद हैं–

1. **सरल वाक्य (Simple Sentence)**–जिस वाक्य में एक ही कर्त्ता और एक ही क्रिया हो, उसे सरल वाक्य कहते हैं। **जैसे**–बालक पढ़ता है।

2. **मिश्रित वाक्य (Complex Sentence)**–जिस वाक्य में एक प्रधान वाक्य और एक या एक से अधिक आश्रित वाक्य होते हैं, उसे मिश्रित वाक्य कहते हैं। **जैसे**-वह नहीं जानता है कि मैं कब आऊँगा।

3. **संयुक्त वाक्य (Compound Sentence)**–जिस वाक्य में दो या दो से अधिक सरल वाक्य या मिश्रित वाक्य आपस में संयोजक अव्यय द्वारा जुड़े रहते हैं, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं।

   जैसे– मैं बनारस जाऊँगा और तुम्हारे लिए बनारसी साड़ियाँ लाऊँगा।

(ख) अर्थ की दृष्टि से–अर्थ की दृष्टि से वाक्य के आठ भेद हैं–

1. **विधिवाचक वाक्य (Affirmative Sentence)**–जब वाक्य में क्रिया के करने या होने का बोध प्रकट हो, उसे विधिवाचक वाक्य कहते हैं।

   जैसे– (i) वह गेंद खेलता है। (ii) राजू गाँव में रहता है।

2. **निषेधवाचक वाक्य (Negative Sentence)**–जब वाक्य में क्रिया को न करने या न होने का बोध हो, तो उसे निषेधवाचक वाक्य कहते हैं।

   जैसे– (i) मैंने खाना नहीं खाया। (ii) उसने पत्र नहीं खोला।

3. **प्रश्नवाचक वाक्य (Interrogative Sentence)**–जब वाक्य में प्रश्न किया जाए, तो उसे प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं।

   जैसे– (i) क्या वह खेलने गया है? (ii) तुम कहाँ रहते हो?

4. **संकेतवाचक वाक्य (Conditional Sentence)**–जब वाक्य में एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर हो, तो उसे संकेतवाचक वाक्य कहते हैं।

   जैसे– (i) यदि रात हो गई तो मैं नहीं आऊँगा। (ii) तुम परिश्रम करोगे, तभी सफल होगे।

5. संदेहवाचक वाक्य (Sentence Indicating Doubt)–जिन वाक्यों में संदेह या संभावना का होना प्रकट हो, उन्हें संदेहवाचक वाक्य कहते हैं।

जैसे– (i) अब तक वह जा चुका होगा। (ii) शायद वह कल आ जाए।

6. इच्छावाचक वाक्य (Illative Sentence)–जिन वाक्यों में वक्ता की इच्छा, आशा, शुभकामना आदि का बोध हो, उन्हें इच्छावाचक वाक्य कहते हैं।

जैसे– (i) भगवान् करे तुम सफल हो। (ii) ईश्वर करे भारत आज मैच जीत जाए।

7. आज्ञावाचक वाक्य (Imperative Sentence)–जिन वाक्यों में आज्ञा, आदेश, अनुमति का बोध हो, उन्हें आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं।

जैसे– (i) तुम बाहर जाओ। (ii) जो काम कहा है वही करो।

8. विस्मयादिबोधक वाक्य (Exclamatory Sentence)–जिन वाक्यों में हर्ष, घृणा, शोक, आश्चर्य आदि का भाव प्रकट हो, उन्हें विस्मयादिबोधक वाक्य कहते हैं।

जैसे– (i) वाह ! कितनी सुंदर गेंदबाजी है। (ii) ओह ! बेचारा फेल हो गया।

वाक्य-परिवर्तन

1. सरल वाक्य से मिश्रित वाक्य बनाना–सरल वाक्य से मिश्रित वाक्य बनाने के लिए सरल वाक्य में प्रयुक्त अंश से दो वाक्य बनाए जाते हैं तथा उन्हें जब, जिसने, जहाँ, कि आदि योजकों से जोड़ते हैं।

सरल वाक्य	मिश्रित वाक्य
(क) शिक्षक के आते ही छात्र शांत हो गए।	(क) जैसे ही शिक्षक आए छात्र शांत हो गए।
(ख) माताजी के आने पर बाजार चलेंगे।	(ख) जब माताजी आएँगी हम बाजार चलेंगे।

2. सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य बनाना–सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य बनाने के लिए उसमें दोनों वाक्य और, तथा, परंतु, किंतु जैसे योजकों के जुड़ने से बनते हैं।

सरल वाक्य	संयुक्त वाक्य
(क) काम समाप्त होने के बाद हम घर जाएँगे।	(क) काम समाप्त हो गया और हम घर जाएँगे।
(ख) वह सुंदर खिलौने खरीदती है।	(ख) वह खिलौने खरीदती है और वे सुंदर हैं।

अभ्यास

1. 'वाक्य' किसे कहते हैं?
2. वाक्य के भेद लिखिए।
3. अर्थ की दृष्टि से वाक्य कितने प्रकार के होते हैं?
4. मिश्रित वाक्य क्या है? उसका एक उदाहरण दीजिए।
5. नीचे दिए वाक्यों के प्रकार लिखिए–

(क) मैंने दूध नहीं पिया है।
(ख) क्या वह पढ़ने गया है?
(ग) वे गेंद से खेल रहे हैं।
(घ) शायद वह कल आ जाए।
(ङ) मैं बनारस जाऊँगा और साड़ियाँ लाऊँगा।
(च) जो काम कहा है वही तुम करो।
(छ) ईश्वर करे भारत मैच जीत जाए।
(ज) ओह! बेचारा फेल हो गया।

21 विराम-चिह्न
(Punctuation)

अर्थ–विराम का अर्थ है–रुकना या विश्राम।

बोलते समय हमारी वाणी की गति में समानता नहीं होती। अपनी बात को प्रकट करने के लिए हम बीच-बीच में अनेक स्थानों पर रुकते हैं। यदि बिना रुके हम अपनी बात को कहते चले जाएँ, तो सुनने वाले की कुछ समझ में नहीं आएगा। लिखते समय इसे रुकने या विराम के लिए हम कुछ संकेत-चिह्नों का प्रयोग करते हैं।

विराम-चिह्न की परिभाषा–ठहरने या विश्राम की इस प्रक्रिया को स्पष्ट करने के लिए व्याकरण में जिन चिह्नों का प्रयोग करते हैं, उन संकेत-चिह्नों को विराम-चिह्न कहते हैं। प्रमुख विराम चिह्न निम्नलिखित हैं–

1. पूर्ण-विराम (।)
2. अल्प-विराम (,)
3. अर्द्ध-विराम (;)
4. प्रश्नसूचक-चिह्न (?)
5. विस्मयसूचक-चिह्न (!)
6. निर्देशक चिह्न (–)
7. योजक चिह्न (-)
8. विवरण चिह्न (:–)
9. लाघव-चिह्न (॰)
10. उद्धरण-चिह्न (" ' ' ' ' ")
11. कोष्ठक ([ ], ( ), { })
12. विस्मृति चिह्न (‸)

1. पूर्ण विराम (Full Stop) (।)–जहाँ वाक्य समाप्त होता है, वहाँ पूर्ण विराम लगाया जाता है।

जैसे– यह दिल्ली नगर है।

2. अल्प विराम (Comma) (,)–जब किसी शब्द, पद या वाक्य-खंड के बाद अल्प समय तक रुकने की आवश्यकता पड़ती है, वहाँ अल्प विराम लगता है।

जैसे– रवि ने चाय, शक्कर आदि सामान खरीदा।

3. अर्द्ध विराम (Semicolon) (;)–जहाँ अल्प विराम से अधिक समय तक ठहरने की आवश्यकता पड़े, वहाँ अर्द्ध-विराम लगाया जाता है।

जैसे– वह तो रो रहा था; मैंने ही उसे चुप कराया।

4. प्रश्नसूचक चिह्न (Question Mark) (?)–जिन वाक्यों में प्रश्न पूछा जाता है, उन वाक्यों के अंत में प्रश्नसूचक चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

जैसे– क्या तुमने सर्कस देखा है?

5. **विस्मयसूचक चिह्न (Mark of Exclamation) (!)**–विस्मय, शोक, हर्ष आदि भावों को प्रकट करने के लिए विस्मयसूचक चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

जैसे– हाय! वह लुट गई।

6. **निर्देशक चिह्न (Dash) (—)**–कथोपकथन, वार्ता या संवाद में वक्ता के नाम के बाद इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

जैसे– रवींद्र—प्रदूषण हानिकारक होता है।

7. **योजक चिह्न (Hyphen) (-)**–समानार्थक या विपरीतार्थक शब्द-युग्मों के बीच इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

जैसे– रात-दिन, माता-पिता, सुख-दु:ख आदि।

8. **विवरण चिह्न (Sign of Following) (:–)**–जब किसी बात का विवरण, उत्तर या उदाहरण अगली पंक्ति में देना हो, तो विवरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

जैसे– बिजली से निम्नलिखित लाभ हैं:–

9. **लाघव चिह्न (Abbreviation Sign) (०)**–शब्दों को संक्षिप्त रूप में लिखने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

जैसे– इंजीनियर–इंजी०, डॉक्टर–डॉ०।

10. **उद्धरण चिह्न (Inverted Comma) (‘‘ ’’)**–जब किसी वाक्य को उसी रूप में लिखा जाता है, जिस रूप में वह कहा गया है, तो उद्धरण चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।

जैसे– शास्त्री जी ने कहा–‘‘जय जवान, जय किसान।’’

11. **कोष्ठक (Brackets) ([ ], ( ), { })**–किसी शब्द, वाक्यांश, अंकों, अक्षरों का आशय व्यक्त करने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

जैसे– राम (दशरथ-पुत्र) अयोध्या 14 वर्ष बाद लौटे।

12. **विस्मृति चिह्न (ˇ)**–जब कोई अक्षर या शब्द बीच में छूट जाता है, तो इसी विस्मृति चिह्न का प्रयोग होता है।

जैसे– रमेश ने ˇ पत्र लिखा।

अभ्यास

1. **विराम चिह्न से आप क्या समझते हैं?**
2. **पूर्ण-विराम कहाँ-कहाँ लगाया जाता है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।**
3. **लाघव-चिह्न का प्रयोग कब किया जाता है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।**

22 काव्य सौंदर्य के तत्व (रस, छंद, अलंकार)

रस

रस की परिभाषा–''किसी कविता को पढ़ने, सुनने या नाटक आदि को देखने से जो आनन्द मिलता है, उसे रस कहते हैं।''

''काव्य की आत्मा को रस कहा जाता है।'' **–आचार्य दण्डी**

रस के अंग

रस के चार अंग माने गए हैं। इन सभी के संयोग से रस की अनुभूति होती है।

1. **स्थायी भाव**–जो भाव अथवा विचारधारा मनुष्य के हृदय में सदैव अज्ञात रूप से रहती है तथा अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न होने पर अचानक जाग्रत हो जाती है, उस विचारधारा अथवा भाव को **स्थायी भाव** कहते हैं।

आचार्यों ने इनकी संख्या ग्यारह निर्धारित की है–

रस	स्थायी भाव	रस	स्थायी भाव
1. शृंगार	रति	7. वीभत्स	जुगुप्सा/घृणा
2. वीर	उत्साह	8. अद्‌भुत	आश्चर्य
3. करुण	शोक	9. शांत	निर्वेद
4. हास्य	हास	10. वात्सल्य	वत्सलता
5. रौद्र	क्रोध	11. भक्ति	देव विषयक रति
6. भयानक	भय		

2. **विभाव**–स्थायी भावों को जगा देने वाले कारणों को **विभाव** कहते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं–

   (क) उद्‌दीपन विभाव–जिन कारणों से स्थायी भाव उद्‌दीप्त या उत्तेजित होता है, वे उद्‌दीपन विभाव कहलाते हैं।

   (ख) आलंबन विभाव–जिस वस्तु या व्यक्ति के प्रति स्थायी भाव जाग्रत हो, वह आलंबन विभाव कहलाता है।

3. **अनुभाव**–जिस व्यक्ति के हृदय में भाव उद्‌दीप्त हुआ हो, उसकी वे चेष्टाएँ जिनमें उस भाव का अनुभव होता है, अनुभाव कहलाती हैं।

4. **संचारी या व्यभिचारी भाव**–जो भाव कुछ समय के लिए आकर स्थायी भाव की पुष्टि में सहयोग देकर चले जाते हैं, वे संचारी भाव कहलाते हैं।

1. शृंगार रस

परिभाषा–स्त्री और पुरुष के पवित्र प्रेम के चित्रण को शृंगार रस कहा जाता है। इसके दो भेद होते हैं–

(क) संयोग शृंगार–जिस काव्य में नायक-नायिका के मिलन का वर्णन किया जाता है, वहाँ संयोग शृंगार की उत्पत्ति होती है। **जैसे–**

''बतरस लालच लाल की, मुरली, धरी लुकाय।
सौंह करै भौंहनि हँसै, देन कहै नटि जाय।।''

(ख) वियोग शृंगार–जहाँ नायक और नायिका एक-दूसरे से अलग हों और इच्छा करने पर भी एक-दूसरे से न मिल सकें, वहाँ वियोग शृंगार होता है। **जैसे–**

''अंखियाँ हरि दरसन की भूखी''

2. वीर रस

परिभाषा–कविता सुनने, पढ़ने, नाटक आदि को देखने से जो उत्साह रूपी स्थायी भाव उत्पन्न होता है, उसे वीर रस माना जाता है अर्थात् दीन-दुखियों एवं असहायों के कष्ट मिटाने तथा धर्म एवं राष्ट्र के लिए मर मिटने की भावना से उत्पन्न उत्साह से वीर रस की व्यंजना होती है। जैसे–

''जो साहस कर बढ़ता उसको,
केवल कटाक्ष से रोक दिया।
जो वीर बना नभ बीच फेंक,
बरछे पर उसको रोक दिया।
क्षण उछल गया अरि घोड़े पर,
क्षण खड़ा सो गया घोड़े पर।
बैरी दल से लड़ते-लड़ते,
वह खड़ा हो गया घोड़े पर।''

3. करुण रस

परिभाषा–प्रिय व्यक्ति या इष्ट वस्तु के नष्ट होने और अप्रिय व्यक्ति या अनिष्ट वस्तु के प्रकट होने से हृदय को जो क्लेश होता है, उसी की व्यंजना से करुण रस की उत्पत्ति होती है। जैसे–

''प्रिय पति वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ है?
दुःख जलनिधि डूबते का सहारा कहाँ है?
लख मुख जिसका मैं आज लौं जी सकी हूँ-
वह हृदय का दुलारा नैन तारा कहाँ है?''

4. हास्य रस

परिभाषा–किसी व्यक्ति अथवा वस्तु की विकृत वेशभूषा, विचित्र आकृति या विचित्र प्रकार की चेष्टाओं अथवा बातचीत के विभिन्न ढंग को देखकर वर्णन करने में हास्य रस की उत्पत्ति होती है, जिसका स्थायी भाव 'हास' है। जैसे–

''विंध्य के वासी उदासी तपो व्रतधारी महा बिनु नारि दुखारे।
गौतम तीय तरी तुलसी, सो कथा सुनी भे मुनिवृन्द सुखारे।।
ह्वै हैं शिला सब चन्द्रमुखी परसे पद मंजुल कंज तिहारे।
कीन्हीं भलि रघुनायक जूँ करुना करिके कानन को पग धरे।।''

यहाँ इस वर्णन को पढ़कर तुरंत ही हँसी उत्पन्न होती है तथा हास नामक स्थायी भाव से हास्य रस की व्यंजना होती है।

5. रौद्र रस

परिभाषा–अपना अपमान, बड़ों की निंदा या उनका अपकार, शत्रु की चेष्टाओं तथा शत्रु या किसी दुष्ट अत्याचारी द्वारा किए गए अत्याचारों को देखकर अथवा गुरुजनों आदि की निंदा को सुनकर उत्पन्न हुए अमर्ष (क्रोध) के पुष्ट होने पर रौद्र रस की उत्पत्ति होती है। जैसे–

''उस काल मारे क्रोद्धि के, तनु काँपने उनका लगा।
मानों हवा के वेग से, सोता हुआ सागर जगा।।''

6. भयानक रस

परिभाषा–किसी डरावनी वस्तु को देखने से, घोर अपराध करने पर दंडित होने के विचार से, शक्तिशाली शत्रु या विरोधी का सामना होने की आशंका से उत्पन्न भय के पुष्ट होने पर भयानक रस की उत्पत्ति होती है। जैसे–

''लंका की सेना तो कपि के गर्जन-रव से काँप गयी।
हनुमान के भीषण दर्शन से विनाश ही भाँप गयी।
उस कंपित शंकित सेना पर, कपि नाहर की मार पड़ी।
त्राहि-त्राहि शिव त्राहि-त्राहि की सब ओर पुकार पड़ी।।''

7. वीभत्स रस

परिभाषा– गंदी, घोर, अरुचिकर, घृणित वस्तुओं–जैसे–पीव, रक्त, हड्डी, चर्बी, मांस, उनकी दुर्गंध आदि के वर्णन से मन में जो घृणा जगती है, वही पुष्ट होकर वीभत्स रस की स्थिति प्राप्त करती है। जैसे–

''सिर पर बैठ्यो काग, आँख दोउ खात निकारत।
खींचत जीभहिं स्यार, अतिहिं आनन्द उर धारत।
गिद्ध जाँघ को खोदि-खोदि के मांस उचारत।
स्वान आंगुरिन काटि-काटि के खात विदारत।।''

8. अद्‌भुत रस

परिभाषा–अद्‌भुत वस्तुओं को देखने, पढ़ने या सुनने से जो विस्मय का भाव जाग्रत होता है, वही चक्र रस में पड़कर अद्‌भुत रस में परिणत होता है। अद्‌भुत रस का स्थायी भाव 'विस्मय' होता है। जैसे–

''इहाँ उहाँ दुई बालक देखा। मति भ्रम मोरि की आन विसेखा।
तन पुलकित मुख वचन न आवा। नयन मूँदि चरनन सिर नावा।''

9. शांत रस

परिभाषा–निर्वेद का अर्थ है–वेदना रहित हो जाना, इस स्थिति में मनोविकार प्रायः समाप्त हो जाते हैं। संसार की निस्सारता तथा इसकी वस्तुओं की नश्वरता का अनुभव करके ही चित्त में वैराग्य उत्पन्न होता है। यही वैराग्य भाव शांत रस की अभिव्यंजना करता है। जैसे–

''मन पछितैहैं अवसर बीते।
दुर्लभ देह पाई हरिपद भजु, करम वचन अरु ही ते।
अब नाथहिं अनुराग, जागु जड़ त्यागु दुरासा जी ते।।''

10. वात्सल्य रस

परिभाषा–अपनी संतान के प्रति रति भाव जब उपयुक्त विभाव, अनुभाव और संचारी भावों के सम्मिश्रण के परिणामस्वरूप आनन्द में परिणत हो जाता है, तो वहाँ वात्सल्य रस होता है। जैसे–

''जसोदा हरि पालना झुलावैं।
हलरावैं दुलरावैं मल्हावैं, जोई सोइ कुछ गावैं।
मेरे लाल को आवरी निंदिया, काहे न आन सुवावैं।''

11. भक्ति रस

परिभाषा–जहाँ ईश्वर के प्रति श्रद्धा और प्रेम का भाव हो, वहाँ भक्ति रस होता है। जैसे–

" मेरा मन अनत कहाँ सुख पावै।
जैसे उड़ी जहाज को पंछी पुनि जहाज पै आवै।
कमल नैन को छांड़ि महातम और दैव को ध्यावै।"

छंद

परिभाषा–जिस रचना में निश्चित वर्ण या वर्णों की मात्रा हो तथा गति और यति का निश्चित विधान हो, उसे 'छंद' कहते हैं। छंद का अर्थ है–बंधन।

छंद के अंग

मात्र–किसी स्वर का उच्चारण करने में जो समय लगता है, उसे मात्रा कहते हैं। मात्राएँ दो होती हैं–ह्रस्व और दीर्घ। इन्हें ही लघु और दीर्घ कहते हैं। अ, इ, उ, ; से मिले वर्णों को ह्रस्व या लघु कहेंगे। आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ से मिले वर्णों को दीर्घ या गुरु कहेंगे। ह्रस्व वर्ण की एक मात्रा मानी जाती है और गुरु वर्ण की दो। अनुस्वार वाले वर्ण (गंगा में गं अनुस्वार वाला वर्ण है) की दो मात्राएँ मानी जाती हैं। संयुक्ताक्षर से मिले हुए अक्षर से पहले के अक्षर की दो मात्राएँ मानी जाती हैं।

चरण–छंद को जिस ढंग से लिखा जाता है वे पंक्तियाँ चरण कहलाती हैं। साधारणत: प्रत्येक छंद में चार चरण होते हैं। कुछ में छ: चरण भी होते हैं।

यति और गति–छंद पढ़ते समय जहाँ स्थान-स्थान पर ठहरना या रुकना पड़ता है, उस स्थान को यति कहते हैं। छंद की लय को गति कहते हैं।

छंद के प्रकार

छंद के दो प्रकार हैं–**मात्रिक छंद** और **वर्णिक छंद**। मात्रिक छंदों में मात्राओं का नियमित विधान होता है, वर्णिक छंदों में वर्णों का विधान होता है।

मात्रिक छंद

मात्रिक छंद तीन प्रकार के होते हैं–सम, अद्‌र्धसम और विषम। आगे कुछ मात्रिक छंदों के लक्षण और उदाहरण दिए जा रहे हैं।

1. **चौपाई**–यह मात्रिक सम छंद है। इसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं। अंत में लघु-गुरु नहीं होना चाहिए। **उदाहरण–**

ऽ।।	।।।	। ऽ। ।	ऽऽ	= 16 मात्राएँ
मंगल	भवन	अमंगल	हारी।	
द्रवहु	सो	दसरथ	अजिर	बिहारी।।

2. **दोहा**–यह मात्रिक अद्‌र्धसम छंद है। इसके प्रथम और तृतीय चरण में 13-13 तथा द्‌वितीय और चतुर्थ चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं। अंत में लघु होना अनिवार्य है। अंतिम शब्दों की तुक मिलती है। **उदाहरण–**

ऽ।	ऽ।	ऽ	ऽ।	ऽ	ऽ।	।ऽ	ऽ	ऽ।		= 11-13मात्राएँ
राम	नाम	की	लूट	है,	लूट	सकै	तो	लूट।		
अंतकाल		पछिताउगे,		प्रान		जाँइगे		छूट।।		

3. **सोरठा**–यह मात्रिक अद्‌र्धसम छंद है। इसके प्रथम और तृतीय चरण में 11-11 तथा द्‌वितीय और चतुर्थ चरण में 11-13 मात्राएँ होती हैं। दोहे को उल्टा कर देने से सोरठा बन जाता है। **उदाहरण–**

ऽ। ऽ। ऽऽ। ऽ। ।।। ।।।। ।।। = 11-13मात्राएँ

मूक होइ वाचाल, पंगु चढ़इ गिरिवर गहन।
जासु कृपा सुदयालु, द्रवहु सकल कलिमल दहन।।

4. रोला–रोला के प्रत्येक चरण में 11 व 13 के विराम से 24 मात्राएँ होती हैं। अंत में दो गुरु होते हैं परंतु यह आवश्यक नहीं है। **उदाहरण–**

ससि बिन सूनी रैन, ज्ञान बिन हिरदै सूनौ।
कुल सूनौ बिन पुत्र, पत्र बिन तरुवर सूनौ।।
गज सूनौ इक दंत, और बिन पुहुप बिछूनौ।
विप्र सून बिन वेद, ललित बिन सायर सूनौ।।

5. कुंडलिया–पहले एक दोहा और फिर एक रोला मिलाने से 'कुंडलिया' छंद बन जाता है। इसमें दोहे का चौथा चरण और रोला का प्रथम चरण एक ही होता है तथा इसका प्रथम और अंतिम शब्द एक ही होता है। **उदाहरण–**

दोहा– झूठा मीठे वचन कहि ऋण उधार ले जाय,
लेत परम सुख उपजै लैके दियो न जाय।

रोला– लैके दियो न जाय ऊँच अरु नीच बतावै,
ऋण उधार की रीति मांगते मारन धावै।
कह गिरधर कविराय रहे जन मन में रूठा,
बहुत दिना है जाय कहे तोरा कागज झूठा।।

6. हरगीतिका–हरगीतिका के प्रत्येक चरण में 16 और 12 के विराम से 28 मात्राएँ होती हैं। अंत में एक लघु और एक गुरु होता है। **उदाहरण–**

।। ऽ। ऽऽ ऽ ।ऽ ।। ।। ।ऽ ऽऽ ।ऽ
खग वृंद सोता है अत: कल/कल नहीं होता वहाँ,
बस मंद मारुत का गमन ही/मौन है खोता जहाँ।
इस भाँति धीरे से परस्पर/कह सजगता की कथा,
यों दीखते वृक्ष ये हों/विश्व के प्रहरी यथा।।

–मैथिलीशरण गुप्त

7. बरवै–इसके पहले और तीसरे चरणों में 12-12 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरणों में 7-7 मात्राएँ होती हैं। **उदाहरण–**

अवधि शिला का उर पर, था गुरु भार।
तिल-तिल काट रही थी, दृग जल धार।।

–मैथिलीशरण गुप्त
(12 + 7 = 19 मात्राएँ, अंत में जगण ।ऽ।)

वर्ण-वृत्त (वर्णिक छंद)

1. इन्द्रवज्रा–यह समवर्ण वृत्त है। इसमें चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में दो तगण, एक जगण और अंत में दो गुरु होते हैं। इसमें कुल 11 वर्ण होते हैं। **उदाहरण–**

ऽ ऽ। ऽ ऽ। ।ऽ ।ऽऽ
मैं राज्य की चाह नहीं करूँगा,
है जो तुम्हें इष्ट वही करूँगा।
सन्तान जो सत्यवती जनेगी,
राज्याधिकारी वह ही बनेगी।। = 11 वर्ण

2. उपेन्द्रवज्रा–यह समवर्ण वृत्त है। इसमें चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में जगण, तगण, जगण और अंत में दो गुरु होते हैं। कुल वर्ण **11** होते हैं। **उदाहरण–**

।ऽ । ऽऽ ।। ऽ। ऽऽ
बड़ा कि छोटा कछु काम कीजै।
परन्तु पूर्वा पर सोच लीजै।।
बिना विचारे यदि काम होगा।
कभी ना अच्छा परिणाम होगा।। = 11 वर्ण

3. बसन्ततिलका–यह समवर्ण वृत्त है। इसमें चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में **14** वर्ण होते हैं। वर्णों का क्रम तगण, भगण, दो जगण और दो गुरु होते हैं। **उदाहरण–**

ऽ ऽ।ऽ ।।। ऽ। ।ऽ। ऽऽ
ये दीखते परम वृद्ध नितांत रोगी,
या थी नवागत वधू गृह में दिखती।
कोई न और इनको तज के कहीं था,
सूने सभी सदन गोकुल के हुए थे।।

4. मत्तगयंद (सवैया)–यह समवर्ण वृत्त है। इसके प्रत्येक चरण में 7 भगण और दो गुरु के क्रम से 23 वर्ण होते हैं। **उदाहरण–**

ऽ। ।ऽ ऽ। ।ऽ। ।ऽ।। ऽ। ।। ऽ ऽऽ
सीस जटा,।। बाहु बिसाल विलोचन लाल तिरीछि सि भौंहें,
तून सरासन बान धरैं तुलसी वन मारग में सुठि सौंहें।
सादर बारहिं बार सुभाय चितै तुम्ह त्यौं हमरो मनु मोहैं।
पूछति ग्रामवधु सिय सों, कहौ साँवरे से सखि रावरे को हैं।।

5. मालिनी (परिभाषा)–इसमें **15** वर्ण होते हैं और प्रत्येक चरण में नगण, नगण, मगण, यगण, यगण होते हैं और यति 8-7 वर्णों पर पड़ती हैं (नगण = ।।।, मगण = ऽऽऽ, यमण =।ऽ)। **उदाहरण–**

।। ।। । ।ऽ ऽ। ।ऽऽ ।ऽ ऽ
प्रिय पति वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ है?
दु:ख जलनिधि डूबी का सहारा कहाँ है?
लख मुख जिसका मैं आज लौं जी सकी हूँ,
वह हृदय हमारा नेत्र तारा कहाँ है? = **15 वर्ण**

अलंकार

परिभाषा–आचार्य दण्डी के अनुसार, ''काव्य-शोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते।'' अर्थात् काव्य की शोभा बढ़ाने वाले धर्मों को अलंकार कहते हैं।

याद रखो–

किसी बात के वर्णन करने का रोचक और चमत्कारिक ढंग 'अलंकार' कहलाता है।

अलंकार दो प्रकार के होते हैं–

(क) शब्दालंकार (ख) अर्थालंकार।

1. ''सत्य सनेह सील सुख सागर''।

इसमें शब्दों के आदि में 'स' आ जाने से बड़ा चमत्कार हुआ है। इसमें 'शब्दालंकार' है।

2. ''सरद मयंक बदन छवि सीवाँ।''

यहाँ मुख की सुंदरता को शरद ऋतु के चन्द्रमा के समान बताकर वर्णन किया है, जिससे अर्थ में बड़ा चमत्कार आ गया है। इसमें 'अर्थालंकार' है।

अर्थात् जहाँ शब्दों में चमत्कार पाया जाता है, वहाँ 'शब्दालंकार' और जहाँ अर्थ में चमत्कार पाया जाए, वहाँ 'अर्थालंकार' होता है।

1. शब्दालंकार

मुख्य शब्दालंकार ये हैं–(1) अनुप्रास, (2) यमक, (3) श्लेष।

1. अनुप्रास अलंकार (परिभाषा)–जहाँ एक या अनेक वर्ण कई बार प्रयोग होते हैं, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

विशेष परिभाषा– एक ही वर्ण का हो बार-बार प्रयास।
बार-बार आवृत्ति से होता अलंकार अनुप्रास।।

उदाहरण 1– रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीता राम।

उपरोक्त पंक्तियों में 'र' तथा 'प' का कई बार प्रयोग होता है अतः यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

उदाहरण 2– चारु चन्द्र की चंचल किरणें खेल रही हैं, जल थल में।

इसमें 'च' वर्ण की आवृत्ति तीन बार हो रही है, अतः अनुप्रास अलंकार है।

2. यमक अलंकार (परिभाषा)–जब एक शब्द कई बार प्रयोग हो किंतु उसके अर्थ में भिन्नता हो, वहाँ यमक अलंकार होता है।

विशेष परिभाषा– एक शब्द बार-बार फिरे, अर्थ और ही और।
यमक अलंकार कहते, कवियों के शिरमौर।।

उदाहरण– ''कनक-कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाए।
एहि खाए बौराए जग, वाहि पाए बौराए।।''

उपरोक्त दोहे में 'कनक' शब्द दो बार प्रयोग किया गया है। पहले कनक का अर्थ सोना और दूसरे कनक का अर्थ धतूरा है, अतः यमक अलंकार है।

3. श्लेष अलंकार (परिभाषा)–जिन काव्य पंक्तियों में एक शब्द केवल एक ही बार प्रयोग हो किंतु उसके अर्थ प्रसंगानुकूल अनेक हों, वहाँ श्लेष अलंकार होता है। श्लेष का शाब्दिक अर्थ चिपका हुआ होता है अर्थात् जिसमें अनेक अर्थ चिपके हुए हों।

विशेष परिभाषा– एक ही शब्द में जहाँ, चिपके हों अर्थ अनेक
श्लेष अलंकार होता वहाँ, ये कवियों के लेख।

उदाहरण– चिर जीवौं जोरि जुरै, क्यों न सनेह गंभीर।
को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के वीर।।

उपरोक्त दोहे में 'व्रषभानुजा' और 'हलधर' के दो-दो अर्थ हैं–

वृषभानुजा– 1. **राजा वृषभानु की पुत्री** अर्थात् राधा।

2. **बैल की बहिन** अर्थात् गाय।

हलधर– 1. बलराम–कृष्ण के बड़े भाई, 2. बैल।

2. अर्थालंकार

1. उपमा अलंकार (परिभाषा)–जहाँ दो वस्तुओं में समानता प्रकट की जाए, वहाँ उपमा अलंकार होता है।

विशेष परिभाषा– उपमेय वही जिसकी की जाए समानता,
उपमान वही जिस वस्तु से हो समानता।
साधारण धर्म में जिस गुण की हो समानता,
वाचक वही जिस शब्द द्वारा हो समानता।

उदाहरण– नवल सुंदर श्याम शरीर की, सजल नीरद सी कल कांति थी।

उक्त पंक्तियों में श्याम के शरीर की समानता सजल नीरद से की गई है।

2. रूपक अलंकार (परिभाषा)–जहाँ उपमेय और उपमान में एकरूपता स्थापित होती है अर्थात् उपमेय को ही उपमान मान लिया जाता है, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

जैसे– मृत्यु एक सरिता है जिसमें, श्रम से कातर जीव नहाकर।
फिर नूतन धारण करता है, काया रूपी वस्त्र बहाकर।।

उपरोक्त काव्य पंक्तियों में मृत्यु (उपमेय) को सरिता (उपमान) माना गया है तथा काया (उपमेय) को वस्त्र (उपमान) माना गया है। अतः यहाँ पर रूपक अलंकार है।

3. उत्प्रेक्षा अलंकार (परिभाषा)–जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना की जाती है अर्थात् कल्पना की जाती है, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

जैसे– सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात।
मनौ नील मणि शैल पर, आतप पर्‌यो प्रभात।।

4. अतिशयोक्ति अलंकार– (परिभाषा)–जहाँ उपमेय का अत्यन्त बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया जाता है, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

जैसे– हनुमान की पूँछ में लगन ना पाई आग।
लंका सारी जल गयी, गए निशाचर भाग।।

5. भ्रांतिमान– (परिभाषा)–जहाँ समानता के कारण भ्रमवश उपमेय में उपमान का निश्चयात्मक ज्ञान हो, वहाँ भ्रांतिमान अलंकार होता है। **जैसे–**रस्सी (उपमेय) को साँप (उपमान) समझ लेना।

जैसे– कपि करि हृदय विचार, दीन्ह मुद्रिका डारि तब।
जानि अशोक अंगार, सीय हरषि उठि कर गेहउ।।

6. संदेह अलंकार– (परिभाषा)–जब किसी वस्तु में उसी के समान दूसरी वस्तु का संदेह हो जाए और कोई निश्चयात्मक ज्ञान न हो, तब संदेह अलंकार होता है।

जैसे– परिपूरन सिंदूर पूर कैधो मंगल घट।
किंधौ सक्र को छत्र मढ्यों मानिक मयूख पट।।

आपने क्या सीखा

1. काव्य की आत्मा को 'रस' कहा जाता है।
2. रस के चार अंग हैं–स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव, संचारी भाव।
3. छंद का अर्थ है–बंधन युक्त रचना।
4. छंद के दो प्रकार हैं–मात्रिक छंद तथा वर्णिक छंद।
5. काव्य की शोभा बढ़ाने वाले धर्मों को 'अलंकार' कहते हैं।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) रस किसे कहते हैं?

(ख) शृंगार अथवा शांत रस की परिभाषा सोदाहरण दीजिए।

(ग) भयानक या वीभत्स रस को परिभाषित कीजिए।

(घ) छंद से क्या अभिप्राय है? ये कितने प्रकार के होते हैं?

(ङ) अलंकार किसे कहते हैं? इसके कितने भेद हैं?

(च) यमक अथवा श्लेष की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए।

(छ) रूपक अथवा उत्प्रेक्षा की परिभाषा उदाहरण सहित दें।

2. अंतर बताइए–

(क) संयोग तथा वियोग शृंगार रस में।

(ख) रौद्र रस तथा शांत रस में।

(ग) चौपाई तथा दोहा छंद में।

(घ) इंद्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा छंद में।

(ङ) रूपक तथा उत्प्रेक्षा अलंकार में।

(च) भ्रांतिमान तथा संदेह अलंकार में।

3. निम्नलिखित रसों के स्थायी भाव बताइए–

शृंगार रस, रौद्र रस, शांत रस, वीभत्स रस, वीर रस।

4. नीचे दिए उदाहरण में कौन-सा छंद है–

मंगल भवन अमंगल हारी, द्रवहु सो दसरथ अजिर बिहारी।

(क) चौपाई छंद, (ख) दोहा छंद, (ग) रोला छंद।

5. निम्नलिखित उदाहरणों में कौन-सा अलंकार है–

(क) चारु चंद्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल-थल में – _____

(ख) कनक-कनक से सौ गुनी मादकता अधिकाय – _____

(ग) चरण-कमल बन्दौ हरिराई – _____

(घ) कपि कर हृदय विचार, डारि दीन्ह तब मुद्रिका – _____

23 शब्द-युग्म या समानोच्चरित शब्द
(Pair Word or Words of Similar Sound)

शब्द-युग्म

शब्दों के ऐसे जोड़े, जिनका उच्चारण प्रायः एक-सा होता है, परंतु उनके अर्थ में एकदम भिन्नता हो, शब्द-युग्म अथवा समानोच्चरित शब्द कहते हैं।

जैसे–जलज–कमल; जलद–बादल।

विशेष–परीक्षा में कभी-कभी शब्द-युग्मों के केवल अर्थ पूछे जाते हैं। नीचे कुछ शब्द-युग्म तथा उनके अर्थ दिए जा रहे हैं। छात्र इन शब्दों के अर्थ को याद करके इनका वाक्यों में प्रयोग कर अंतर स्पष्ट करने का अभ्यास करें–

	शब्द	अर्थ
1.	अभय	निडर
	उभय	दोनों
2.	अंत	छोर
	अंत्य	छोर पर स्थित
3.	अन्न	अनाज
	अन्य	दूसरा
4.	अकथ	जो कहा न जा सके
	अथक	जो थके नहीं
5.	अघ	पाप
	अध	नीचे
6.	अवधि	सीमा
	अवधी	एक भाषा
7.	अयोग	अप्राप्ति
	अयोग्य	जो योग्य न हो
8.	अनल	आग
	अनिल	हवा
9.	अभिनय	नाटक
	अभिनव	नया
10.	अमिय	अमृत
	अमित	बहुत

	शब्द	अर्थ
11.	अधर	होंठ
	आधार	सहारा
12.	अम्बुद	कमल
	अम्बुज	बादल
13.	आवरण	पर्दा
	आभरण	आभूषण
14.	आकर	खान, समूह
	आकार	आकृति, रूप
15.	आहुति	हवन
	आहूत	निमन्त्रित
16.	अशक्त	शक्तिहीन
	आसक्त	मोहित
17.	इतर	दूसरा
	इत्र	सुगंधित
18.	उर	हृदय
	उरु	जंघा
19.	उत्पल	कमल
	उपल	पत्थर
20.	उपेक्षा	निरादर
	अपेक्षा	आशा, इच्छा

	शब्द	अर्थ
21.	अनु	पीछे
	अणु	छोटा
22.	उद्यत	तैयार
	उद्धत	उद्दंड
23.	कुल	वंश
	कूल	तट, किनारा
24.	कान	श्रवणेन्द्रिय
	कानि	मर्यादा
25.	कच	बाल
	कुच	स्तन
26.	कृतज्ञ	उपकार मानने वाला
	कृतघ्न	उपकार न मानने वाला
27.	कण	छोटा भाग
	कर्ण	कान
28.	क्रम	सिलसिला
	कर्म	काम
29.	कलुश	पाप
	कुलिष	वज्र
30.	कांति	चमक
	क्रांति	परिवर्तन
31.	कृपाण	कटार
	कृपण	कंजूस
32.	कृता	की गई
	कर्त्ता	करने वाला
33.	कोश	शब्द-भंडार
	कोष	खजाना
34.	काश	शायद
	कास	खाँसी
35.	कर	हाथ
	कटि	कमर
36.	खाद	गोबर
	खाद्य	भोज्य पदार्थ
37.	चर्म	चमड़ा
	चरम	अन्तिम
38.	ग्रह	नक्षत्र
	गृह	घर

	शब्द	अर्थ
39.	उपकार	भलाई
	अपकार	बुराई
40.	घाम	धूप
	धाम	घर
41.	चिता	लाश वाली लकड़ी
	चीता	बाघ
42.	चूर	चूर्ण
	चूड़	शिखा
43.	चरू	गोचर भूमि
	चारू	सुन्दर
44.	जरठ	बूढ़ा
	जठर	पेट
45.	छात्र	विद्यार्थी
	क्षात्र	क्षत्रिय
46.	तरिणी	नाव
	तरणि	सूर्य
47.	द्वार	दरवाजा
	द्वारा	हेतु
48.	जलज	कमल
	जलद	बादल
49.	दिन	दिवस
	दीन	गरीब
50.	दायी	देने वाला
	दाई	नौकरानी/धाय
51.	द्विप	हाथी
	द्वीप	टापू
52.	नग	पहाड़
	नाग	सर्प
53.	नाड़ी	शरीर की नब्ज
	नारी	स्त्री
54.	नियंत्रण	बस में करना
	निमंत्रण	बुलावा, न्यौता
55.	नीड़	घोंसला
	नीर	पानी
56.	नाहर	सिंह
	नहर	निकाली गई नदी

आपने क्या सीखा

1. शब्दों के ऐसे जोड़े, जो पढ़ने में एक जैसे लगें परंतु उनके अर्थ भिन्न हों।
2. समान उच्चारण के शब्द 'शब्द-युग्म' कहलाते हैं।
3. शब्द-युग्म में 'ज' का अर्थ उत्पन्न 'धि' का अर्थ धारण करना तथा 'द' का अर्थ देने के अर्थ में प्रयोग प्राय: किया जाता है।

जैसे– **जलज, पंकज, नीरज**–कमल।

जलधि, पयोधि, वारिधि–समुद्र।

जलद, पयोद, वारिद–बादल।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) समानोच्चरित शब्द या शब्द-युग्म किसे कहते हैं?

(ख) उपल तथा उत्पल का अंतर बताइए।

2. सही विकल्प छाँटकर खाली स्थान भरिए–

(क) सूर्य सौर मण्डल का एक ———— है। (गृह/ग्रह)

(ख) भारत की ———— रुपया है। (मुद्रा/मुर्दा)

(ग) राम का जन्म इक्ष्वाकु ———— में हुआ। (कुल/कूल)

(घ) विनोद घर में सबसे अधिक ———— है। (कृपाण/कृपण)

(ङ) 1957 की ———— मेरठ जिले से प्रारंभ हुई। (क्रांति/कांति)

3. पाठ से कोई चार शब्द-युग्म चुनकर लिखिए।

4. नीचे दिए शब्दों के सही अर्थ छाँटकर लिखिए–

(क) बादल – (नीरद, जलज)

(ख) शिवजी – (संकर, शंकर)

(ग) कमल – (पयोधि, पंकज)

(घ) गरीब – (दिन, दीन)

(ङ) बाल – (कच, कुच)

5. अंतर स्पष्ट करते हुए अपनी उत्तर पुस्तिका पर लिखिए–

परिणाम-परिमाण, नीर-नीड़, कूल-कुल, चूर-चूड़, कृतज्ञ-कृतघ्न, नियंत्रण-निमंत्रण।

24 शब्दों की सामान्य अशुद्धियाँः वर्तनी

(Some Common Errors : Spellings)

शब्द संबंधी अशुद्धियाँ

छात्र-छात्राओं को शब्दों का सही ज्ञान होना बहुत आवश्यक है। यहाँ ऐसे शब्दों की सूची दी जा रही है जिनके लिखने में प्रायः अशुद्धियाँ होती हैं–

1. 'अ' और 'आ' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
संसारिक	सांसारिक	निरापराधी	निरपराधी
बारात्	बरात	व्यवहारिक	व्यावहारिक
अगामी	आगामी	अलोक	आलोक
हस्ताक्षेप	हस्तक्षेप	आधीन	अधीन
सप्ताहिक	साप्ताहिक	उच्चारित	उच्चरित

2. 'इ' और 'ई' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
भक्ती	भक्ति	मुनी	मुनि
क्षत्रीय	क्षत्रिय	पती	पति
पत्नि	पत्नी	तिथी	तिथि
अतिथी	अतिथि	श्रीमति	श्रीमती
निरोग	नीरोग	परिक्षा	परीक्षा
बुद्धी	बुद्धि	ऋषी	ऋषि
कालीदास	कालिदास	निरिक्षण	निरीक्षण
नीती	नीति	प्रीती	प्रीति

3. 'उ' और 'ऊ' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
लघू	लघु	धूआँ	धुआँ
प्रभू	प्रभु	जादु	जादू
अनुदित	अनूदित	ऊत्थान	उत्थान
सिंदुर	सिंदूर	आयू	आयु
गुरू	गुरु	दुसरा	दूसरा

4. 'ण' और 'न' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
तरुन	तरुण	प्रान	प्राण
दर्पन	दर्पण	साधारन	साधारण
आक्रमन	आक्रमण	कल्यान	कल्याण
पुन्य	पुण्य	स्मरन	स्मरण
प्रनाम	प्रणाम	चरन	चरण

5. 'ऋ' और 'र' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
हिरदय	हृदय	प्रथक	पृथक्
श्रिंगार	शृंगार	द्रश्य	दृश्य
ब्रज	बृज	ग्रहणी	गृहिणी
रिषी	ऋषि	रिषभ	ऋषभ

6. 'ज्ञ' और 'ग्य' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
विग्यान	विज्ञान	सौभाज्ञ	सौभाग्य
आग्या	आज्ञा	यग्य	यज्ञ
संग्या	संज्ञा	अनभिग्य	अनभिज्ञ
योज्ञ	योग्य	भोग्य	भोज्ञ

7. 'श', 'ष' और 'स' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
विषेश	विशेष	भासन	भाषण
पिसाच	पिशाच	विशय	विषय
सोभा	शोभा	सांति	शांति

8. 'छ' और 'क्ष' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
लच्छन	लक्षण	नछत्र	नक्षत्र
छमा	क्षमा	लछमण	लक्ष्मण
छितिज	क्षितिज	अच्छर	अक्षर
लच्छ	लक्ष्य	छत्री	क्षत्रिय
छन	क्षण	क्षात्र	छात्र

9. 'ट', 'ठ', 'ड', 'ढ', 'ण' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
पृष्ट	पृष्ठ	जेष्ट	ज्येष्ठ
बूड़ा	बूढ़ा	दृढ	दृढ़
ठटेरा	ठठेरा	बाढ	बाढ़
उत्कृष्ठ	उत्कृष्ट	बडाई	बड़ाई
यथेष्ठ	यथेष्ट	कंठ	कण्ठ

10. 'ब' और 'व' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
बिद्वान	विद्वान	बधू	वधू
बीणा	वीणा	बक्ता	वक्ता
बन	वन	बन्दना	वन्दना
विबेक	विवेक	बिवाह	विवाह

11. 'रि' और 'र' के प्रयोग संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
निरमल	निर्मल	प्रमाणु	परमाणु
स्वारथ	स्वार्थ	दुरगति	दुर्गति
परदीप	प्रदीप	स्मर्ण	स्मरण
उपरयुक्त	उपर्युक्त	परणाम	प्रणाम

12. 'अनुस्वार' तथा 'चंद्रबिंदु' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
सँकट	संकट	आंसू	आँसू
गांव	गाँव	दांत	दाँत
मँगल	मंगल	पांच	पाँच

13. 'वचन' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
बहूएँ	बहुएँ	डाकूओं	डाकुओं
गोपीयां	गोपियाँ	वधूएँ	वधुएँ

14. अशुद्ध उच्चारण से होने वाली अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
बैदजी	वैद्यजी	अध्यन	अध्ययन
उपलक्ष	उपलक्ष्य	उज्वल	उज्जवल
कृप्या	कृपया	उद्देश	उद्देश्य
सूचिपत्र	सूचीपत्र	धोका	धोखा
मिठायी	मिठाई	समाजिक	सामाजिक

15. 'प्रत्यय' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
अरोग्यता	आरोग्य	पून्नीय	पूजनीय
मान्यनीय	माननीय	माधुर्यता	मधुरता
सौंदर्यता	सौंदर्य	उपरोक्त	उपर्युक्त

16. 'विसर्ग' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
शनै-शनै	शनैः-शनैः	प्राय	प्रायः
अत एव	अतएव	षष्ठ	षष्ठः
दुख	दुःख	प्रात	प्रातः
मन:भावना	मनोभावना	स्व:	स्व

17. 'हलन्त' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
शुभम	शुभम्	मूल्यवान्	मूल्यवान
जगत	जगत्	भागवत	भागवत्
विद्वान	विद्वान्	नवम	नवम्
भाग्यवान्	भाग्यवान	स्वागतम	स्वागतम्

18. सामान्य अशुद्धियाँ

ऊपर कुछ विशेष प्रकार की अशुद्धियाँ दर्शाई गई हैं। इनके अतिरिक्त बहुत से अन्य शब्दों को लिखने में भी विद्यार्थी अशुद्धियाँ करते हैं। ऐसे शब्दों की सूची यहाँ दी जा रही है–

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
अंगरेज़ी	अंग्रेज़ी	त्रितीय	तृतीय
मंत्रीमण्डल	मंत्रिमण्डल	अहिल्या	अहल्या
कवयित्रि	कवयित्री	सेनिक	सैनिक

पछिताना	पछताना	मध्यान्ह	मध्याह्न
द्वारिका	द्वारका	गई	गयी
भगत	भक्त	श्रीयुक्त	श्रीयुत्
रचियता	रचयिता	वापिस	वापस
लिए	लिए	शिघ्र	शीघ्र
प्रदर्शिनी	प्रदर्शनी	संग्या	संज्ञा
सारिणी	सारणी	निर्दोषी	निर्दोष
मात्रभूमी	मातृभूमि	परेम	प्रेम

आपने क्या सीखा

1. शुद्ध शब्दों का सही ज्ञान ही 'वर्तनी' है।
2. वर्तनी (Spelling) का ज्ञान सभी के लिए आवश्यक है।
3. शुद्ध वर्तनी के ज्ञान हेतु उसका अध्ययन बहुत जरूरी है।

अभ्यास

1. अशुद्धियों का प्रकार पाठ के आधार पर लिखिए–

(क) विद्वान _____

(ख) भासन _____

(ग) डाकूओं _____

(घ) उपलक्ष _____

(ङ) विश्णु _____

(च) गांव _____

(छ) छन _____

(ज) बधू _____

2. नीचे दिए शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए–

(क) संग्या _____

(ख) शुभम _____

(ग) बन _____

(घ) योज्ञ _____

(ङ) स्वागतम _____

(च) सोभा _____

(छ) उज्वल _____

(ज) प्रथक _____

(झ) कन्ठ _____

(ञ) उपरोक्त _____

25 व्यावहारिक व्याकरण
(Vocabulary)

1. पर्यायवाची या समानार्थी शब्द (Synonyms)

परिभाषा–जिन शब्दों के अर्थ में समानता होती है उन्हें हम समानार्थक या पर्यायवाची शब्द कहते हैं। पर्यायवाची शब्द को 'प्रतिशब्द' भी कहते हैं। कुछ प्रमुख पर्यायवाची शब्द इस प्रकार हैं–

1.	अग्नि	–	आग, अनल, पावक, दहन।
2.	अमृत	–	सुधा, पीयूष, अमिय, सोम।
3.	अश्व	–	वाजि, घोड़ा, घोटक, तुरंग।
4.	आँख	–	लोचन, नयन, नेत्र, दृष्टि।
5.	आकाश	–	नभ, गगन, अम्बर, व्योम।
6.	आँसू	–	नेत्रजल, नयनजल, अश्रु, दृग्वारि।
7.	इन्द्र	–	देवराज, सुरपति, महेन्द्र, सुरेश।
8.	ईश्वर	–	भगवान, जगदीश्वर, परमेश्वर, विधाता।
9.	कमल	–	पंकज, नीरज, सरोज, जलज।
10.	कपड़ा	–	वसन, चीर, वस्त्र, परिधान।
11.	कामदेव	–	मनोज, कन्दर्प, काम, मार।
12.	कुबेर	–	यक्षराज, यक्षपति, धनराज, धनपति।
13.	कोयल	–	कोकिल, पिक, वसन्तदूत, काकपाली।
14.	गाय	–	गौ, धेनु, सुरभि, रोहिणी।
15.	गंगा	–	देवनदी, मन्दाकिनी, सुरसरि, भागीरथी।
16.	गणेश	–	गजानन, गजवदन, गणपति, गणनायक।
17.	गज	–	हाथी, हस्ती, मदकल, मतंग।
18.	गृह	–	आवास, धाम, कुटी, निवास।
19.	जल	–	वारि, नीर, तोय, पानी।
20.	चन्द्रमा	–	चन्द्र, शशि, इन्दु, राकेश।
21.	तालाब	–	सरोवर, जलाशय, पोखर, जलवान।
22.	दिन	–	दिवस, वासर, दिवा, प्रमान।
23.	दूध	–	दुग्ध, क्षीर, पय, स्तन्य।
24.	दाँत	–	दंत, दसन, द्विज, रद।
25.	दुर्गा	–	चंडिका, सुभद्रा, कल्याणी, भवानी।
26.	देवता	–	सुर, देव, आदित्य, वसु।

27.	धरती	–	पृथ्वी, भूमि, धारा, वसुन्धरा।
28.	नदी	–	सरिता, तटिनी, सरि, सारंग।
29.	नरक	–	यमलोक, यमालय, दुर्गति, कुंभीपाक।
30.	पवन	–	वायु, हवा, समीर।
31.	पक्षी	–	चिड़िया, खग, गगनचर, शकुन।
32.	पानी	–	जल, नीर, वारि, सलिल।
33.	पार्वती	–	उमा, गिरिजा, गौरी, शिवा।
34.	पति	–	स्वामी, सर्वस्व, प्राणधार, प्राण।
35.	पत्नी	–	गृहिणी, बहू, जोरू, घरनी।
36.	पुत्र	–	बेटा, तनुज, पूत, सुत।
37.	पुत्री	–	बेटी, तनुजा, नन्दिनी, लड़की।
38.	पुष्प	–	फूल, सुमन, कुसुम, प्रसून।
39.	पृथ्वी	–	भू, जमीन, धरा, धरिणी।
40.	बादल	–	मेघ, घन, नीरद, सारंग।
41.	विष	–	जहर, हलाहल, गरल, कालकूट।
42.	वृक्ष	–	पेड़, पादप, गाछ, तरु।
43.	विष्णु	–	नारायण, दामोदर, पीताम्बर, जलशायी।
44.	भूषण	–	जेवर, गहना, आभूषण, अलंकार।
45.	महेश	–	महादेव, शिव, त्रिनेत्र, शंकर।
46.	मनुष्य	–	आदमी, नर, मानव, मानुष।
47.	मृग	–	हिरण, मृणीक, सारंग, कृष्णसार।
48.	मछली	–	मत्स्य, मीन, शफरी, मकर।
49.	मोक्ष	–	मुक्ति, परधाम, निर्वाण, परमपद।
50.	यमराज	–	धर्मराज, यम, सूर्यपुत्र, काल।
51.	यमुना	–	कृष्णा, यमी, रविजा, रवितनया।
52.	रात	–	रात्रि, रजनी, निशा, निशि।
53.	राजा	–	नृप, भूप, नरेश, सम्राट।
54.	लक्ष्मी	–	कमला, रमा, इन्दिरा, चंचला।
55.	विवाह	–	शादी, गठबंधन, परिणय, ब्याह।
56.	शिव	–	भोलेनाथ, शम्भू, महादेव, नीलकंठ।
57.	सूर्य	–	रवि, भानु, सूरज, दिनेश।
58.	संसार	–	जग, विश्व, जगत, दुनिया।
59.	शरीर	–	देह, तनु, काया, अंग।
60.	स्त्री	–	अबला, नारी, महिला, रमणी।

61.	सिंह	–	शेर, महावीर, केहरि, मृगराज।
62.	समुद्र	–	सागर, उदधि, नदीश, रत्नाकर।
63.	हनुमान	–	महावीर, पवनसुत, मारुति, रामदूत।
64.	शत्रु	–	बैरी, अमित्र, रिपु, दुश्मन।
65.	हिमालय	–	हिमगिरि, हिमाचल, गिरिराज, नगेश।

2. तद्भव और तत्सम शब्द

तत्सम शब्द–ये शब्द संस्कृत के शुद्ध रूप शब्द हैं। जैसे–घृत, आम्र, अग्नि आदि।

तद्भव शब्द–हिंदी भाषा की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से हुई है, अतः संस्कृत भाषा के शब्द जब हिंदी भाषा में अशुद्ध रूप में प्रयुक्त होते हैं, तब उन्हें तद्भव शब्दों की संज्ञा दी जाती है।

तद्भव एवं तत्सम शब्दों की सूची

	तद्भव	तत्सम
1.	अपजस	अपयश
2.	अरपन	अर्पण
3.	आग	अग्नि
4.	अच्छत	अक्षत
5.	उल्लू	उलूक
6.	कान	कर्ण
7.	कौआ	काक
8.	गिद्ध	गृद्ध
9.	अचानक	अकस्मात
10.	आँसू	अश्रु
11.	अन्धेरा	अन्धकार
12.	ईर्षा	ईर्ष्या
13.	कस	कश
14.	कागा	काक
15.	कपूत	कुपुत्र
16.	खीर	क्षीर
17.	गर्दन	ग्रीवा
18.	अजान	अज्ञान
19.	अमिय	अमृत
20.	आँख	अक्षि
21.	ओठ	ओष्ठ
22.	उँगली	अंगुलिका
23.	कुँआ	कूप
24.	खत्री	क्षत्रिय
25.	अमोल	अमूल्य

	तद्भव	तत्सम
26.	अचरज	आश्चर्य
27.	अच्छर	अक्षर
28.	आम	आम्र
29.	आस	आशा
30.	उछाह	उत्साह
31.	कलेश	क्लेश
32.	कबूतर	कपोत
33.	कोयल	कोकिला
34.	घड़ा	घट
35.	चाँदनी	चन्द्रिका
36.	जमुना	यमुना
37.	जुग	युग
38.	तेरह	त्रयोदश
39.	दही	दधि
40.	धरती	धरित्री
41.	नींद	निद्रा
42.	पीठ	पृष्ठ
43.	पुन्य	पुण्य
44.	पाँच	पंच
45.	बूँद	बिन्दु
46.	घर	गृह
47.	जज्ञ	यज्ञ
48.	दोस	दोष
49.	पन	प्रण
50.	नखत	नक्षत्र

3. विलोम या विपरीतार्थक शब्द

विलोम–जो शब्द एक-दूसरे से परस्पर विरोधी या उल्टे अर्थ वाले होते हैं, उन्हें विलोम या विपरीतार्थक शब्द कहते हैं। विलोम शब्दों की सूची निम्नलिखित है–

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
अथ	इति	इष्ट	अनिष्ट
अचल	चल	इधर	उधर
अनुज	अग्रज	ईर्ष्या	प्रेम
अपना	पराया	ईश्वर	अनीश्वर
अमृत	विष	उतार	चढ़ाव
अज्ञान	ज्ञान	उदार	अनुदार
अच्छा	बुरा	उत्तम	अधम
अनुकूल	प्रतिकूल	उजाला	अंधेरा
अल्पायु	दीर्घायु	उत्थान	पतन
अर्थ	व्यर्थ	उदय	अस्त
अधर्म	धर्म	उन्नति	अवनति
आय	व्यय	उष्ण	शीत
आदर	निरादर	उच्च	नीच
आदि	अंत	एक	अनेक
आलस्य	स्फूर्ति	एकता	अनेकता
आश्रित	निराश्रित	ऐश्वर्य	दारिद्रय
आकाश	पाताल	औरत	आदमी

4. अनेकार्थवाची शब्द

परिभाषा–हिंदी में कुछ ऐसे शब्द प्रयोग में आते हैं जिनमें एक शब्द के अनेक अर्थ होते हैं, उन्हें अनेकार्थवाची शब्द कहते हैं। कुछ शब्दों की सूची इस प्रकार है–

अज – बधा, बकरा, दशरथ के पिता।
अरुण – सूर्य, बाल, लाल, सिंदूर, मंजीठ।
अक्ष – रथ, सर्प, ज्ञान, आँख, पहिया, आत्मा, कील, मण्डल, चौसर का पासा।
धाम – घर, शरीर, स्वर्ग, शोभा, देवस्थान।
जीवन – जल, जिंदगी।
निशाचर – राक्षस, भूत, उल्लू, गीदड़।
पद – पैर, छंद का चरण, स्थान, गीत।
गुरु – शिक्षक, भारी, बड़ा, सदुपदेशक।
चरण – पैर, कविता के चरण।
कुल – वंश, घट, जाति।

फल – परिणाम, लाभ, भाले की नोंक, चार फल।

जलज – कमल, चंद्र, मोती, सेवार, शंख।

घनश्याम – काला, बादल, कृष्ण।

गुण – स्वभाव, रस्सी, कौशल, शील, धनुष की डोरी, विशेषता।

काल – मृत्यु, समय, यमराज, अकाल।

अम्बर – वस्त्र, आकाश, एक इत्र।

उत्तर – जवाब, पीछे, दिशा।

अर्थी – धानी, याचक, मतलबी, मुर्दे की खाट।

अक्षर – वर्ण, विष्णु, शिव, धर्म, मोक्ष, गगन, जल, तपस्या, ब्रह्मा।

अतिथि – मेहमान, यात्री, साधु, अपरिचित व्यक्ति।

5. संख्यावाचक गूढ़ अर्थ वाले शब्द

परिभाषा–हिंदी में कुछ ऐसे गूढ़ संख्यावाचक शब्द प्रयुक्त होते हैं जिनका समझना आवश्यक है। ये शब्द निम्नलिखित हैं–

एक – ईश्वर, पृथ्वी, गणेश के दाँत, शुक्राचार्य का नेत्र।

दो तत्त्व – जीव और ब्रह्मा।

दो विद्या – परा, अपरा।

तीन राम – रामचंद्र, बलराम, परशुराम।

तीन गुण – सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण।

तीन काल – भूत, भविष्य, वर्तमान।

तीन ताप – दैहिक, दैविक, भौतिक।

चार वेद – ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, सामवेद।

चार फल – धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष।

चार शत्रु – काम, क्रोध, मद, लोभ।

चार अवस्थाएँ – जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय।

चार दिशाएँ – पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण।

पंचामृत – दूध, दही, घी, शक्कर, शहद।

पाँच पवन – प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान।

पाँच देव – विष्णु, शिव, दुर्गा, गणेश, ब्रह्मा।

पाँच लक्षण – (विद्यार्थी) काकचेष्टा, वकध्यान, श्वाननिद्रा, अल्पाहार, गृहत्याग।

6. ध्वनिसूचक शब्द

कभी-कभी भाषा को आकर्षक बनाने के लिए ऐसे शब्दों का भी प्रयोग करना पड़ता है जिनसे किसी विशेष ध्वनि का बोध होता है। ऐसे कुछ शब्द निम्न प्रकार हैं–

हवा सनसन करती है।

बादल	गरजता है।
बिजली	कड़कती है।
चिड़िया	चहचहाती है।
कौवा	काँव-काँव करता है।
कोयल	कुऊँ, कुऊँ करती है।
घुँघरू	छमछमाछम बजते हैं।
ढोल	ढम-ढम बजता है।
मेंढक	टर्र-टर्र करता है।
कबूतर	गुटर-गूँ करता है।
बंदर	किकीयाता है।
तोता	टें-टें करता है।
भैंस	चुकराती है।
घंटे	टन-टन, टन बजते हैं।
शेर	दहाड़ता है।
चूहा	चूँ-चूँ करता है।
बकरी	में-में करती है।
उल्लू	घुघुआता है।
कुत्ते	भौं-भौं करते हैं।
गाय	रंभाती है।
सियार	हुआँ-हुआँ करता है।
भौंरा	गुंजन करता है।
मक्खी	भिनभिनाती हैं।

7. समरूप भिन्नार्थक शब्द

कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनमें स्वर, मात्रा, व्यंजन आदि का थोड़ा-सा हेर-फेर होता है। वे बोलचाल में लगभग एक समान प्रतीत होते हैं, किंतु उनके अर्थ में भिन्नता आ जाती है। ऐसे शब्दों के कुछ उदाहरण पहले भी दिए जा चुके हैं। कुछ और शब्द (अर्थ सहित) इस प्रकार हैं–

I. मात्र-भेद वाले शब्द

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. अंबर	आकाश	6. आय	आमदनी
अंबार	ढेर	आयु	सम्पूर्ण जीवनावधि
2. अनल	आग	7. गृह	घर
अनिल	वायु	ग्रह	तारा
3. दशा	अवस्था	8. अस्त	छिपना
दिशा	तरफ	अस्तु	अतएव

4. गिरी	बीज का गूदा	9. अपकार	हानि
गिरि	पर्वत	उपकार	सहायता
5. दिन	दिवस	10. व्रत	उपवास
दीन	गरीब	वृत्त	घेरा

II. अनुस्वार, चंद्रबिंदु या हलन्त सहित-रहित

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
11. अंचल	क्षेत्र	14. मास	महीना
अचल	पर्वत	मांस	गोश्त
12. सास	पति या पत्नी की माँ	15. सन्	साल/वर्ष
साँस	श्वास	सन	जूट
13. चौक	आंगन	16. देहात	ग्राम
चौंक	एकाएक उठना	देहान्त	मरण

III. 'य' और 'व' संयोग वाले शब्द

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
17. बचा	शेष	19. भाग	अंश
बच्चा	बालक	भाग्य	नियति
18. बली	बलवान	20. योग	जोड़/संयोग
बल्ली	लंबी-मोटी-गोल लकड़ी	योग्य	काबिल

IV. व्यंजन भेद वाले शब्द

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
21. उपयुक्त	उचित	26. धन	संपत्ति
उपर्युक्त	ऊपर कहा हुआ	घन	बादल
22. उदर	पेट	27. निधन	मृत्यु
उधर	उस ओर	निर्धन	दरिद्र
23. उदार	दानशील	28. परदेश	दूसरा देश
उद्धार	पार लगाना	प्रदेश	प्रांत
24. प्रणाम	नमस्कार	29. शील	विनम्रता
परिमाण	मात्रा	सिल	पत्थर
25. निंदा	बुराई	30. अंबुद	बादल
निद्रा	नींद	अंबुज	कमल

आपने क्या सीखा

1. समान अर्थ रखने वाले शब्द 'पर्यायवाची' कहलाते हैं।
2. संस्कृत के शुद्ध रूप तत्सम तथा अशुद्ध रूप तद्भव हैं।
3. परस्पर विरोधी अर्थ वाले शब्द विलोम कहे जाते हैं।
4. पशु-पक्षियों से संबंधित आवाज वाले शब्द संचार ध्वनि सूचक हैं।
5. एक ही संख्या से भिन्न-भिन्न अर्थ का बोध कराने वाले शब्द 'संख्यावाचक' शब्द कहलाते हैं।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) पर्यायवाची शब्द से आपका क्या आशय है?

(ख) तत्सम शब्द किसे कहते हैं?

(ग) विलोम शब्द से क्या तात्पर्य है?

(घ) ध्वनि सूचक शब्द क्या हैं? कोई दो उदाहरण दीजिए।

2. अनेकार्थवाची शब्द किसे कहते हैं? उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।

3. नीचे दिए पशु/पक्षियों की आवाज को सुमेलित कीजिए–

(क)	(ख)
पशु/पक्षी	आवाज
कौआ	चहचहाती है
गाय	भौंकता है
हाथी	रंभाती है
कुत्ता	चिंघाड़ता है
चिड़िया	काँव-काँव करता है

4. तद्भव तथा तत्सम शब्दों को छाँटकर लिखिए–

घर, रात, घृत, हस्त, पुष्प, लाज।

5. अंतर स्पष्ट करके लिखिए–

अंबर-अंबार, व्रत-वृत्त, आय-आयु, अनल-अनिल।

6. निम्न के अर्थ स्पष्ट कीजिए–

तीन काल, चार दिशाएँ, चार फल, तीन राम, दो तत्त्व।

7. अक्ष तथा पद के दो-दो नाम लिखिए।

26 अपठित गद्यांश
(Unseen Passage)

परिभाषा–'अपठित' का अर्थ होता है 'न पढ़ा हुआ'। अपठित अवतरण हल कराने का उद्देश्य यह देखना होता है कि क्या विद्यार्थी दिए हुए अवतरण के भावों को बिना कुछ कठिन शब्दों का अर्थ जाने भी समझ सकता है? यह गद्य और पद्य दोनों में ही पूछा जाता है। जैसे–रेखांकित शब्द या वाक्य का अर्थ, पूरे गद्यांश या पद्यांश का भावार्थ, आशय, सारांश, अवतरण का शीर्षक तथा अवतरण से संबंधित प्रश्न आदि।

अपठित गद्यांश

अभ्यास–1

जीवन में व्यायाम का विशेष महत्त्व है। पशु और पक्षी भी अपने-अपने ढंग से शारीरिक व्यायाम करते हैं। व्यायाम से **रक्त संचार तीव्र होता है,** भोजन पचता है तथा भूख अच्छी तरह लगती है। व्यायाम करने वाले को कभी थकान नहीं आती। उसका उत्साह कभी मंद नहीं पड़ता। वह निरंतर **प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है।**

प्रश्न–
1. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उचित शीर्षक लिखिए।
2. व्यायाम से क्या लाभ हैं?
3. काले छपे अंशों के अर्थ स्पष्ट कीजिए।
4. उक्त गद्यांश का सारांश लिखिए।

उत्तर–
1. व्यायाम का महत्त्व।
2. व्यायाम से शरीर में रक्त तेज़ी से दौड़ता है, भोजन पचने लगता है और भूख अच्छी तरह लगती है।
3. **रक्त संचार तीव्र होता है :** शरीर में खून तेज़ी से दौड़ने लगता है। **प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है :** लगातार उन्नति करता है।
4. व्यायाम सभी जीवों के लिए महत्त्वपूर्ण है। इससे शरीर की सभी दशाओं में सुधार होता है। यह मनुष्य को स्वस्थ और उत्साही बनाकर उन्नति की ओर ले जाता है।

अभ्यास–2

एक पुराने विद्वान् का कहना है कि विश्वासी मित्र से बड़ी रक्षा होती है। जिस आदमी को ऐसा मित्र मिल जाए मानो उसे **संसार का सबसे बड़ा कोष मिल गया।** विश्वासी मित्र **जीवन की औषधि** है। ऐसा मित्र हमें दोष और त्रुटियों से बचाता है। हमारे सत्य एवं पवित्रता की पुष्टि करता है। जब हम बुरे मार्ग पर पैर रखते हैं तो वह मित्र हमें सचेत करता है और जीवन-निर्वाह में हमें प्रत्येक प्रकार की सहायता देता है। ऐसे ही आदमी से प्रत्येक युवा पुरुष को मित्रता करनी चाहिए।

प्रश्न–
1. उपर्युक्त गद्यांश का सारांश लिखिए।
2. काले छपे अंशों के अर्थ स्पष्ट कीजिए।

अभ्यास–3

संसार में **चरित्र से बढ़कर कोई संपत्ति नहीं है।** धन नष्ट होने पर फिर कमाया जा सकता है किंतु नष्ट चरित्र फिर से प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसलिए भारतीय संस्कृति में चरित्र को महत्त्वपूर्ण माना गया है। चरित्र से ही मनुष्य उन्नति करता है और समाज की दृष्टि में आदर का पात्र बनता है। वह पृथ्वी पर रहते हुए भी देवताओं के समान पूजा जाता है। वह **मर कर भी अमर हो जाता है।**

प्रश्न–
1. संसार में चरित्र से बढ़कर कोई संपत्ति क्यों नहीं है?
2. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।
3. काले छपे अंशों का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

अभ्यास–4

विद्वानों का यह कथन बहुत ही ठीक है कि नम्रता ही स्वतंत्रता की माता है। लोग भ्रमवश अहंकार-वृत्ति को उसकी माता समझ बैठते हैं, पर वह उसकी सौतेली माता है जो उसका सत्यानाश करती है। चाहे यह संबंध ठीक हो या न हो, पर इस बात को सब लोग मानते हैं कि **आत्मा की उन्नति के लिए थोड़ी बहुत मानसिक स्वतंत्रता** परम आवश्यक है। चाहे उस स्वतंत्रता में अभिमान और नम्रता दोनों का मेल हो और चाहे वह नम्रता से ही उत्पन्न हो। यह बात तो निश्चित है कि जो **मनुष्य मर्यादापूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहते हैं,** उनके लिए वह गुण अनिवार्य है जिससे आत्मनिर्भरता आती है और जिससे पैरों के बल खड़ा होना आता है।

प्रश्न– 1. उपर्युक्त गद्यांश का सारांश लिखिए।

2. काले छपे अंशों के अर्थ स्पष्ट कीजिए।

अभ्यास–5

दहेज प्रथा हमारे देश में फैली कुप्रथाओं में सबसे भयंकर है। हमारे देश में अनेक कन्याएँ इस कुप्रथा के कारण **अविवाहित रह जाती हैं।** प्रतिवर्ष सैंकड़ों बहुएँ इसी के कारण **काल के गाल में समा जाती हैं।** इस कुप्रथा को दूर करने के लिए अनेक उपाय किए जा रहे हैं किंतु दहेज का दानव रूप तो बदलता रहा है, **मरा आज तक नहीं।** देवता नहीं कब तक हमारे समाज का रक्त पीता रहेगा।

प्रश्न– 1. दहेज-प्रथा के बुरे परिणामों का उल्लेख कीजिए।

2. काले छपे अंशों के अर्थ स्पष्ट कीजिए।

3. गद्यांश के लिए उचित शीर्षक लिखिए।

अभ्यास–6

हमारे देश में जो शासन प्रणाली है उसे प्रजातंत्र या लोकतंत्र कहते हैं। इसमें सर्वोच्च शक्ति जनता के हाथ में रहती है। जनता चुनाव के माध्यम से अपने प्रतिनिधियों को चुनती है। ये चुने हुए प्रतिनिधि ही जनता के लिए कानून बनाते और उन्हें लागू करते हैं। ये चुनाव प्रति पाँचवें वर्ष होते हैं। इस प्रकार जनता को अपने प्रतिनिधियों के विषय में पुनः निर्णय करने का अवसर मिलता है। इस प्रकार आवश्यकता होने पर सरकार तो बदल जाती है पर हिंसा या मारकाट नहीं होती।

प्रश्न– 1. हमारे देश में किस प्रकार की शासन प्रणाली है?

2. हमारे देश में चुनाव कितने वर्ष बाद होते हैं?

3. उक्त गद्यांश का सारांश लिखिए।

4. गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

अपठित पद्यांश

अभ्यास–1

वनिता की ममता न हुई, सुत का न मुझे कुछ छोह हुआ।
ख्याति, सुया, सम्मान, विभव का, त्यों ही कभी न मोह हुआ।।
जीवन की क्या चहल-पहल है, इसे न मैंने पहचाना।
सेनापति के एक इशारे पर, मिटना केवल जाना।।

प्रश्न– 1. इस कविता में सैनिक के क्या-क्या कर्त्तव्य बताए गए हैं?

2. उपर्युक्त कविता का शीर्षक बताइए।

3. अंतिम दो पंक्तियों का भावार्थ लिखिए।

उत्तर– 1. इस कविता में बताया गया है कि देश-प्रेम के समक्ष सिपाही अपनी स्त्री, पुत्र, ख्याति, यश, सांसारिक सुख-सब कुछ ठुकराकर सेनापति के एक इशारे पर मर मिटने के लिए तैयार रहता है।

2. **शीर्षक–**सिपाही।

3. **भावार्थ–**सैनिक में देश-प्रेम की भावना इतनी बड़ी होती है कि उसके समक्ष वह अपनी सुख-सुविधा, मनोरंजन सबको त्याग देता है। अपने सेनापति के आदेश पर मर मिटने की उसमें लगन और उत्साह होता है।

अभ्यास–2

धारा से विदा यामिनी हो रही,
गगन पर उषा की सवारी चली।
भाल चमका क्षितिज का नई ज्योति,
से मुस्कराती मधुप से कुमारी कली।।
डूबने प्रातः का भी सितारा चला,
शोक में इन्द्र के शर्वरी रो पड़ी।
तारिका का कलेजा दहलने लगा,
भूमि पर चू पड़ी ओस की बन लड़ी।

प्रश्न– 1. उपर्युक्त पद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।
2. इस पद्यांश का भावार्थ लिखिए।

अभ्यास–3

तुम हो धरती के पुत्र न हिम्मत हारो।
श्रम की पूँजी से अपना काज सँवारो।।
श्रम की सीपी में ही वैभव पलता है।
तब स्वाभिमान का दीप स्वयं जलता है।
मिट जाता है सब दैन्य स्वयं ही क्षण में।
छा जाती है नव दीप्ति धारा के कण में।
जागो, जागो ! श्रम से नाता जोड़ो।
पथ चुनो कर्म का, अलग भाव तुम छोड़ो।।

प्रश्न– 1. उपर्युक्त कविता का भावार्थ लिखिए।
2. उचित शीर्षक दीजिए।

अभ्यास–4

भूगोल का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला स्थल कहाँ है?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगा-जल कहाँ है?
संपूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?
उसका कि जो कृषि-भूमि है, वह कौन है? भारतवर्ष है।

प्रश्न– 1. उपर्युक्त पद्य का आशय स्पष्ट कीजिए।
2. प्रथम पंक्ति का अर्थ लिखिए।
3. देश-प्रेम संबंधी कविता की कोई चार पंक्तियाँ अपनी स्मृति से लिखिए।

अभ्यास–5

शिशु तेरी अनुपम छवि निहार।
मिल जाता हमको स्वर्ग द्वार।।
नभ में मयंक लगता रुचिकर।
सरवर में विकसित कमल सुघर।।

उपवन में है गुलाब सुंदर।
पर माँ की गोदी में इनसे
बढ़ कर तेरी छवि है अपार।।

प्रश्न– 1. उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक लिखिए।
2. कवि ने शिशु को किन-किन वस्तुओं से सुंदर बताया है?
3. कविता का भावार्थ बताइए।

अभ्यास–6

विचार लो कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी,
मरो, परंतु यों मरो कि याद जो करें सभी।
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे वृथा जिए,
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए।।
यही पशु प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरें।

प्रश्न– 1. कवि किस प्रकार की मृत्यु को अच्छा समझता है?
2. कवि ने किस बात को पशु प्रवृत्ति कहा है?
3. पंक्तियों के द्वारा कविता ने हमें क्या उपदेश दिया है?
4. इस कविता का आशय अपने शब्दों में लिखिए।

आपने क्या सीखा

1. अपठित का शाब्दिक अर्थ है–'न पढ़ा हुआ'।
2. अपठित का सारांश एक तिहाई भाग में देना चाहिए।

अभ्यास

1. निम्नलिखित गद्यांश का सारांश एवं शीर्षक लिखिए–

शिक्षा और समाज का संबंध अत्यधिक घनिष्ठ है। शिक्षा समाज का दर्पण है। जिस प्रकार की शिक्षा विद्यालयों में दी जाएगी, समाज भी वैसा ही बन जाएगा। उच्च जीवन मूल्यों वाली शिक्षा से समाज उन्नति की राह पर बढ़ता है अन्यथा वह अवनति तथा भ्रष्टाचार के गहरे गर्त में गिरता चला जाएगा।

2. कविता का उचित शीर्षक दीजिए–

चमक उठी सन् सत्तावन में,
वह तलवार पुरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुख,
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

27 मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ
(Idioms and Proverbs)

मुहावरे

मुहावरे का अर्थ–'मुहावरे' शब्द का साधारण अर्थ 'बातचीत या अभ्यास' है। मूलरूप में यह शब्द अरबी भाषा का है। किंतु आजकल कोई ऐसा वाक्य या वाक्यांश मुहावरा कहा जाता है जिसके वास्तविक अर्थ को न लेकर किसी विलक्षण या विशेष अर्थ को लेते हैं।

मुहावरे की उत्पत्ति–किसी बात को संक्षेप में या कलात्मक रूप से कहने के लिए ही भाषा में मुहावरे का प्रयोग किया जाता है। इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए मुहावरे का जन्म हुआ।

महत्त्व–किसी भी भाषा के विकास के लिए मुहावरों का प्रयोग बहुत आवश्यक है। बिना मुहावरे के प्रयोग के भाषा निर्जीव अथवा कमज़ोर रह जाती है एवं मुहावरों के प्रयोग से भाषा सजीव बनती है।

लोकोक्तियाँ या कहावतें

सामान्य ज्ञान–भाषा के सौंदर्य को बढ़ाने के लिए जिस प्रकार से मुहावरों का प्रयोग होता है उसी प्रकार कहावतों का भी प्रयोग होता है। मुहावरे एवं कहावतें दोनों लगभग एक से होते हैं, किंतु प्रयोग की दृष्टि से उनमें कुछ भेद होता है।

मुहावरों एवं कहावतों में अंतर

मुहावरा वाक्य का एक अंश होता है, पूरा वाक्य नहीं; जबकि लोकोक्ति या कहावत अपने आप में एक पूर्ण वाक्य होता है। यह स्वतंत्र रूप से प्रयोग में लाया जा सकता है, जबकि मुहावरे को किसी वाक्य में प्रयोग करने की आवश्यकता पड़ती है।

कहावत से किसी घटना का संबंध होता है। किसी पौराणिक, ऐतिहासिक या धार्मिक अथवा कभी-कभी असाधारण घटना से संबंधित कहावतें बन जाया करती हैं।

कहावतों का महत्त्व–कहावतों के प्रयोग से भाषा में चुस्ती व ओज आता है। शैली अधिक प्रभावशाली एवं आकर्षक बन जाती है। विशेष रूप से किसी को उपदेश देने, किसी पर व्यंग्य करने अथवा उलाहना देने के लिए कहावतों का प्रयोग बहुत सटीक रहता है।

कुछ मुहावरों के अर्थ एवं उनके प्रयोग

1. **अँगूठा दिखाना**–इंकार करना = रमेश ने मुझे रुपए देने का वादा किया था लेकिन समय पड़ने पर अँगूठा दिखा दिया।
2. **अंधे की लकड़ी**–एकमात्र सहारा = श्रवण कुमार अपने माता-पिता के लिए अंधे की लकड़ी थे।
3. **अंगारे उगलना**–अधिक क्रोध करना = मुझ पर अंगारे क्यों उगलते हो, मैंने आपका क्या बिगाड़ा है?
4. **अक्ल पर पत्थर पड़ना**–समझ जाती रहना = गुरु जी का कहना न मानकर मैंने अच्छा नहीं किया, उस समय मेरी अक्ल पर पत्थर पड़ गए थे।
5. **घी के दिए जलाना**–खुशियाँ मनाना = रामचन्द्र जी के वन से लौटने पर अयोध्या में घी के दीपक जलाए गए।
6. **घाव पर नमक छिड़कना**–अधिक कष्ट पहुँचाना = बीमार व्यक्ति को जली-कटी सुनाना घाव पर नमक छिड़कने के समान है।
7. **गड़े मुर्दे उखाड़ना**–पुरानी बातें दोहराना = मेरे सामने गड़े मुर्दे उखाड़ने से कोई लाभ नहीं होगा।

8. **गागर में सागर भरना**–थोड़े शब्दों में अधिक कहना = कवि बिहारी के दोहों में गागर में सागर भरा है।
9. **गला भर आना**–दु:खी होना = पुत्री को दुखी देखकर माता-पिता का गला भर आया।
10. **खून खौलना**–क्रोध में आ जाना = अपने दुश्मन को देखकर राम का खून खौलने लगा।
11. **कोल्हू का बैल**–अत्यन्त परिश्रम करने वाला = इस युग में कर्मचारी कोल्हू का बैल हैं।
12. **कलेजे पर साँप लोटना**–ईर्ष्या से जलना = उसकी पदोन्नति सुनकर तुम्हारे कलेजे पर साँप क्यों लोट गए?
13. **ऊँट के मुँह में जीरा**–थोड़ी मात्र में कोई वस्तु मिलना = बहुत बड़ी योजना के लिए दो हजार रुपए तो ऊँट के मुँह में जीरा हैं।
14. **उल्टी गंगा बहाना**–उल्टा कार्य करना = पुत्र द्वारा पिता को आज्ञा देना उल्टी गंगा बहाना है।
15. **दाँत खट्टे करना**–हराना = आजाद हिंद फौजों ने अंग्रेज़ों के दाँत खट्टे कर दिए।
16. **तूती बोलना**–धाक जमना = सन् 1984 के चुनाव के पश्चात् विकास कार्यों में भारत की तूती बोल रही है।
17. **टेढ़ी खीर होना**–मुश्किल होना = बिना परिश्रम के परीक्षा उत्तीर्ण करना जरा टेढ़ी खीर है।
18. **जान पर खेलना**–वीरतापूर्वक मरना = भारत-चीन के युद्ध में अनेकों सैनिक जान पर खेल गए।
19. **अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना**–स्वयं अपनी प्रशंसा करना = अच्छे आदमियों को अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना शोभा नहीं देता।
20. **अपने पैरों पर खड़ा होना**–स्वावलम्बी होना = युवकों को अपने पैरों पर खड़े होने पर ही विवाह करना चाहिए।
21. **अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना**–अपना ही अहित करना = मेरे सुझाव के अनुसार कार्य नहीं करोगे तो अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारोगे।
22. **अक्ल के दुश्मन**–मूर्ख = मोहन तुम क्यों नहीं मेरी बात मानते हो, लगता है आजकल अक्ल के दुश्मन हो गए हो।
23. **अपना उल्लू सीधा करना**–मतलब निकालना = आजकल के नेता अपना उल्लू सीधा करने के लिए ही छात्रों को भड़काते हैं।
24. **अक्ल के घोड़े दौड़ाना**–दूर तक सोचना = अक्ल के घोड़े दौड़ाओ, हो सकता है पहेली तुम्हारी समझ में आ जाए।
25. **आसमान टूट पड़ना**–अत्यधिक संकट में पड़ना = पिता की मृत्यु से मेरे परिवार पर आसमान टूट पड़ा।
26. **आकाश के तारे तोड़ना**–बहुत कठिन कार्य करना = बाजार से सब्ज़ी लाकर इस तरह गुस्सा दिखा रहे हो मानो आकाश से तारे तोड़कर लाए हो।
27. **आस्तीन का साँप होना**–मित्र होकर शत्रुता करना = राम ने तुमको अपने यहाँ पाला-पोसा और बड़ा किया, पर तुम तो आस्तीन के साँप ही निकले।
28. **आड़े हाथों लेना**–खरी-खोटी सुनाना = विलम्ब से आने के कारण रामू की मालकिन ने उसे आड़े हाथों लिया।
29. **आँखों का तारा**–बहुत प्यारा होना = बालक अपनी माँ की आँखों का तारा होता है।
30. **आँखें दिखाना**–धमकाना, डराना = बालक आँख दिखाते ही ठीक काम करने लगते हैं।
31. **आँखों में धूल झोंकना**–धोखा देना = राम ने बड़े-बड़े लोगों की आँखों में धूल झोक दी है।
32. **आँखें पथरा जाना**–प्रतीक्षा करते-करते थक जाना = मेरी तो आँखें ही पथरा गयीं मगर तुम नज़र न आए।
33. **आँखों के आगे अंधेरा छा जाना**–कुछ न सूझना = समाचार पत्र में राम ने जैसे ही अपने घर में चोरी का समाचार पढ़ा उसकी आँखें के सामने अंधेरा छा गया।
34. **ईद का चाँद होना**–बहुत दिन बाद दिखाई देना = आओ भाई रहीम ! तुम तो ईद का चाँद हो गए।

35. **चिकना घड़ा होना**–निर्लज्ज होना = तुम पर कोई असर नहीं होता, निरे चिकने घड़े हो।

36. **चिराग तले अंधेरा होना**–पास की वस्तु न दिखना = कोतवाली के सामने की दुकान में चोरी हो जाने पर लोगों ने कहा, चिराग तले अंधेरा।

37. **छक्के छुड़ाना**–पराजित करना = भारतीय सेना ने युद्ध में पाकिस्तानी सेना के छक्के छुड़ा दिए।

38. **छिन्न-भिन्न होना**–बिखर जाना = सूर्य के आते ही बादल छिन्न-भिन्न हो गए।

39. **दाँत पीसना**–क्रोधित होना = नौकर से कोई गलती हुई कि पिताजी ने दाँत पीसना शुरू कर दिया।

40. **नौ दो ग्यारह होना**–भाग जाना = पुलिस को देखते ही चोर नौ दो ग्यारह हो गए।

41. **फूला न समाना**–बहुत प्रसन्न होना = प्रथम श्रेणी आ जाने से नीरज फूला नहीं समा रहा है।

42. **पत्थर की लकीर**–पक्की बात = महाराजा हरिश्चंद्र की प्रत्येक बात पत्थर की लकीर थी।

43. **मुँह में पानी भर आना**–जी ललचाना = रसगुल्ले देखकर मोहन के मुँह में पानी भर आया।

44. **लोहे के चने चबाना**–अत्यंत कठिन कार्य करना = देश को स्वतंत्र कराने में देशभक्तों को लोहे के चने चबाने पड़े।

45. **लकीर का फकीर होना**–पुरानी प्रथा पर चलना = भारत के अधिकांश व्यक्ति लकीर के फकीर हैं।

46. **लोहा लेना**–मुकाबला करना = भारतीय वीरों ने विदेशी शत्रुओं से अनेक बार लोहा लिया है।

47. **सिर मुंडाते ही ओले पड़ना**–प्रारंभ में ही कठिनाई आना = उसने अपनी दुकान कल ही खोली थी, आज उसमें चोरी हो गई। उसके तो सिर मुंडाते ही ओले पड़ गए।

48. **रंग में भंग होना**–खुशी में रंज होना = पुलिस के प्रवेश करते ही रंग में भंग हो गया और सभी नौ दो ग्यारह हो गए।

49. **सफेद झूठ**–शत-प्रतिशत झूठ = यह सफेद झूठ है कि मैं कुछ छिपा रहा हूँ।

50. **सिर पीटना**–शोक में रोना = सिर पीटने से क्या फायदा, जो हुआ सो हुआ।

51. **हाथ-पाँव फूल जाना**–भय और शोक से घबरा जाना = हथियार लिए लुटेरों को देखकर मेरे तो हाथ-पाँव ही फूल गए।

52. **पीठ दिखाना**–हार मानना = सन् 1965 के युद्ध में पाक सेना पीठ दिखा कर भाग खड़ी हुई।

53. **पापड़ बेलना**–कष्ट से जीवन बिताना = गुरुजनों की बात न मानने के कारण ही उसे अब तक पापड़ बेलने पड़ रहे हैं।

54. **तिल का ताड़ बनाना**–छोटी बातों को बढ़ा देना = मैं समझ रहा हूँ कि तुम तिल का ताड़ बनाकर झगड़ा कर रहे हो।

55. **दिन में तारे दिखाना**–किसी को इतना सताना कि वह घबरा जाए = यदि कोई बिना कारण हमें छेड़ेगा तो हम भी उसे दिन में तारे दिखा देंगे।

56. **दूध का दूध और पानी का पानी**–ठीक-ठीक न्याय करना = छात्रों के बीच झगड़ा चल रहा था। अध्यापक ने उनके बीच आकर दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया।

57. **नमक मिर्च मिलाना**–बात को बढ़ा - चढ़ाकर कहना = राम को नमक मिर्च लगाकर कहने की आदत है।

58. **नाक में दम करना**–परेशान करना = तुमने नाक में दम कर दिया है। पहले तुम्हारा काम करके तुमसे पिंड छुड़ा लें।

59. **नाक पर गुस्सा**–जल्द क्रोध में आना = शांत रहो, गुस्सा तो तुम्हारी नाक पर है।

60. **पाँचों अंगुली घी में होना**–लाभ ही लाभ होना = कांग्रेस सरकार के नेताओं की पाँचों अंगुली घी में हैं।

कुछ लोकोक्तियों के अर्थ एवं उनके प्रयोग

1. **अन्धेर नगरी चौपट राजा, टका सेर भाजी टका सेर खाजा**–अनुभवहीन मालिक के लिए सभी एक समान ही होते हैं = रामप्रसाद जब तक ग्राम प्रधान रहे तब तक यही प्रचलित था कि अंधेर नगरी चौपट राजा, टका सेर भाजी टका सेर खाजा।

2. **अधजल गगरी छलकत जाए**–साधारण आदमी का इतराना = राम को इतराते देखकर मोहन ने कहा कि तुम्हारी दशा अधजल गगरी छलकत जाए वाली है।

3. **अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गयी खेत**–मौका चूकने पर क्या पश्चाताप करना = पूरे वर्ष भर राजेश पढ़ाई से भागता रहा। अब अनुत्तीर्ण होने पर रोना आ रहा है। ठीक ही कहा गया है कि अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।

4. **आँख के अंधे, नाम नयनसुख**–गुण के विपरीत नाम का होना = नाम लखपति है और पास में कौड़ी नहीं है। सच कहा गया है कि आँख के अंधे, नाम नयनसुख।

5. **आम के आम गुठली के दाम**–दोहरा मुनाफा लेना = रामू ने साल भर किताब को पढ़कर फिर उसी दाम पर बेचकर आम के आम गुठली के दाम वाली बात को चरितार्थ कर दिया।

6. **ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डर**–संकट सहने को तैयार होने पर डर क्या = इस दूरस्थ स्थान पर जब नौकरी कर ली तो अब तो मानना ही पड़ेगा कि ओखली में सिर दिया तो मूसलों का क्या डर।

7. **उल्टा चोर कोतवाल को डांटे**–गलती करके भी निर्दोष को डाँटना = रामवतार की स्वयं की गलती है परंतु वह गिरिजा को दोषी बनाकर डांट रहे हैं। सच है उल्टा चोर कोतवाल को डांटे।

8. **ऊँची दुकान फीका पकवान**–आडम्बर से काम नहीं चल सकता = गृहस्थी स्टोर की तो बड़ी प्रशंसा सुनी थी परंतु यहाँ का सामान लेकर मैं समझ गया हूँ कि ऊँची दुकान फीका पकवान वाली बात है।

9. **एक अनार सौ बीमार**–एक वस्तु को चाहने वाले अनेक हों = विषयाध्यापक के पास एक पुस्तक है और माँगने वाले छात्र दर्जन भर। यह तो वही हुआ कि एक अनार सौ बीमार।

10. **एक तो करेला दूसरे नीम चढ़ा**–बुरा तो था ही और बुरी संगत भी रखता था = रमेश गाँव में जुआ खेलता ही था, शहर में आकर शराब भी पीने लगा। सच है एक तो करेला दूसरे नीम चढ़ा।

11. **ओछे की प्रीति बालू की भीति**–तुच्छ लोगों का प्रेम क्षणिक होता है = रामू के पास संयम और उच्च विचार नहीं हैं। उसके संबंध में मेरी मान्यता है कि ओछे की प्रीति बालू की भीति।

12. **कहे खेत की सुने खलिहान की**–किसी बात पर ध्यान न देना = मुन्ना से कुछ भी कहने से कोई फायदा नहीं है। वह तो ऐसा लड़का है कि कहे खेत की सुने खलिहान की।

13. **कोठी वाला रोए छप्पर वाला सोए**–धनवान को गरीब से अधिक चिंता रहती है = मोहन अपने छप्पर में रात भर निश्चिन्त होकर सोता है और पड़ोसी बंदूक लेकर अपने महल की रात भर रखवाली करता है। ठीक ही कहा गया है कि कोठी वाला रोए छप्पर वाला सोए।

14. **खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है**–एक को देखकर दूसरा भी उसी प्रकार नकल करता है = रामू की दाढ़ी को देखकर उसके सभी साथी दाढ़ी रखने लगे हैं। वही कहावत हुई कि–खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है।

15. **खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे**–लज्जावश क्रोधित होना = नेताजी चुनाव न जीतने पर अनायास ही दूसरों पर आग बबूला हो रहे हैं। ठीक ही कहा गया है–खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे।

16. **घर का भेदी लंका ढावे**–आपस की फूट से हानि होती है = रावण को विभीषण ने ही तो उसका असली भेद बताकर मरवाया। कहावत भी तो है–घर का भेदी लंका ढावे।

17. **चोर की दाढ़ी में तिनका**–दोषी अपना दोष किसी तरह न किसी प्रकट कर देता है = पुलिस को देखकर प्रमोद भागने लगा क्योंकि चोर की दाढ़ी में तिनका होता है।

18. **नाच न जाने आंगन टेढ़ा**–दूसरों को दोषी बताना = राधा जब ठीक से सिलाई नहीं कर सकी तो मशीन को दोष देने लगी। मैंने कहा नाच न जाने आंगन टेढ़ा।

19. **आसमान से गिरा खजूर में अटका**–बड़े संकट से निकलकर छोटे संकट में आ पड़ना।

20. **छुछून्दर के सिर पर चमेली का तेल**–अयोग्य व्यक्ति को सम्मानजनक पद मिलना।

21. **धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का**–किसी काम का न होना।

22. **बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीख**–कीमती वस्तु अनायास ही मिल जाती है।

23. **पराधीन सपनेहुँ सुख नाहिं**–गुलामी (परतंत्रता) में सुख नहीं मिलता।

24. **रहिमन धागा प्रेम का मत तोरो चटकाय**–प्रेम संबंध नहीं तोड़ना चाहिए अन्यथा जुड़ने पर कोई ना कोई गाँठ अवश्य पड़ जाती है।

25. **बसै बुराई जासु तन ताहि को सनमान**–आजकल सीधे-साधे लोगों की तुलना में दुष्टों, बदमाशों और गुंडों का ही सम्मान होता है।

आपने क्या सीखा

1. मुहावरे का शाब्दिक अर्थ है–बातचीत या अभ्यास।
2. मुख्यत: मुहावरा अरबी भाषा का शब्द है।
3. कहावत अपने आप में एक पूर्ण वाक्य होता है।

अभ्यास

1. मुहावरे से आपका क्या आशय है?

2. नीचे दिए मुहावरों के अर्थों में से उचित विकल्प चुनिए–

(क) कान का कच्चा–
(i) बहरा ◯ (ii) बात न पचा पाना ◯ (iii) कम सुनने वाला ◯

(ख) घी के दिए जलाना–
(i) खुशियाँ मनाना ◯ (ii) प्रकाश होना ◯ (iii) जलना ◯

(ग) अँगूठा दिखाना–
(i) धोखा देना ◯ (ii) अपमान करना ◯ (iii) इनमें से कोई नहीं ◯

(घ) गागर में सागर भरना–
(i) पानी साफ भरना ◯ (ii) थोड़े में अधिक कहना ◯ (iii) गगरी उठाना ◯

3. उचित मुहावरे का प्रयोग कीजिए–

(क) भाग जाना (ख) इन्कार करना (ग) हक जमाना
(घ) क्रोध में आना (ङ) पराजित करना

4. लोकोक्ति और मुहावरे में क्या अंतर है?

5. कोई दो मुहावरे तथा दो कहावतें पाठ से छाँटकर लिखिए।

28 पत्र-लेखन (Letter-Writing)

पत्र लिखना भी एक विशिष्ट कला है। जिस बात को हम प्रत्यक्ष रूप से कहने में संकोच करते हैं, उसे हम पत्र द्वारा नि:संकोच कह सकते हैं।

छात्रों को हर प्रकार के पत्र लिखने की पूरी जानकारी होनी चाहिए, जिससे वे अपने मित्रों, प्रियजनों तथा पुस्तक-विक्रेताओं आदि को अपनी भावनाओं तथा समस्याओं से अवगत करा सकें।

पत्रों के भेद

पत्रों के भेद निम्नलिखित हैं–

1. व्यक्तिगत पत्र
2. प्रार्थना पत्र
3. सरकारी पत्र
4. व्यावसायिक पत्र

इनमें से व्यक्तिगत अथवा निजी पत्र भी अनेक प्रकार के बताए गए हैं–

(क) पारिवारिक पत्र
(ख) निमंत्रण पत्र
(ग) शोक पत्र
(घ) बधाई पत्र
(ङ) मित्रों/संबंधियों को पत्र

ध्यान देने योग्य बातें–

पत्र लिखते समय निम्न बातों पर ध्यान देना आवश्यक है–

1. पत्र लिखते समय उसमें स्वाभाविकता होनी चाहिए।
2. पत्र की भाषा विषय के अनुकूल हो।
3. पत्र अति स्पष्ट तथा सरल भाषा में होना चाहिए।
4. पत्र में विचारों की क्रमबद्धता का होना आवश्यक है।
5. पत्र लिखने में शैली सरल होने के साथ ही साथ उसमें आकर्षण का गुण भी होना श्रेष्ठ माना जाता है।
6. पत्र लिखते समय मर्यादा का भी ध्यान रखना चाहिए।
7. पत्र का प्रारंभ तथा अंत सुखद होना चाहिए।
8. पत्र में अपना व पाने वाले का पता और दूरभाष नंबर स्पष्ट करके लिखना चाहिए।

पत्र के अंग

नवीन प्रथा के अनुसार पत्र के सात अंग होते हैं–

1. **स्थान एवं दिनांक**–पत्र के सबसे ऊपर दाईं तरफ भेजने वाले के स्थान का नाम और उसके ठीक नीचे दिनांक लिखते हैं।
2. **संबोधन**–जिसको पत्र लिखते हैं उसको यथाश्रेणी आदर, प्रेम अथवा आशीर्वाद सूचक शब्द तीसरी पंक्ति में बायीं तरफ लिखते हैं।

3. **अभिवादन**–चौथी पंक्ति में लंबाई का तिहाई भाग छोड़कर आदर, प्रेम अथवा आशीर्वाद सूचक शब्दों के अनुसार अभिवादन लिखते हैं।

4. **विषय**–यह पत्र का मुख्य भाग है। इसमें पत्र भेजने वाला अपने हृदयगत भावों को लिखता है।

5. **शिष्टाचार के शब्द**–जिस पंक्ति में पत्र का विषय समाप्त हो जाता है, उसमें पंक्ति की दाईं तरफ श्रेणी के अनुसार शब्द लिखते हैं।

6. **हस्ताक्षर**–शिष्टाचार के शब्दों के ठीक नीचे भेजने वाला अपना नाम व पता लिखता है।

7. **पता**–कार्ड पर टिकट के नीचे पाने वाले का पूरा पता लिखते हैं।

पत्र के अनुसार संबोधन तथा शिष्टाचार के शब्द

पद	संबोधन के शब्द	अभिवादन	शिष्टाचार के शब्द
माता-पिता, गुरुजनों तथा बड़ों को	श्रद्धेय, श्रीमान्, पूजनीय, श्रीयुत्	सादर चरण स्पर्श, सादर प्रणाम	आपका आज्ञाकारी, आपका स्नेहाकांक्षी
अधिकारी आदि को	श्रीयुत्, महोदय, श्रीमान्, प्रिय, प्रियवर	सादर नमस्कार	आपका, प्रार्थी, कृपापात्र
अपने से छोटों को, बराबर वाले को	प्रिय मित्र, प्रिय बंधु	सप्रेम नमस्कार, चिरायु, आशीर्वाद	भवदीय तुम्हारा शुभचिन्तक

कुछ सामान्य पत्रों के नमूने

1. अपनी भूल के लिए क्षमा याचना करते हुए अपने पिताजी को पत्र लिखिए।

आदरणीय पिताजी,

मसूरी

सादर चरण स्पर्श।

16.7.20___

कल ही आपका पत्र प्राप्त हुआ, आपने प्रश्न किया है कि वार्षिक परीक्षा में मेरे इतने कम अंक आने का क्या कारण है? परीक्षोपयोगी कम वस्तु प्राप्त होने के कारण तथा गलत दोस्तों की संगति से मुझे कम अंक मिले। आपके पत्र ने मुझे सचेत कर दिया है।

कृपया मेरी इस गलती के लिए मुझे क्षमा कीजिए। आशा है, आप मुझे क्षमा कर देंगे। मैं पुनः आपको वचन देता हूँ कि इस बार परीक्षा में शानदार सफलता प्राप्त करूँगा।

आपका आज्ञाकारी पुत्र
रविकांत गुप्ता
VIII A

2. अपने छोटे भाई को पत्र लिखिए तथा उसकी पढ़ाई के बारे में जानकारी माँगिए।

प्रयागराज

प्रिय गौरव,

25.11.20___

चिरंजीवी रहो।

तुम्हारा पत्र मिला। तुमने अर्द्धवार्षिक परीक्षा में जो अंक प्राप्त किए हैं वे संतोषजनक नहीं हैं। अब वार्षिक परीक्षा निकट आ रही है। तुम अपनी पढ़ाई के विषय में पूर्ण जानकारी दो। प्रत्येक विषय में तुम्हारी क्या स्थिति है? कितने अंक पाने की संभावना है, पूरा विवरण दो।

पत्र का उत्तर शीघ्र देना।

तुम्हारा बड़ा भाई
बलराम त्रिपाठी

3. आपके मित्र को छात्रवृत्ति प्राप्त हुई। उसे बधाई-पत्र लिखिए।

दिल्ली

प्रिय मित्र अनुज, 29.8.20___

सस्नेह नमस्कार।

यू0 पी0 बोर्ड की दशम् कक्षा की परिणाम सूची में तुम्हारा नाम छात्रवृत्ति प्राप्त छात्रों में देखकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई। प्रिय मित्र ! मुझे तुमसे यही आशा थी। परीक्षाफल में 70 प्रतिशत अंक प्राप्त करना कोई मामूली बात नहीं है। अपनी इस शानदार सफलता पर मेरी ओर से हार्दिक बधाई स्वीकार करो।

सधन्यवाद।

तुम्हारा शुभचिंतक

हरगोविंद शुक्ला

4. अपने विद्यालय के प्रधानाध्यापक को छुट्टी के लिए आवेदन पत्र लिखिए।

सेवा में,

श्रीमान् प्रधानाध्यापक महोदय,

जी0 आई0 सी0० इण्टर कॉलेज

शाहजहाँपुर

दिनांक 17 सि0 20___

मान्यवर,

निवेदन है कि मेरी बड़ी बहन की शादी 2 सितम्बर, 20___ को मेरठ में होनी तय है। हमारे परिवार के सभी लोग वहाँ पहुँच चुके हैं। कृपया मुझे 19 सितम्बर से 24 सितम्बर तक का छः दिन का अवकाश देने की कृपा करें।

आपकी इस कृपा के लिए आभारी रहूँगा।

आपका आज्ञाकारी

आनन्द प्रकाश मिश्र

कक्षा-VIII 'A'

5. निमंत्रण पत्र अपनों को।

प्रिय मिश्रा जी,

सादर नमस्कार।

हर्ष का विषय यह है कि आपकी प्रिय संस्था का वार्षिकोत्सव 22 अगस्त, 20___ को धूम-धाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री महोदय उत्तर प्रदेश पधार रहे हैं और उन्हीं के हाथों से पारितोषिक वितरण होगा। इस शुभ अवसर पर सम्मिलित होकर उत्सव की शोभा बढ़ाएँ।

आपकी इस कृपा के लिए आभारी रहूँगा।

दिनांक 12.8.20___ भवदीय

अनूप शंकर

6. मैच खेलने के लिए प्रार्थना पत्र।

सेवा में,

श्रीमान् गेम्स मैनेजर

डी0 पी0 इंटर कॉलेज, शाहजहाँपुर

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि हमारे विद्यालय की टीम आपके विद्यालय की टीम से मैच खेलना चाहती है। मैच आपके विद्यालय के मैदान पर होगा तथा निर्णायक भी आप ही होंगे। आपसे अनुरोध है कि मैच खेलने की अनुमति प्रदान करें।

सधन्यवाद।

प्रेमदीपक गुप्ता

दिनांक–27.09.20___

(कैप्टन)

7. पुरस्कार मिलने पर अपनी सहेली को पत्र।

78, करोल बाग, दिल्ली

प्रिय शिखा

12.09.20___

सप्रेम नमस्ते।

कल ही तुम्हारा पत्र मिला। पत्र पढ़कर ज्ञात हुआ कि तुमने राज्य स्तरीय वार्षिक खेलों में श्रेष्ठ खिलाड़ी का पुरस्कार प्राप्त किया है। यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता प्राप्त हुई। साथ ही साथ ईश्वर से कामना करती हूँ कि तुम इसी प्रकार भविष्य में अच्छा प्रदर्शन करती रहो। मुझे विश्वास है कि एक न एक दिन एशियाई खेलों में भी तुम्हें स्वर्ण पदक प्राप्त होगा। शेष सब कुशल है। पत्र की प्रतीक्षा में–

तुम्हारी अभिन्नहृदया

रानी देवी

8. सफाई की व्यवस्था के लिए पत्र।

सेवा में,

श्रीमान् मुख्य नगर स्वास्थ्य अधिकारी

नगर निगम, कानपुर।

महोदय,

निवेदन यह है कि राजेन्द्र नगर में सफाई की व्यवस्था बहुत खराब है। जगह-जगह गंदगी के ढेर लगे हुए हैं तथा नालियों में गंदा पानी रुका हुआ है। गंदगी के कारण इस क्षेत्र के निवासियों में बीमारियाँ फैलने का खतरा भी उत्पन्न हो गया है। अतः श्रीमान् जी से प्रार्थना है कि राजेन्द्र नगर में सफाई की समुचित व्यवस्था कराएँ। आपकी अति कृपा होगी। सधन्यवाद।

प्रार्थीगण–

नरेश, आशीष, सोमपाल, धर्मपाल आदि।

दिनांक–22.09.20___

राजेन्द्र नगर, कानपुर।

अभ्यास

1. दो दिन के अवकाश हेतु प्रधानाचार्य को प्रार्थना-पत्र लिखें।
2. परीक्षा में प्रथम आने पर अपने मित्र को बधाई पत्र लिखें।
3. पुस्तक मँगाने के लिए प्रकाशक को पत्र लिखिए।
4. अपने पिता को धन भेजने हेतु पत्र लिखिए।

29 कहानी-लेखन (Story-Writing)

कहानी की उत्पत्ति कब से हुई, यह तो ठीक से ज्ञात नहीं है। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि मनुष्य के जन्म के साथ ही कहानी का भी जन्म हुआ होगा। कहा जाता है कि जितना पुराना मनुष्य का इतिहास है, कहानी भी उतनी ही पुरानी है।

कहानी के भाग

कहानी के चार प्रमुख भाग होते हैं–

1. कथावस्तु
2. कथोपकथन
3. पात्र
4. उद्देश्य

कहानी लिखने में सावधानियाँ

1. कहानी में कथावस्तु इतनी रोचक हो कि पढ़ने वाले में रुचि पैदा हो।
2. कहानी वातावरण के अनुकूल होनी चाहिए।
3. कहानी के कथोपकथन, छोटे, सरल व सरस होने चाहिएँ।
4. कहानी लिखने का उद्देश्य बच्चों की रुचि के अनुकूल हो।
5. कहानी शिक्षाप्रद होनी चाहिए, जो बच्चों को प्रेरित कर सकें।

कुछ आदर्श कहानियाँ

1. रानी दुर्गावती

कन्नौज के राजा चंदनराय की पुत्री दुर्गावती का विवाह गढ़-मंडल के राजा दलपति शाह के साथ हुआ था। इनके मात्र एक पुत्र नारायण की अवस्था जब तीन वर्ष की थी उसी समय इनके पति दलपति शाह की मृत्यु हो गयी। पुत्र को अबोध समझकर विधवा दुर्गावती अपना राज्य-कार्य स्वयं देखने लगी। मुगल शासकों के विरोध का सामना करने के लिए उन्होंने अपने राज्य में सैन्य संगठन को मजबूत किया।

रानी दुर्गावती के कुशल प्रशासन, प्रजा प्रेम की प्रशंसा मुगल शासक अकबर के दरबार में भी फैली एवं उनके कई दरबारियों ने अकबर के कान भरे कि वे गढ़मंडल पर अधिकार कर लें। उसने अपने एक सरदार आसफ खाँ को चढ़ाई करने का आदेश दे दिया। आक्रमण का समाचार सुनकर रानी दुर्गावती भयभीत न हुई और युद्ध करने का निश्चय किया। अपने आठ हजार अश्वारोहियों को लेकर उसने प्रचण्ड दुर्गा की तरह युद्ध करके आसफ खाँ को पराजित कर दिया। अकबर भी उससे लज्जित हुआ। कुछ दिन बाद पुनः आसफ खाँ सेना सुसज्जित कर गढ़मंडल पर चढ़ गया। इस बार भी रानी के हाथों उसकी पराजय हुई। एक स्त्री के हाथों दो बार पराजित होकर अकबर के सामने वह मुख नहीं दिखाना चाहता था।

रानी को अपराजेय समझकर आसफ खाँ ने कूटनीति से काम लिया। उसने रानी दुर्गावती की सेना में फूट पैदा कर दी और असीमित सेना लेकर पुनः आक्रमण कर दिया। इस बार गम्भीर रूप से उसका पुत्र नारायण घायल हुआ। इस संकट की घड़ी में भी रानी लड़ती रही। दुश्मनों से बचना कठिन समझकर अपनी ही तलवार से उसने अपना सिर काटकर आदर्श क्षत्रणी का कर्त्तव्य पूरा किया। पुत्र के साथ ही इनकी अंतिम क्रिया हुई। भारत के इतिहास में रानी दुर्गावती का नाम आज भी अमर है।

2. कर्त्तव्य-परायणता

एक दिन लेखक बाल कटवाने के लिए जफ़र मियाँ की दुकान पर गया। जफ़र मियाँ स्वयं उन्हें चाय लाकर देते हैं और अपने कार्य पर लग जाते हैं। आरा चलाने वाले दो मज़दूर वहाँ पहले से ही प्रतीक्षारत हैं। लेखक को विश्वास था कि जफ़र

मियाँ उस व्यक्ति की हजामत बनाकर, मज़दूरों से पहले उसके बाल काटेंगे। परन्तु ऐसा नहीं हुआ। उसने हजामत बनाकर एक मज़दूर को बुलाया तथा बाल काटने आंरभ किए। यद्यपि मज़दूर बहुत गंदे थे। उनके बाल रेत और बुरादा से भरे हुए थे। परंतु जफ़र मियाँ पर इनका कोई असर न था। वह अत्यंत प्रेम और लगन से बाल काटते रहे। उनका कार्य कर्त्तव्य भावना से भरा हुआ था।

जफ़र मियाँ की कर्त्तव्य परायणता से लेखक बड़ा प्रभावित होता है तथा कार्य की सराहना करते हुए भाव-विभोर होकर जफ़र मियाँ को अपनी बाँहों में दबोच लेता है। जफर का यह वाक्य लेखक को अति प्रिय लगा–बाबूजी मेरे लिए तो जो इस कुर्सी पर बैठता है वह ही कलेक्टर है।

लेखक अंत में सोचता है कि यदि इस देश के सभी नागरिक जफ़र मियाँ की तरह कर्त्तव्य-परायणता से भरे हों तो राष्ट्र शक्तिशाली तथा महान् हो जाए।

3. मुक्तिमार्ग

मुक्तिमार्ग कहानी में झींगुर तथा बुद्धू के माध्यम से गाँव की समस्याओं का मार्मिक वर्णन किया गया है। झींगुर एक दिन अपने खेत में मटर की फलियाँ तोड़ रहा था। इसी समय बुद्धू अपनी भेड़ें लेकर उधर से जाने लगा। उसकी भेड़ों का झुंड झींगुर के खेत में घुस गया। क्रोध में आकर उसने बुद्धू की कई भेड़ों को मारकर टाँगें तोड़ दीं। इससे बुद्धू बहुत नाराज़ हुआ। उसने बदला लेने की ठान ली।

एक दिन बुद्धू ने झींगुर के ईख के खेत में आग लगा दी और सब कुछ जलकर राख हो गया। सब कुछ नष्ट हो जाने पर झींगुर मजदूरी करके पेट पालने लगा। उसके मन में बुद्धू का विनाश करने की आग जल रही थी। दूसरे गाँव के मुखिया हरिहर के साथ मिलकर उसने बुद्धू को बरबाद करने की योजना बनाई।

एक दिन बुद्धू के भेड़ों के झुंड में झींगुर ने अपनी बछिया बांध दी और हरिहर ने उसे कुछ खिला दिया। बछिया मर गयी और पूरा दोष बुद्धू पर मढ़ा गया। ब्राह्मणों ने बुद्धू को प्रायश्चित रूप में तीन महीने का भिक्षा दंड, सात तीर्थों की यात्रा तथा पाँच सौ ब्राह्मणों को भोजन और पाँच गायों का दान करने को कहा। इसमें बुद्धू का भी सब नष्ट हो गया।

झींगुर और बुद्धू दोनों एक साथ मज़दूरी करने जाते हैं। दिन भर मेहनत करने के बाद दोनों मिलकर रूखा-सूखा भोजन बनाकर खाते हैं। दोनों के मन की मैल दूर हो गयी है। दोनों अपना-अपना अपराध स्वीकार करके सो जाते हैं।

4. सच्ची सिद्धि

गंगा के तट पर एक साधु रहता था। कभी वह अपनी कुटिया में बैठा जप करता तो कभी विविध आसन लगाता तथा अन्य यौगिक साधनाएँ किया करता था। धीरे-धीरे साधु को अपनी साधना पर गर्व होने लगा। वह अपने आगे सभी को तुच्छ समझने लगा।

साधु की कुटिया के सामने एक मल्लाह भी रहता था। चाहे वर्षा हो, चाहे कड़ी धूप हो, चाहे बदन को कंपाने वाली ठंड हो, वह सदैव नाव चलाया करता था। सारे दिन कठिन परिश्रम करके वह अपना और अपने बच्चों का पेट भरता था।

साधु मल्लाह को बड़ी उपेक्षा की दृष्टि से देखता था। वह उसे उपदेश देता था–'अरे मूर्ख ! तू अपना जन्म यों ही व्यर्थ गवां रहा है। न कोई योग करता है, न कोई जप।'

मल्लाह साधु की बात सुनता था और चुप रह जाता था। वह जानता था कि अपनी साधना से साधु ने एक सिद्धि प्राप्त की है जो है जल पर चलने की। कई बार जनसमुदाय के मध्य वह इसका प्रदर्शन कर चुके हैं। लोग उनकी प्रशंसा करते नहीं थकते थे।

एक बार गंगा नदी में भयंकर बाढ़ आ गई। लहरें ऊन-ऊन कर आगे बढ़ने लगीं। चारों ओर तेज़ी से पानी बहने लगा। मल्लाह की झोपड़ी पानी के बहाव में बह गयी। बाल बच्चों को उसने पहले ही एक पेड़ पर बिठा दिया था।

अचानक मल्लाह को साधु की चीखें सुनाई दीं–बचाओ, बचाओ। मल्लाह ने देखा कि साधु डूब रहा है। बड़ी फुर्ती से उसने साधु को डूबने से बचाया और पीठ पर लादकर उसे किनारे लाया।

साधु के पेट और मुँह में पानी भर गया था। बहुत देर तक मल्लाह उसे निकालने का प्रयास करता रहा। कुछ देर बाद उसकी

बेहोशी टूटी और वह उठ गया। अपनी मेहनत सफल होते देख मल्लाह बहुत प्रसन्न हुआ।

साधु को मल्लाह की सारी बातें पता चलीं। मल्लाह ने पूछ ही लिया–'महाराज ! आपको तो जल के ऊपर चलने की सिद्धि प्राप्त है, फिर आप केसे डूबने लगे?''

''अरे ! कैसी तो गज-गज भर ऊँची लहरें तेज़ी से बढ़ती चली आ रही थीं। उनमें मेरी सिद्धि क्या काम आती।''

साधु को पश्चाताप होने लगा कि व्यर्थ अब तक वे मल्लाह को दुत्कारते थे। यदि यह तैरकर उनकी रक्षा न करता तो सिद्धि का अहं कब का प्राण ले चुका होता। उनका कंठ गद्गद हो गया और वे मल्लाह से बोले–''भाई! आज मैं समझ गया कि सच्ची सिद्धि वही है, जिससे हम दूसरों का भला कर पाएँ। सिद्धि का अर्थ भीड़ इकट्ठी करके चमत्कार दिखाना नहीं है। मुझसे बड़े साधक तो तुम हो जो दूसरों का भला करते हो।'' यह कहकर साधु जन-कल्याण का संकल्प लेकर खड़े हो गए और 'हरि ॐ' कहकर लोक सेवा के लिए, पीड़ितों को राह दिखाने के लिए चल पड़े।

5. धनी कौन?

बहुत दिनों की बात है। इब्राहीम नाम का बादशाह वलख में शासन करता था। एक बार उसे धन की जरूरत हुई। वह प्रजा पर कर नहीं लगाना चाहता था क्योंकि बादशाह जानता था कि ऐसा करने से गरीबों को परेशानी होगी।

अत: इब्राहीम ने अपने राज्य में एक घोषणा करायी। वह यह कि बादशाह को राज्य के विकास के लिए कुछ धन चाहिए। जो अमीर हो, अपनी इच्छा से धन देना चाहता हो वह बादशाह के पास चला आए।

दूसरे ही दिन नगर का सबसे धनी व्यक्ति बादशाह के पास आया। उसके हाथ में सोने की अशर्फियों से भरी थैली थी।

'हुजूर ! मेरी यह तुच्छ सेवा स्वीकार कीजिए', बादशाह को झुककर नमस्कार करते हुए, उनके आगे थैली रखते हुए बोला।

बादशाह उस धनी को अच्छी तरह जानता था। वह बहुत धनवान था तथा कंजूस भी था। पैसे को बड़ा संभाल कर रखता था। खर्च करना उसे बहुत बुरा लगता था। उसे धन की बहुत भूख रहती थी।

बादशाह ने एक पल उसे देखा और कहा, ''मैंने तो सिर्फ धनी व्यक्तियों से धन माँगा है।''

''हुजूर गुस्ताखी माफ़ करें। आपकी दुआ से नगर का सबसे बड़ा धनी हूँ।''

''पर मेरी दृष्टि में वह व्यक्ति धनी नहीं हो सकता जो धन को जोड़-जोड़ कर रखता है। मैं तो धनी उसे मानता हूँ जो दूसरों की सेवा में, उपकार में अपने धन को खर्च करता है। वह व्यक्ति जिसकी धन की लालसा समाप्त नहीं हुई, वह धनी कहाँ है? वह व्यक्ति जो धन का प्रयोग न तो स्वयं करता है और न ही किसी को देता है, उसका धन तो बस नष्ट होने के लिए होता है। यदि किसी गरीब को धन की भूख नहीं है, जो उसके पास है वह उसी में खुश है तो मैं उसे धनवान मानता हूँ। वह यदि मुझे एक पाई दे दे, तो मैं उसे ले लूँगा क्योंकि वह मन से धनी है।''

नगर सेठ का सिर लज्जा से झुक गया और अशर्फियों से भरी थैली उठाकर वह चुपचाप चलता बना।

6. मनमानी करने वाला

एक चींटी थी। उसका नाम था–शीलू। उसने रामू के रसोईघर में अपना घर बना लिया था। रामू की माँ बड़ी अच्छी-अच्छी चीजें बनाती थी। रामू को मिठाई बहुत पसंद थी। वह माँ से कभी गुलाब जामुन, तो कभी हलवा बनवाता था। शीलू चुपचाप जाती और थोड़ी चीज मुँह में दबाकर चुपचाप अपने बिल में घुस जाती थी। बिल में उसका एक छोटा बच्चा रहता था। शीलू उसके लिए चीजें ले जाती थी।

चींटी का बच्चा कभी-कभी बड़ी शरारत करता था। उसने अभी चलना सीखा था, जहाँ भी मन होता वह जाने लगता था। शीलू उसकी इस बात से परेशान थी।

एक दिन चींटी के बच्चे ने देखा कि रसोई में आग जल रही है। वह चमक रही थी इसलिए चींटी के बच्चे को अच्छी लग रही थी। उसने सोचा कि इसके पास जाकर देखें। उसने शीलू से कहा–अम्मा इसके पास चलकर देखें।

चींटी बोली–नन्हे ! हम इसके पास नहीं चल सकते। अगर जरा भी इससे छू जाएँगे तो दोनों ही जल जाएँगे। तुम कभी इसके पास नहीं जाना।

बच्चा उस समय तो चुप रह गया, पर जब माँ उसके लिए खाना लेने चली गई तो उसने सोचा माँ तो बेकार में डरती है। मुझे छोटा समझती है, इसलिए जाने नहीं देती। आज तो मैं घूमने जाऊँगा और सबसे पहले इस आग को ही देखूँगा।

वह घर से बड़ी शान से निकला। इधर-उधर घूमता हुआ वह चमचमाती आग को ही देखता रहा। फिर उसका मन हुआ कि आग को छूकर देखे। धीरे से उसने आग को छुआ। उसका पैर झुलस गया। वह कठिनाई से लँगड़ाते हुए घर आया। शाम को चींटी आई, उसने दवा लगाई, पट्टी बाँधी पर कोई फायदा न हुआ। चींटी का बच्चा अब भी लंगड़ाकर चलता है। उसके दोस्त उसे 'लंगड़े मियाँ' कहते हैं। उसे अपना पैर देखकर बहुत दु:ख होता है कि वह माँ की बात मानता, तो लंगड़ा न बनता।

7. एकता का फल

एक जंगल था। उसमें बरगद का एक बड़ा पेड़ था। पेड़ पर एक गिलहरी और एक मैना रहती थी। पेड़ की तलहटी में एक मुर्गी का घर था। तीनों में गहरी मित्रता हो गई। उन्होंने सोचा मिलजुल कर रहना चाहिए, मिलकर सभी को काम करना चाहिए।

एक दिन गिलहरी बोली–'मैना दीदी ! हम तीनों अलग-अलग खाना पकाते हैं, इसमें समय ज्यादा लगता है। क्यों न एक ही साथ सबका खाना बना लिया जाए?'

मैना बोली–'कपड़े भी सब अलग-अलग धोते हैं। उसमें भी समय अधिक लगता है।'

मुर्गी ने कहा–'सभी को अपने बगीचों की अलग-अलग रखवाली करनी पड़ती है। कभी-कभी तो हम तीनों रात भर जागते हैं। उससे भी क्या लाभ है?'

तीनों ने मिलकर तय किया कि गिलहरी खाना बनाएगी, मैना सबके कपड़े धोएगी और मुर्गी बगीचों की रखवाली करेगी।

गिलहरी ने रसोई का सारा काम संभाल लिया। वह फुर्ती से जाती, तरह-तरह की सब्ज़ियाँ और फल तोड़कर लाती। फूली हुई गोल-गोल चपाती बनाती।

मैना सबके कपड़े की गठरी बाँधकर नदी के किनारे ले जाती और कपड़े धोकर लाती।

मुर्गी रानी बगीचे की रखवाली करती। पानी लगाती, निराई, गुड़ाई करती। तरह-तरह के फूल बोती। कुछ दिनों बाद बगीचा फल, फूल तथा सब्ज़ियों से भर गया।

अब तीनों के पास समय भी बचता था। कम मेहनत में उनका अच्छा काम हो जाता था। इससे उनकी शक्ति भी बचती थी। शेष समय में तीनों ही पेड़ के नीचे बैठकर गपशप करती थीं।

एक दिन तीनों बैठी मूँगफलियाँ खा रही थीं। गिलहरी बोली 'हम बहुत समय तक खाली रहते हैं। इस तरह खाली बैठने से क्या फायदा?'

मैना बोली 'अपना काम तो सभी करते हैं। महान् वही है जो दूसरों की भलाई का काम करे।'

तीनों ने सोचा पेड़ के नीचे स्कूल खोला जाए। कलिया कोयल कुहु-कुहु कर सबको यह बात सुना आई। दूसरे ही दिन चिड़िया, चींटी, कोयल आदि के बच्चे पढ़ने आने लगे। मैना, गिलहरी और मुर्गी जल्दी से अपना काम कर लेतीं। दोपहर में बच्चों को पढ़ातीं। धीरे-धीरे सभी बच्चे होशियार हो गए। उनके इस काम से जंगल के सभी पक्षी उन तीनों की प्रशंसा करते हैं। सच है कि जो अपना काम मिल-जुल कर करते हैं, वे सुखी रहते हैं और दूसरों से प्रशंसा पाते हैं।

8. विद्या की शोभा–सदाचार

बात 1948 की है। उस समय ईश्वरचंद्र विद्यासागर की बड़ी प्रसिद्धि थी। वे संस्कृत भाषा के प्रकांड पंडित थे। उनकी ख्याति का कारण केवल उनका ज्ञान ही नहीं था, अपितु सदाचार भी था। वे अपनी विनम्रता, परोपकार, सच्चाई आदि सद्गुणों से सभी के प्रिय बन गए थे। चाहे छोटा हो या बड़ा, अमीर हो या गरीब, निर्धन हो या धनवान–सभी उन्हें स्नेह करते थे, उनका सम्मान करते थे।

एक बार कलकत्ता के संस्कृत कॉलेज में संस्कृत व्याकरण पढ़ाने के लिए एक अध्यापक का स्थान खाली हुआ। स्वाभाविक था कि कॉलेज के प्राचार्य को सबसे पहले ईश्वरचंद्र विद्यासागर का ध्यान आता। उन्होंने ईश्वरचंद्र के पास पत्र भिजवाया। पत्र में उन्होंने आग्रह किया कि वे संस्कृत अध्यापक का पद ग्रहण करें, इससे कॉलेज गौरवांवित होगा।

ईश्वरचंद्र के लिए यह अच्छा अवसर था। इस पद को ग्रहण करने पर उन्हें अच्छा वेतन मिलता। सभी सोच रहे थे कि अब वे संस्कृत कॉलेज में पढ़ाने लगेंगे। परन्तु उन्होंने पत्र पढ़ा, एक क्षण विचार किया और अपनी असहमति लिखकर भेज दी। उन्होंने लिखा कि 'आपको व्याकरण पढ़ाने वाले अध्यापक की आवश्यकता है। मैं सोचता हूँ कि व्याकरण में मैं इस नगर का योग्यतम व्यक्ति नहीं हूँ। इस विषय में मुझ से अधिक विद्वान् मेरे मित्र श्री तारक वाचस्पति हैं। यदि उनकी नियुक्ति कर सकें तो मुझे खुशी होगी।'

कॉलेज के प्रबंधक के पास ईश्वरचंद्र का पत्र पहुँचा। उसे पढ़कर उनके प्रति प्रबंधक का सिर श्रद्धा से झुक गया। वे सोचने लगे कि यह व्यक्ति कितना महान् है? इसमें अपने ज्ञान का जरा भी अहं नहीं है। न ही इसे झूठा सम्मान या धन पाने का प्रलोभन है। ईश्वरचंद्र के प्रस्ताव को कॉलेज की प्रबंध समिति ने खुशी से मान लिया। इसकी सूचना उन्होंने ईश्वरचंद्र को भी दे दी।

मित्र की नियुक्ति का समाचार पाकर ईश्वरचंद्र को बहुत प्रसन्नता हुई। वे तुरंत मित्र को यह शुभ समाचार सुनाने उनके घर दौड़े गए। वाचस्पति महोदय को अपनी नियुक्ति का समाचार पाकर बड़ा आश्चर्य हुआ, होना भी चाहिए था क्योंकि उन्होंने इस पद के लिए कोई आवेदन पत्र नहीं दिया था। ईश्वरचंद्र ने उन्हें सारी घटना सुनाई। वे उनकी बात सुनकर गद्गद हो उठे। उन्होंने मित्र को हृदय से लगा लिया और बोले–ईश्वरचंद्र तुम्हें पाकर मुझे गर्व है कि आज भी संसार में इतने विनम्र तथा परोपकारी विद्वान् हैं। केवल ज्ञानी बनना ही महत्त्व नहीं रखता, विद्वान् की शोभा उसके आचरण से है।

9. घमंड का फल

गंगा, यमुना, कावेरी तथा गोदावरी आदि अनेक नदियाँ इठलाती हुई चली आ रही थीं। वे कल-कल, छल-छल करके सागर के जल में गिर रही थीं। समुद्र बड़े ध्यान से उनका आना देख रहा था। उसने देखा कि किसी नदी का जल सफेद है, किसी का हरापन लिए हुए, किसी का नीलिमा की झलक लिए। उसने देखा कि नदियों के साथ कहीं-कहीं बड़े-बड़े पहाड़ी पत्थर बहे चले आ रहे हैं। कहीं विशालकाय वृक्ष तैर रहे हैं, तो कहीं घास, फूस और पत्ते दिख रहे हैं। समुद्र को उन नदियों के पानी में कभी भी दूब और सरकंडे दिखाई नहीं दिए।

गंगा जब पास आई तो समुद्र ने पूछा–'गंगे, मैं देख रहा हूँ कि तुम सब नदियाँ बड़े-बड़े पत्थरों को बड़ी सहजता से बहा लाती हो, पर मैंने किसी के जल में सरकंडे बहते नहीं देखे। क्या बात है? वह तुम्हारे रास्ते में नहीं पड़ते या तुम उनको छोटा समझकर बात नहीं करतीं?'

गंगा बोली–'नहीं स्वामी ! ऐसा नहीं है। सरकंडों का तो वन का वन हमारे किनारे उग आता है। हम उनसे कल-कल करके घण्टों बातें करते हैं। सरकंडा छोटा है तो क्या हुआ, है बड़ा ही विनम्र। उसे पता है कि किस स्थिति में क्या करना चाहिए? हमारी लहरें जब तट को तोड़-तोड़कर बहती हैं, जब हमारा जल सरकंडों तक पहुँच जाता है तो वे झुक जाते हैं। झुकते भी उसी ओर हैं जिस ओर हमारा बहाव होता है। सरकंडे की जड़ें गहरी नहीं होतीं, उसका तना भी नहीं होता है, पर फिर भी हम उसे नहीं बहा पाते। जैसे ही हमारा पानी उतरता है वह फिर शान से खड़ा हो जाता है और हँसते-हँसते जीता है। तेज हवा चलती है तब भी वह यही करता है।'

'और इतने बड़े-बड़े वृक्ष कैसे ढह जाते हैं?' समुद्र ने पूछा।

गंगा बताने लगी, 'वृक्ष बड़े घमंड से सिर ताने खड़े रहते हैं। हमारा जल उनके तनों से टकराता है तो वे बड़े अभिमान से कहते हैं- अरी लहरों ! भागों यहाँ से, नहीं तो टकरा कर चूर-चूर हो जाओगी। उन्हें अपने बड़प्पन का बड़ा अहंकार होता है। उसी अहंकार से वे ढह जाते हैं। घमंडी सदैव ही दुःख पाता है।'

समुद्र ने सोचा कि वही उन्नति कर पाता है, जो व्यर्थ का अभिमान नहीं करता। चाहे वह रूप का हो, धन का हो या फिर शक्ति का हो–अभिमान सभी बुरे होते हैं।

अभ्यास

1. कहानी का विकास कब और कैसे हुआ?
2. कहानी के कौन-से भाग हैं?
3. कहानी लिखते समय किन-किन बातों पर ध्यान रखना आवश्यक होता है?
4. पाठ के आधार पर कोई दो कहानी याद करके अपने सहपाठियों को सुनाइए।

30 निबंध-लेखन (Essay-Writing)

निबंध की परिभाषा

निबंध शब्द दो शब्दों के संयोग से बना है- **नि + बंध**, अर्थात् 'सही ढंग से बँधा हुआ वाक्य'।

इस प्रकार सही ढंग से बँधी हुयी वाक्य रचना, सुसंगठित तथा क्रमबद्ध वाक्य रचना पर आधरित रचना को ही **'निबंध'** कहते हैं।

निबंध रचना हिंदी साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा है। आधुनिक युग में प्राय: प्राइमरी स्कूल, इण्टर कॉलेजों से लेकर विश्वविद्यालय की परीक्षा में भी निबंध लिखने का एक प्रश्न पूछा जाता है। इसमें प्राप्त अंकों का विद्यार्थी की श्रेणी पर बहुत प्रभाव पड़ता है। जबकि छात्र प्राय: अपनी पाठ्य पुस्तकों को ही पढ़ने पर अधिक ध्यान देते हैं, निबंध-लेखन पर नहीं। निबंध-लेखन भी एक आवश्यक कला है। अत: छात्र को इस ओर भी ध्यान देना अति आवश्यक है। निबंध में सीमित समय में अपने भावों तथा विचारों को क्रमबद्ध तरीके से, सीमित शब्दों में, प्रभावकारी ढंग से व्यक्त किया जा सकता है।

निबंध के प्रकार

निबंध मुख्यत: चार प्रकार के होते हैं–

1. **विवरणात्मक**–इस प्रकार के निबंधों में घटनाओं, यात्राओं, संस्मरण आदि का वर्णन किया जा सकता है।
2. **वर्णनात्मक**–इसमें नगर, दृश्यों, ऋतुओं तथा वस्तुओं आदि का वर्णन किया जाता है।
3. **विचारात्मक**–इस प्रकार के निबंधों में किसी विषय से सम्बंधित कारणों, परिणामों, प्रभावों, लाभ, हानि, महत्त्व आदि पर अपने विचार प्रकट किए जाते हैं।
4. **भावात्मक**–ऐसे निबंधों में सूक्तियों आदि पर अपने विचार प्रकट किए जाते हैं।

अच्छे निबंध की विशेषताएँ–

1. निबंध एक निश्चित शब्द सीमा में ही होना चाहिए।
2. निबंध के वाक्य क्रमबद्ध एवं सुस्पष्ट होने चाहिएँ।
3. निबंध में अनावश्यक विस्तार नहीं होना चाहिए।
4. निबंध की भाषा प्रभावशाली तथा विषयानुरूप होनी चाहिए।

1. रक्षाबंधन

प्रस्तावना–हिंदुओं के चार प्रमुख त्योहार हैं–दशहरा, दीपावली, रक्षाबंधन तथा होली। इनमें से रक्षाबंधन भाई-बहन के असीम स्नेह को प्रकट करने वाला है। यह प्राचीन काल से भारतवर्ष में मनाया जाता है। इस त्योहार को सलूनो भी कहा जाता है।

रक्षाबंधन का महत्त्व–रक्षाबंधन के दिन बहनें अपने भाइयों के हाथों पर राखी बाँधती हैं। पुराने समय में चावल की पोटली को लाल कलावे से बाँधकर राखी बनायी जाती थी। किंतु आजकल तो बाजारों में बड़ी सुंदर-सुंदर राखियाँ मिलती हैं। राखी के त्योहार से कई दिन पहले ही राखियों की बिक्री आरंभ हो जाती है। राखी बेचने वालों की दुकानें नई राखियों से जगमगा उठती हैं। वहाँ ग्राहकों की भीड़ दिखाई देने लगती है। इस दिन मीठे जवे, सेंवई या खीर आदि बनाई जाती है। दीवारों पर

चित्र बनाए जाते हैं और पूजा होती है। पूजा के बाद बहनें भाइयों की कलाई पर राखी बाँधती हैं। यह राखी उनके अटूट बंधन को प्रकट करती है। इसी दिन ब्राह्मण भी अन्य व्यक्तियों की कलाई पर राखी बाँधकर उनके सुख की कामना करते हैं तथा दक्षिणा प्राप्त करते हैं।

मनाने का ढंग–प्राचीन काल से इस त्योहार के बारे में अनेक कथाएँ प्रचलित हैं। इनमें से एक कहानी तो बहुत प्रचलित है। कहते हैं कि एक बार देवताओं और राक्षसों का भयंकर युद्ध छिड़ गया। धीरे-धीरे देवताओं का बल घटने लगा और ऐसा लगने लगा कि जैसे देवता हार जाएंगे। देवताओं के राजा इन्द्र को इसकी बड़ी चिंता हुई। इन्द्र के गुरु ने विजय के लिए श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन इंद्र के हाथ में रक्षा-बंधन कराया और इसके प्रभाव से राक्षस हार गए। कहा जाता है कि रक्षाबंधन का यह त्योहार तब से आज तक मनाया जाता है।

त्योहार से संबंधित अन्य घटनाओं का वर्णन–भारतीय इतिहास में भी राखी से संबंधित एक कथा प्रचलित है। एक बार चित्तौड़ की महारानी कर्मवती पर गुजरात के शाह ने आक्रमण कर दिया। कर्मवती ने रक्षाबंधन के दिन सम्राट हुमायूँ के पास राखी भेज दी तथा उसे अपना धर्म भाई माना। कर्मवती ने भाई के नाते हुमायूँ को चित्तौड़ की रक्षा के लिए भी बुलाया। हुमायूँ उस समय युद्ध में फँसा था किंतु वह राखी के महत्त्व को भली प्रकार समझता था। इसलिए वह तुरंत चित्तौड़ की रक्षा के लिए चल पड़ा। इस प्रकार राखी बहन और भाई के पवित्र प्रेम को प्रकट करती है।

उपसंहार–रक्षाबंधन हमारा पवित्र और महत्त्वपूर्ण त्योहार है। हमें धन और लोभ को त्यागकर इसकी पवित्रता का आदर करना चाहिए। वास्तव में यह त्योहार सभी को स्नेह और कर्त्तव्यपरायणता का ज्ञान प्रदान करता है। हमारे प्राचीन ऋषियों ने त्योहारों की जो योजना प्राचीन युग में बनाई थी उसका महत्त्व आज भी ज्यों का त्यों बना है। हमें अपने इस त्योहार के प्राचीन गौरव को सदैव ही स्मरण रखना चाहिए तथा इसे बड़े ही उल्लास से और पवित्र भाव से मनाना चाहिए।

2. जीवन में अनुशासन का महत्त्व

प्रस्तावना–हमारा जीवन सुखपूर्वक सुचारु ढंग से चलता रहे–ऐसी ही सबकी इच्छा होती है। ऐसा तभी संभव है जबकि हम अपने प्रत्येक कार्य को अनुशासनबद्ध होकर करें। समस्त संसार अनुशासन की शृंखला से जकड़ा हुआ प्रतीत होता है। समय पर सूर्य का उदय होना, अस्त हो जाना, चन्द्रमा का निकलना और छिप जाना, तारों का टिमटिमाना, पौधों का क्रमिक रूप से बढ़ना, फलों से लद जाना, कली से पुष्प निकलना, फिर मुरझा जाना–सभी कुछ नियमों के आधार पर चलता है।

अनुशासन की परिभाषा–अनु + शासन। महापुरुषों के आदर्शों पर चलना ही अनुशासन कहलाता है।

समाज में अनुशासन का महत्त्व–कोई भी अनुशासन में रहकर ही सफलता को प्राप्त करता है- चाहे वह व्यक्ति हो, समाज हो, देश अथवा राष्ट्र हो। अनुशासित व्यक्ति समाज के किसी भी क्षेत्र में जाए, सफलता ही प्राप्त करेगा। ऐसा व्यक्ति अभियन्ता के रूप में अच्छे निर्माण कार्य ही कराएगा।

जीवन में अनुशासन का महत्त्व–मानव में अनुशासन अनिवार्य है। किसी भी देश का उत्थान व पतन उसके नागरिकों पर निर्भर करता है। वे ही उच्च पदों पर आसीन होंगे। उन्हीं के कंधों पर देश का भार होता है। उनके स्वास्थ्य पर भी अनुशासन की छाप दिखाई देती है।

अनुशासनहीनता के कारण–समाज का जिस प्रकार से नैतिक स्तर गिरता जा रहा है उसके पीछे सबसे महत्त्वपूर्ण कारण अनुशासनहीनता है। अनुशासनहीनता के अनेक कारण तथा क्षेत्र हो सकते हैं, लेकिन यहाँ छात्रों में व्याप्त अनुशासनहीनता के विषय में बता रहे हैं, जो इस प्रकार हैं–

(क) दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली, (ख) विद्यालयों में अनैतिक कार्य, (ग) शिक्षकों का पतन, (घ) शिक्षा का व्यावसायिक होना, (ङ) अभिभावकों में ज्ञान का अभाव, (च) नैतिक शिक्षा का अभाव।

अनुशासनहीनता से हानियाँ–अनुशासन का पालन न करने से अनेक प्रकार की हानियाँ होती हैं। अनुशासन में बहने वाली नदी से खेत सींचे जा सकते हैं, विद्युत का निर्माण हो सकता है, पीने के लिए जल मिल सकता है। आज अनुशासनहीनता युक्त विद्यार्थी कहीं जुलूस में सहभागिता करता दिखाई देता है, तो कहीं सिनेमाघरों की शोभा बढ़ाता हुआ मिलता है।

उपसंहार–व्यक्ति के पूर्ण विकास के लिए अनुशासन की महती आवश्यकता है। अनुशासन रूपी अस्त्र से कठिन से कठिन कार्य सरल हो जाता है, क्योंकि अनुशासन द्वारा व्यक्ति शीघ्रता से तथा उत्तमता से कार्य कर सकता है। जब तुम स्वयं अनुशासित होगे, तो दूसरों को अनुशासित रख सकोगे।

3. दहेज प्रथा

प्रस्तावना–दहेज प्रथा एक सामाजिक अभिशाप है। यह विवाह की संस्था से संबंधित है। प्रत्येक सामाजिक प्रथा समाज कल्याण के लिए होती है। परंतु समय के साथ-साथ ये प्रथाएँ दोषयुक्त होती जा रही हैं। इसी संदर्भ में दहेज प्रथा भी एक ऐसी दोषयुक्त प्रथा है जिसे समाप्त करना प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है।

दहेज प्रथा क्या है–दहेज प्रथा अत्यंत प्राचीन है, परंतु प्रारंभ में इसका रूप भिन्न था। इसका परिचय सर्वप्रथम मनुस्मृति में मिलता है। मनु ने आठ प्रकार के विवाहों का विवरण प्रस्तुत किया। इसमें सर्वोत्तम ब्रह्म विवाह है। इसके अंतर्गत कन्या का पिता उसे सुसज्जित करके कन्यादान करता है। ये उपहारस्वरूप मिले वस्त्र-आभूषण ही दहेज प्रथा का मौलिक रूप हैं। दहेज प्रथा के विकारपूर्ण होने के क्या कारण थे? इसके लिए जातिगत बंधनों ने अहम भूमिका निभाई है।

दहेज प्रथा की हानियाँ–यह सत्य है कि दहेज प्रथा पहले दोषमुक्त थी। परंतु आज इसमें इतनी हानियाँ व्याप्त हो चुकी हैं कि इस प्रथा को जड़मूल से उखाड़कर फेंक देना अनिवार्य हो गया है। कहीं-कहीं तो इसने बाल हत्या जैसी अनेक कुप्रथाओं को जन्म दिया है। आज भी अनेक युवतियाँ इस प्रथा की चपेट में आकर आत्महत्या कर लेती हैं।

इस प्रथा से माता-पिता भी प्रभावित होते हैं। कन्या की सुख-सुविधाओं के लिए वे अपनी आर्थिक क्षमता से अधिक दहेज दे तो देते हैं, परंतु फिर सारे जीवन कर्ज में डूबे रहते हैं।

दहेज प्रथा को समाप्त करने के उपाय–दहेज प्रथा एक सामाजिक कुप्रथा है और इसके निवारण के लिए सामाजिक स्तर के प्रयास अनिवार्य हैं। आधुनिक युग में कानून और दण्ड का भी विशेष महत्त्व है। भारतीय सरकार ने इस प्रथा को समाप्त करने के लिए दहेज विरोधी कानून पास किया है। इसके अंतर्गत दहेज लेना और देना दोनों ही दण्डनीय अपराध हैं। केवल कानूनी प्रयास ही नहीं बल्कि सामाजिक प्रयास भी आवश्यक हैं। प्रेम विवाहों के प्रचलन से भी यह प्रथा समाप्त हो सकती है।

लड़कियों को शिक्षित करना भी इस प्रथा को खत्म करने में सहायक सिद्ध हो सकता है। शिक्षित कन्याओं को दूसरे पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं होती, अतः वर पक्ष को कन्या पक्ष का अनुचित लाभ उठाने का अवसर नहीं मिल पाता।

उपसंहार–यह पूर्णरूपेण सत्य है कि दहेज का दानव भारतीय समाज में गहरी जड़ जमाए हुए खड़ा है। परंतु अब लोग भी इससे परिचित हो गए हैं। इसके दोषों को समझ गए हैं। अब वह दिन दूर नहीं जब हमारा समाज इस प्रथा से पूरी तरह मुक्त हो जाएगा और हमारे परिवार आनंद का केंद्र बन जाएँगे।

4. महँगाई की समस्या

प्रस्तावना–आजकल घर और बाहर, नगर और ग्राम जहाँ भी लोगों की बातचीत सुनें, यही सुनने को मिलता है कि ''अब तो निर्वाह होना ही कठिन हो गया है। घर का खर्च ही पूरा नहीं होता। वस्तुओं के मूल्य इतने बढ़ गए हैं कि क्या बताएँ? हमारा तो महँगाई के कारण नाक में दम है।''

आज अनाज, वनस्पति, दूध, सब्ज़ी, कपड़ा, जूते, कोयला, सीमेंट, कागज़ और दवाओं में से कोई भी वस्तु ऐसी नहीं जिसकी कीमतें आसमान को न छूती हों। कई वस्तुओं के दाम तो सरकार ने स्वयं कई गुना बढ़ा दिए हैं–**जैसे**–पेट्रोलियम पदार्थ, कोयला आदि।

बाज़ार की स्थिति–वस्तुओं के मूल्य बढ़ जाने के अतिरिक्त कोष में खास यह है कि वस्तुएँ उस बढ़े हुए मूल्य पर भी उपलब्ध नहीं हो पातीं। नियंत्रित मूल्य वाली वस्तुएँ या तो बाज़ार से गायब कर दी जाती हैं अथवा ग्राहकों को ऐसी बिगड़ी नस्ल दी जाती है जिसे मानव तो क्या पशु भी न खा सके। इस विषय में चीनी, चावल तथा गेहूँ का अच्छा उदाहरण दिया जा सकता है। राशन की दुकान पर जो उनकी किस्में बेची जाती हैं, उनमें इतनी बजरी, कूड़ा व रेत मिला होता है कि उसे देखकर लगता है मानों यह पशुओं के लिए है।

व्यापारियों की मनोवृत्ति–वस्तुओं के मूल्य बढ़ाने के लिए व्यापारी वर्ग प्रतिक्षण आतुर रहता है। उन्हें कोई बहाना मिला कि वस्तुओं के मूल्य बढ़ जाते हैं। इसका एक सीधा सा उदाहरण नाप-तौल में मीट्रिक प्रणाली तथा मुद्रा की दशमलव प्रणाली के लागू होने के अवसर का लाभ लिया जा सकता है। तब तोल में आधा पाव या 112 ग्राम के स्थान पर 100 ग्राम देने लगे। इसका परिणाम यह निकला कि ग्राहक वर्ग पर दोहरी मार पड़ी–उसे पैसे भी अधिक देने पड़े और वस्तु भी कम मात्र में उपलब्ध होने लगी।

दोषी कौन–यह सत्य है कि विकासील देशों की अर्थव्यवस्था में वस्तुओं के मूल्य कुछ बढ़ते रहते हैं, किंतु उनमें इतनी वृद्धि नहीं होती जितनी कि भारत में हो रही है। शासक दल भी व्यापारियों से मोटा चंदा लेकर उन्हें चुपचाप वस्तुओं के मूल्य बढ़ाने की छूट दे देता है। बढ़ती हुई जनसंख्या के अनुपात में उत्पादन का न बढ़ना भी वस्तुओं के मूल्य को बढ़ा देता है।

उपसंहार–महँगाई के इस कमरतोड़ चक्र को रोकने के लिए उद्योग और कृषि दोनों ही क्षेत्रों में अधिक से अधिक उत्पादन बढ़ाना आवश्यक है। इसी प्रकार माल की ढुलाई में शीघ्रता लाना भी आवश्यक है। महँगाई को बढ़ाने में सहयोग देने वाले सरकारी निरीक्षकों को दंड देना होगा। इसके साथ ही सरकार को भी इस दिशा में कठोर रुख अपनाकर चोरबाज़ारी करने वालों को कड़ा दंड देना होगा।

5. वृक्षारोपण

प्रस्तावना–वन प्रकृति के सुन्दर उपहार हैं। ये स्वयं धूप, ताप को सहन करके हमें छाया प्रदान करते हैं। वनों के अभाव में धरती का अस्तित्व सम्भव नहीं है। विद्वानों ने वनों की उपमा आत्मा से दी है। जिस प्रकार आत्मा के अभाव में शरीर का कोई महत्त्व नहीं है, उसी प्रकार वनों के अभाव में धरती महत्त्वहीन है।

प्राचीन काल में वृक्षारोपण की सांस्कृतिक परंपरा–प्रकृति का अस्तित्व आदिकाल से है। प्रकृति मानव की धात्री है। वस्तुतः वन हमारी सांस्कृतिक विरासत हैं। प्राचीन काल से ही इनकी वृद्धि करना मानव का पुनीत कर्त्तव्य माना गया है। हमारे यहाँ ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम की व्यवस्था की गई है। हमारे देश में वृक्षों को देवताओं का निवास माना गया है। अतः प्राचीन काल से ही हमारे यहाँ वृक्षारोपण को शुभ माना जाता है। पीपल, बरगद, आँवला, नीम और तुलसी आदि की पूजा का विधान होने से मानव और वृक्षों का संबंध आज भी है। वन हमारे शिक्षक, मित्र और रक्षक हैं। परोपकार उनकी महान् विशेषता है।

वृक्षों की आवश्यकता और उनके लाभ–वृक्षों का मानव से शाश्वत संबंध है। वृक्ष काटने वाले के लिए दंड का प्रावधान है। वृक्षों से हमें अनेक लाभ हैं–

1. वृक्ष वर्षा के मुख्य स्त्रोत हैं।
2. वृक्षों से जल के बहाव और वायु के वेग से भूमि के कटाव को रोका जा सकता है।
3. वृक्षों से हमें बहुमूल्य लकड़ी, अनेक प्रकार की जड़ी बूटियाँ तथा दवाएँ प्राप्त होती हैं।

4. वृक्षों से हरियाली और छाया प्राप्त होती है।
5. वन पर्यावरण का संतुलन बनाए रखने में आवश्यक हैं।
6. वन देश की आर्थिक उन्नति की रीढ़ होते हैं।
7. वनों से हमें सामाजिक और नैतिक शिक्षा प्राप्त होती है।

वर्तमान में वनों की स्थिति–जो वन आदिकाल से पूजनीय माने जाते रहे हैं, आज हमारे देश में उनकी स्थिति बहुत दयनीय हो रही है। दिनों-दिन पुराने वृक्ष काटे जा रहे हैं, नए वनों की स्थापना नहीं हो रही है। आज मानव की दृष्टि में वनों का कोई महत्त्व नहीं रहा। इसी कारण वर्षा के निश्चित समय बदलते जा रहे हैं।

वनों के उजड़ने के कारण–वनों को उजाड़ने में प्रमुख हाथ ठेकेदारों का है। ये ठेकेदार वनों के वृक्षों को तो दिनों-दिन काटते जा रहे हैं, किंतु उनके विकास की ओर से उदासीन हैं। वनों को नष्ट करने में वन अधिकारियों एवं कर्मचारियों का भी बहुत बड़ा योगदान होता है। हाथी आदि पशु दिन-रात पेड़ों को उजाड़कर वनों को हानि पहुँचाते रहते हैं।

वन-वृद्धि में वृक्षारोपण का महत्त्व–वनों की इस दयनीय स्थिति को देखकर आज वनों के पर्याप्त विकास की महती आवश्यकता है। इसके लिए वृक्षारोपण का बहुत महत्त्व है। वृक्षारोपण से वनों का विनाश तो रुकेगा ही, साथ ही उनका विकास भी होगा।

भारत में वनोत्सव–एक लंबे अरसे तक हमारे देश की जनता और सरकार दोनों ही वनों की ओर से उदासीन रहे हैं, परंतु यह हर्ष का विषय है कि विगत दस वर्षों से हमारी सरकार ने इस ओर पर्याप्त ध्यान दिया है। हमारे देश में अरबों पेड़ों का रोपण हुआ, जो एक प्रगति की शुरुआत कही जा सकती है। इन नए पेड़ों से हम देशवासियों को भविष्य में जो लाभ प्राप्त होंगे उनकी कल्पना करना भी कठिन नहीं है।

उपसंहार–वन हमारा जीवन हैं। उनका विकास हमारे जीवन का विकास है। वे पृथ्वी के सुंदर अलंकरण तो हैं ही, साथ ही हमारे भाग्य विधाता भी हैं। वस्तुतः उनका विकास मानव का विकास है। हमें उच्च स्तर पर इनके विनाश को रोकना चाहिए। हमारी सरकार की वर्तमान वन नीति को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि भारत में वनों का भी भविष्य उज्ज्वल है। अब वह दिन दूर नहीं जब वन अपनी विराटता का रूप धेरण करके अपने प्राचीन गौरव को पुनः प्राप्त करेंगे।

6. आतंकवाद

प्रस्तावना–'आतंक' शब्द सुनते ही मन भय और पीड़ा से त्रस्त हो जाता है। आज विश्व-मानवता आतंकवाद से पीड़ित है। उसी का फल है कि नित्य संसार के किसी न किसी भाग में आतंकवादी गतिविधियों के समाचार सुनने को मिलते हैं। आतंकवाद आज एक अंतर्राष्ट्रीय समस्या बन गई है। आतंकवाद आज के सभ्य और सुसंस्कृत मानव जीवन के लिए अभिशाप है।

आतंकवाद क्या है–आतंकवाद एक ऐसी विचारधारा है, जिसका न कोई राष्ट्र है, न कोई समाज और न कोई धर्मद्ध यह केवल एक राक्षसी प्रवृत्ति है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं ''किसी बड़े स्वार्थ से प्रेरित होकर राष्ट्र और समाज के विरुद्ध किया गया अनैतिक और घृणित हिंसात्मक कृत्य ही आतंकवाद है।'' हिंसा ही इनका अमोघ अस्त्र है। इस प्रकार आतंकवाद उस प्रवृत्ति को कहते हैं, जिसमें कुछ लोग अपनी उचित तथा अनुचित माँग मनवाने के लिए घोर हिंसात्मक और अमानवीय साधनों का प्रयोग करने लगते हैं।

विश्व में आतंकवाद–आज संपूर्ण विश्व आतंकवाद का शिकार है। संसार में भौतिक दृष्टि से सम्पन्न देशों में आतंकवादी जहरीली प्रवृत्ति और अधिक पनप रही है। अमेरिका के राष्ट्रपति जॉन एफ० केनेडी की हत्या, हवाई जहाज में बम विस्फोट, विश्व टावर का विध्वंस आदि अनेक दिल दहला देने वाली घटनाएँ हैं।

भारत में आतंकवाद–भारत में आतंकवाद का आरम्भ पश्चिमी बंगाल में फैली नक्सलवादी गतिविधियों से माना जा सकता है। पिछले बीस वर्षों में भारत के पंजाब, बिहार, असम, बंगाल, नागालैंड, मिजोरम, जम्मू-कश्मीर आदि कई प्रांतों में आतंकवाद की काली छाया ने अपने पैर पसार लिए हैं। आतंकवाद के राक्षस ने बिहार के पूर्व रेलवे मंत्री ललितनारायण मिश्र, पं0० दीनदयाल उपाध्याय, श्रीमती इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, भूतपूर्व सेनाध्यक्ष अरुण श्रीधर वैद्य, 'पंजाब केसरी' के संपादक लाला जगतनारायण आदि अनेक गणमान्य व्यक्तियों को मौत के घाट उतार दिया। आए दिन हमारे बड़े-बड़े नेताओं को मारने की धमकी भी दी जाती है।

आतंकवाद के कारण–महत्त्वाकांक्षी व्यक्तियों की लालसा जब विकृत और हिंसात्मक रूप धारण कर लेती है तो ऐसी दशा में आतंकवाद जन्म लेता है। भाषा, धर्म और क्षेत्रवाद को लेकर भी असफल राजनीतिज्ञ आतंकवाद को बढ़ावा देते हैं। भारत के विरुद्ध पाकिस्तान ने इसी षड्यंत्र का सहारा ले रखा है। इस प्रकार आतंकवाद स्वार्थ, लालसा, निर्दयता, भय और क्रूरता का नंगा नाच है।

आतंकवाद के दुष्परिणाम–आतंकवाद के बड़े भयानक परिणाम निकलते हैं। इससे देश का विकास रुक जाता है। लोगों में असुरक्षा की भावना पैदा हो जाती है। पलायन बढ़ता है और उद्योग-धंधों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। जातीय और धर्मिक भेद-भाव बढ़ जाता है। इस प्रकार आतंकवाद का चतुर्दिक दुष्परिणाम देश को पतन की ओर ले जाता है।

आतंकवाद की समस्या का निदान–आतंकवाद की भयानक समस्या को दूर करने के लिए अनेक उपाय हैं। उनमें पहला उपाय यह है कि गुमराह और भटके युवकों को सही रास्ते पर लाने के लिए उन्हें विश्वास में लिया जाए। शासक और जनता के बीच खाई को कम किया जाए। जनता में आतंकवाद के विरुद्ध जागरूकता की भावना पैदा की जाए। देशद्रोहियों के विरुद्ध कठोर दंड की व्यवस्था की जाए।

आतंकवाद को समाप्त करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रयत्न किए जाएँ। एक देश दूसरे देश के विरुद्ध आतंकवाद को हवा देना बंद करे। इसके लिए देश की सीमाओं पर कठोर नियंत्रण की व्यवस्था हो। धर्म, भाषा, जाति, क्षेत्र को आधार बनाकर अलगाववादी भावना पैदा करने वाले तत्त्वों के साथ सरकार कठोरता से निपटे।

उपसंहार–आतंकवाद आज की सभ्य और सुसंस्कृत मानवता के मुख पर ऐसा दोष है जो उसकी छवि को विकृत किए हुए है। यदि आतंकवाद को समाप्त करना चाहते हैं, तो समस्त विश्व के लोग इसके विरुद्ध आतंक फैलाएँ। आतंकवादियों को ऐसा दंड मिले कि उनकी रूह भी काँप जाए। वैसे अधिकांश विश्व जनमत तथा हमारा देश आतंकवाद के विरुद्ध जिहाद छेड़े हुए हैं।

7. परोपकार

प्रस्तावना–संसार में विभिन्न प्रकार के मनुष्य पाए जाते हैं। उनमें से कुछ ऐसे होते हैं जो अपने हित की चिन्ता न करके दूसरों के कार्यों में संलग्न रहते हैं। ऐसे मनुष्य परोपकारी कहे जाते हैं और उनके द्वारा दूसरों के लिए किए जाने वाले कार्यों को परोपकार कहा जाता है।

परोपकार दो शब्दों से मिलकर बना है–पर + उपकार अर्थात् दूसरों की भलाई। जो कार्य अपने हित, यश, सम्मान आदि की भावना को छोड़कर दूसरों के हित की इच्छा से किए जाते हैं वे परोपकार की श्रेणी में आते हैं। वास्तव में परोपकार मनुष्य के हृदय में निवास करने वाला एक ऐसा दैवी गुण है जो मनुष्य को मनुष्य की कोटि से उठाकर देवताओं की कोटि में रख देता है।

परोपकार का क्षेत्र–परोपकार का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है और इसे करने के विभिन्न साधन हैं। विद्वान् पुरुष अपनी विद्या द्वारा अशिक्षित मनुष्यों को शिक्षित करके देश, जाति तथा समाज का परोपकार कर सकते हैं। जो पुरुष शरीर से हृष्ट-पुष्ट

हैं, वे अपनी शारीरिक शक्ति से परोपकार कर सकते हैं। यह सोचना कि केवल एक धनी व्यक्ति ही परोपकार कर सकता है, ठीक नहीं है। इसमें धन नहीं, त्याग की भावना प्रमुख है।

परोपकार से लाभ–यद्यपि परोपकारी अपने हित तथा लाभ की दृष्टि से परोपकार नहीं करता किंतु इससे उसे अनेक लाभ होते हैं। परोपकार करने वाले का अंत:करण पवित्र तथा उज्ज्वल हो जाता है। उसकी आत्मा दीप्त तथा प्रकाशमयी हो जाती है। परोपकार करने वाले के मन में यह भावना रहती है कि वह अपने कर्त्तव्य को पूरा कर रहा है और इससे उसे जो संतोष मिल रहा है, वह बड़े-बड़े ऊँचे पदों तथा लाखों रुपए खर्च करके प्राप्त नहीं हो सकता। परोपकार करने से दीन-दुखियों को आनंद तथा खुशी मिलती है। उनकी आत्मा प्रसन्न होकर परोपकार करने वाले को आशीर्वाद देती है।

यश तथा सम्मान की प्राप्ति–परोपकार करने वाले मनुष्य का नाम सब जगहों पर सर्वकालिक हो जाता है। परोपकार करने में समाज की सर्वतोन्मुखी उन्नति एवं वृद्धि होती है। समाज की उन्नति से देश की उन्नति तथा देश की उन्नति पर संपूर्ण राष्ट्र की उन्नति निर्भर करती है।

परोपकार का मार्ग अवरुद्ध करने वाले तत्त्व–परोपकार का मार्ग अवरुद्ध करने वाले तत्त्वों में अहंकार और स्वार्थ भावना का स्थान शीर्ष पर है। अहंकार तो पतन का मूल है। यह मनुष्य को दम्भी और बाद में पाखंडी बना देता है। अहंकारी व्यक्ति कभी भी परोपकारी नहीं हो सकता। परोपकार के लिए तत्पर व्यक्ति को सर्वदा यही ध्यान रखना चाहिए कि वह जनता का विनम्र सेवक है। स्वार्थ भावना मनुष्य को कर्त्तव्य पथ से विचलित करके पतन के गर्त में गिरा देती है।

उपसंहार–आज सारा संसार दु:खी है। मानव की अवनति होती जा रही है। आज एक देश दूसरे देश को, एक समाज दूसरे समाज को, एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को नष्ट करने पर तुरंत ही तुल जाता है। इसका मूल कारण परोपकार की भावना का अभाव है। परोपकार ही मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म है। इसकी कमी के कारण ही संसार अभाव, दीनता, शोषण, शोक, रोग, हिंसा आदि का अखाड़ा बना हुआ है। यह संसार सही अर्थों में मानव लोक उसी दिन बनेगा, जिस दिन इसका प्रत्येक नागरिक 'परहित सरिस धर्म नहिं भाई' के सत्य को हृदयंगम करेगा।

8. ईद

परिचय–ईद इस्लाम धर्म का महान् एवं प्रसिद्ध पावन पर्व है। हिंदुओं के लिए जिस प्रकार होली मौज और मस्ती का त्योहार है, उसी प्रकार मुसलमानों के लिए ईद। इस्लाम धर्म के पैगम्बर मुहम्मद साहब का जन्म 570० ई० में अरब में हुआ था। बचपन में ही माता-पिता का स्वर्गवास हो जाने से चाचा अबूतालिब ने इनका पालन-पोषण किया। इनका विवाह बेगम खजीदा से हुआ था। उनको **40** वर्ष की आयु में विशेष ज्ञान प्राप्त हुआ। मोहम्मद साहब का 'कुरान शरीफ' पवित्र धर्मिक ग्रंथ है। आपने अपने महान् कार्यों से मुस्लिम जाति का मार्ग-दर्शन किया। इस्लाम धर्म के अनुयायी ईद के इस पर्व पर **कुरान शरीफ** की वर्षगाँठ मनाते हैं।

त्याग भावना–मुसलमानों का महीना हिंदुओं के चैत-वैसाख या अंग्रेज़ी की जनवरी-फरवरी से अलग होता है। वे चाँदमास मनाते हैं। उनके बारह महीनों में एक महीने का नाम '**रमज़ान**' है। रमज़ान महीना बहुत ही पवित्र होता है और इसी महीने में मुसलमान रोज़ा रखते हैं। 30 दिन का समय साधना का होता है। **24** घण्टों में **5** बार नमाज़ पढ़ी जाती है और दिन में एक बार भोजन किया जाता है। यह महीना प्राय: व्रत (रोज़ा) और उपासना में ही बीतता है। **30** दिन उपवास के बाद उसके अगले महीने 'शब्वाल' की पहली तारीख को ईद का त्योहार मनाया जाता है। इसे '**ईद-उल-फितर**' भी कहते हैं।

मनाने का ढंग–ईद पर मेलों का आयोजन होता है। प्रात:काल होते ही बच्चे, स्त्री, पुरुष सभी नए-नए सुंदर वस्त्र पहनकर ईदगाह या किसी मस्जिद में जाकर नमाज़ पढ़ते हैं। नमाज़ पढ़ने के बाद वहाँ के लोग आपस में गले मिलते हैं। एक-दूसरे से लोग अपना आन्तरिक प्रेम दिखाते हैं। उस दिन ऐसा लगता है, मानों मनुष्य-मनुष्य के बीच कोई दीवार या फूट की खाई

है ही नहीं। घर में तरह-तरह के पकवान बनते हैं। सभी अपने मित्रों, रिश्तेदारों, परिचितों एवं पड़ोसियों को दावत के रूप में सेंवई तथा मिठाइयों से मुँह मीठा कराते हैं। अंगों तथा वस्त्रों पर इत्र लगाया जाता है। यह चहल-पहल देर रात तक चलती है। जो जिससे मिलता है बस 'ईद मुबारक', 'ईद मुबारक' कहकर एक-दूसरे को मुबारकबाद देता है।

उपसंहार– ईद का पर्व सचमुच मुस्लिम संप्रदाय में नव जीवन का सन्देश लाता है। ईद आती है और खुशियों की बहार बहा और लुटा जाती है।

9. बेरोज़गारी की समस्या

प्रस्तावना–क्या आपने कभी उस नवयुवक चेहरे को देखा है जो विश्वविद्यालय से अच्छी डिग्री लेकर बाहर आया है और रोज़गार की तलाश में भटक रहा है? जो बेकारी की आग में अपनी शिक्षा-दीक्षा को जलाकर राख कर देने के लिए विवश है? कभी आपने उस नौजवान की पीड़ा का अनुभव किया है, जिसे घर में निकम्मा कहा जाता है और समाज में वस्तुत: वह निराशा की नींद सोता है और आँसुओं के खारे पानी को पीकर समाज को अपनी व्यथा सुनाता है?

बेकारी का अर्थ–बेकारी का अभिप्राय उस स्थिति से है जब कोई योग्य तथा काम करने के लिए इच्छुक व्यक्ति प्रचलित मज़दूरी की दरों पर कार्य माँगता हो और उसे काम न मिलता हो। बालक, वृद्ध, रोगी अथवा अपंग व्यक्तियों को बेरोज़गारों की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। वे बेकारी के अंतर्गत नहीं आते।

बेकारी एक अभिशाप–बेकारी किसी भी देश अथवा समाज के लिए अभिशाप है। इससे एक ओर निर्धनता, भुखमरी तथा मानसिक अशांति फैलती है, दूसरी ओर यह ऐसा भयंकर विष है, जो संपूर्ण देश के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, जीवन स्तरों को दूषित कर देता है। अत: उसके कारणों को खोजकर निराकरण करना नितांत आवश्यक है।

बेकारी के कारण–हमारे देश में बेकारी के अनेक कारण हैं। इनमें से यहाँ कुछ प्रमुख कारणों का उल्लेख किया जा रहा है–

(क) **जनसंख्या में वृद्धि–**बेकारी का प्रमुख कारण है जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि होना। विगत कुछ दशकों से भारत में जनसंख्या का विस्फोट हुआ है।

(ख) **दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली–**भारतीय शिक्षा सैद्धांतिक अधिक है। वह व्यावहारिकता से शून्य है। इसमें पुस्तकीय ज्ञान पर ही विशेष ध्यान दिया जाता है। फलत: यहाँ के स्कूल, कॉलेजों से निकलने वाले छात्र दर के बाबू ही बन पाते हैं। वे निजी उद्योग, धंधे स्थापित नहीं कर पाते।

(ग) **कुटीर उद्योगों की उपेक्षा–**ब्रिटिश सरकार की कुटीर उद्योग नीति के कारण देश के कुटीर उद्योग-धंधे नष्ट हो गए। इसके बाद देख स्वतंत्र होने पर भी सरकारी रुकावटों के कारण लोग नए, छोटे उद्योग आरंभ नहीं कर पाते।

(घ) **अविकसित सामाजिक दशा–**हमारे देश में जाति-प्रथा, बाल-विवाह, सामाजिक असमानताएँ भी बेकारी को बढ़ाने में सहयोगी हुई हैं। इसके अतिरिक्त मानसून की अनियमितता, भारी संख्या में शरणार्थियों का आगमन, मशीनीकरण के फलस्वरूप होने वाली श्रमिकों की छँटनी, श्रम की माँग एवं पूर्ति में असंतुलन, आर्थिक साधनों की कमी आदि के कारण बेरोज़गारी में वृद्धि हुई है।

बेकारी को दूर करने के उपाय–निम्नलिखित उपाय बेकारी को दूर करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं–

(क) **जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण–**जनसंख्या में अप्रत्याशित वृद्धि बेकारी का मूल कारण है। अत: इस पर नियंत्रण परम आवश्यक है।

(ख) **कुटीर उद्योगों का विकास–**कुटीर उद्योगों के विकास की ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

(ग) **औद्योगिकीकरण**–देश में व्यापक स्तर पर औद्योगिकीकरण किया जाना चाहिए। विशाल उद्योगों की अपेक्षा लघु स्तरीय उद्योगों को अधिक महत्त्व दिया जाए।

(घ) **सहायक धंधे का विकास**–मुख्य उद्योगों के साथ-साथ सहायक धंधे का विकास करना चाहिए।

जैसे–कृषि के साथ-साथ पशुपालन तथा मुर्गी पालन आदि के द्वारा ग्रामीण जनों को बेकारी से मुक्त किया जा सकता है।

(ङ) **राष्ट्र के निर्माण के विविध कार्य**–देश में बेकारी को दूर करने के लिए राष्ट्र-निर्माण के विविध कार्यों का विस्तार किया जाना चाहिए। यथा–सड़कों का निर्माण, रेल, परिवहन का विकास, पुल निर्माण, बाँध निर्माण, वृक्षारोपण आदि।

उपसंहार–हमारी सरकार बेकारी के प्रति जागरूक है और इस दिशा में उसने महत्त्वपूर्ण कदम उठाए हैं। परिवार नियोजन, बैंकों का राष्ट्रीयकरण, कच्चा माल एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने की सुविधा, कृषि भूमि की चकबंदी, नए-नए उद्योगों की स्थापना, परीक्षा केंद्रों की स्थापना आदि अनेकानेक ऐसे कार्य हैं, जो बेरोज़गारी को दूर करने में एक सीमा तक सहायक सिद्ध हुए हैं। इनको और अधिक विस्तृत एवं प्रभावी बनाने की आवश्यकता है।

10. व्यायाम या स्वास्थ्य ही धन है

भूमिका–मानव जीवन की सफलता उत्तम स्वास्थ्य पर निर्भर करती है। उत्तम स्वास्थ्य नियमित प्रातः भ्रमण, व्यायाम-कसरत आदि करने से प्राप्त होता है। जिस प्रकार कमरे के सामान की रक्षा के लिए मज़बूत किवाड़ और ताले की आवश्यकता पड़ती है उसी प्रकार शरीर की रक्षा के लिए उत्तम स्वास्थ्य की आवश्यकता पड़ती है। अस्वस्थ व्यक्ति का जीवन समाज और परिवार के लिए भार बन जाता है। ऐसा व्यक्ति जीवन में कभी उन्नति नहीं कर पाता है। परिवार, समाज, राष्ट्र–सबकी उन्नति उत्तम स्वास्थ्य वाले व्यक्तियों से ही संभव है। अतः उत्तम स्वास्थ्य की उपयोगिता स्वयं सिद्ध है।

उत्तम स्वास्थ्य–अंग्रेज़ी में कहा गया है–'Health is Wealth' जिसके पास उत्तम स्वास्थ्य है, समझना चाहिए कि उसके पास सब कुछ है। इसके अभाव में महल, वैभव, नौकर-चाकर सब व्यर्थ हैं। यह उत्तम स्वास्थ्य स्वस्थ शरीर में निवास करता है। अतः शरीर को नीरोग और स्वस्थ बनाने का हमें हर सम्भव प्रयास करना चाहिए।

प्राप्ति के साधन–स्वस्थ जीवन के लिए विद्वानों ने पर्याप्त तथा संतुलित आहार, स्वच्छ वातावरण, नियमित व्यायाम, खेलकूद आदि को आवश्यक बताया है। किसी का स्वास्थ्य अच्छा है तो यह न समझें कि यह इसी प्रकार बना रहेगा। थोड़ी भी लापरवाही करने से यह बिगड़ जाता है और फिर तो सुधारने में सब कुछ बिगड़ जाता है फिर भी नहीं सुधरता। अतः स्वास्थ्य के प्रति कभी आलस्य नहीं करना चाहिए। संतुलित तथा स्वस्थ भोजन करने से मनुष्य का शरीर स्वस्थ तथा नीरोग रहता है। अधिक भोजन करना, भोजन के बाद तुरंत कार्य करना हानिकारक है। स्वस्थ रहने के लिए ऐसा भोजन करना चाहिए जिसमें सभी पौष्टिक पदार्थ हों। विटामिन युक्त भोजन, दूध तथा घी आदि का नियमित सेवन स्वस्थ शरीर के लिए आवश्यक है।

उत्तम शरीर के लिए यह भी आवश्यक है कि हम प्रातः भ्रमण तथा नियमित व्यायाम करें। इससे शरीर में स्फूर्ति और ताजगी आती है। शरीर पर वृद्धावस्था के लक्षण शीघ्र नहीं दिखाई पड़ते। मनुष्य दीर्घजीवी होता है। स्वस्थ शरीर के लिए अपने आप को चिंता से मुक्त रखना चाहिए क्योंकि चिंता शरीर को गला डालती है। ईर्ष्या और चिंता जीवन को नीरस और फीका बना देती हैं। इससे शरीर दुर्बल हो जाता है, शरीर में शक्ति नहीं रह जाती है। चिंतायुक्त जीवन विष के समान है।

उपसंहार–स्वास्थ्य जीवन का सार है। स्वस्थ मनुष्य कभी दुःखी नहीं रहता। अतः स्वस्थ रहने के लिए हमें हर संभव प्रयास करना चाहिए। स्वस्थ रहकर ही हम परिवार, समाज तथा राष्ट्र की सेवा कर सकते हैं।

11. महात्मा गांधी

आविर्भाव काल–हमारा देश जब पराधीनता की जंजीरों में जकड़ा हुआ था, हम गुलामी की साँस लेकर जब घुटन महसूस कर रहे थे, उस आपात् वेला में महात्मा गांधी ने जन्म लेकर देश को स्वतंत्र कराया। उस समय अंग्रेज़ों की शोषण की नीति भयानक रूप धारण कर चुकी थी। हमारी जातीयता और राष्ट्रीयता समाप्त हो चुकी थी। महात्मा गांधी ने सत्य और अहिंसा का व्रत लेकर सतत संघर्ष किया और देश को स्वतंत्र कराया। यही कारण है कि संपूर्ण देश गांधी जी को राष्ट्रपिता के रूप में जानता और मानता है।

जन्म व शिक्षा-दीक्षा–महात्मा गांधी जी का जन्म सन् 1869 ई0 में 2 अक्टूबर को पोरबंदर (गुजरात) में हुआ था। आप पोरबंदर के दीवान करमचंद गांधी के पुत्र थे। आपकी माता पुतली बाई साधु प्रकृति की महिला थीं। आपका पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था। माता की साधु प्रकृति का प्रभाव गांधी जी पर बचपन से ही पड़ा और जीवन पर्यंत बना रहा। इनकी प्रारंभिक शिक्षा राजकोट में हुई। ये साधारण और लजालु विद्यार्थी थे। छात्र जीवन से ही उन्होंने सच्चाई और ईमानदारी का पालन किया। झूठ न बोलना, नकल न करना, मांस न खाना आदि अनेक अच्छे गुण आपमें विद्यार्थी जीवन में ही पनप चुके थे। इनके जीवन पर सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र और मातृ-पितृ भक्त श्रवण कुमार नाटकों का बड़ा प्रभाव पड़ा। सन् 1887 ई0 में मैट्रिक पास कर भावनगर कॉलेज में भर्ती हुए। सन् 1888 में आप बैरिस्ट्री पढ़ने इंग्लैंड चले गए। वहाँ अनेक कष्ट सहकर भी आपने सात्विक जीवन बिताया और सन् 1891 में बैरिस्ट्री पास कर आप स्वदेश लौट आए।

देशहित के कार्य–सर्वप्रथम आपने बम्बई में वकालत शुरू की, परंतु वहाँ आपको विशेष सफलता नहीं मिली। आपने दक्षिण अफ्रीका में भारतवासियों की रक्षा के लिए शक्तिशाली सत्याग्रह और आंदोलन चलाया। आपका आंदोलन सफल हुआ और भारतवासियों को सम्मान मिला। आपका प्रभाव संपूर्ण देश पर पड़ा और आप देश के सर्वस्व बन गए।

अंग्रेज़ों का विश्वासघात–महात्मा गांधी ने प्रथम विश्व युद्ध में अंग्रेज़ों की बड़ी सहायता की थी, इस आशा से कि युद्ध के उपरांत अंग्रेज़ भारत को स्वतंत्र कर देंगे। किंतु जब ऐसा नहीं हुआ तो महात्मा गांधी ने सन् 1911 में ही असहयोग आंदोलन का संचालन किया। सन् 1930 ई0 के व्यापक 'नमक सत्याग्रह' की बागडोर अपने ही हाथों में संभाली थी। फिर सन् 1942 ई0 में 'भारत छोड़ो' का नारा आपने ही बुलंद किया। इससे सरकारी शासन की नींव डगमगा गयी। अतः सन् 1947 ई0 में 15 अगस्त को अंग्रेजों ने भारत को स्वतंत्र कर दिया।

धर्मिक एकता के प्रतीक–महात्मा गांधी सत्य तथा अहिंसा के पुजारी थे। हिंदू-मुस्लिम एकता तथा हरिजनोत्थान हेतु गांधी जी ने जो कुछ किया, वह इतिहास में अमर रहेगा। ग्राम सुधार तथा खादी प्रचार के लिए भी इनकी सेवाएँ बेजोड़ हैं। गांधी जी सभी धर्मों का आदर करते थे और अपनी पूजा में सभी धर्मग्रंथों का स्मरण करते थे। इनकी सेवाएँ बहुमुखी थीं। हिंदी भाषा के प्रचार और प्रसार के लिए भी इन्होंने बहुत कुछ किया।

निधन–दुःख की बात यह है कि त्याग, तपस्या और शांति का प्रज्ज्वलित दीप हाथ में लेकर चलने वाले इस राष्ट्रपिता को 1948 ई0 की 30 जनवरी की सन्ध्या 5 बजे नाथूराम गोडसे नामक व्यक्ति ने अपनी गोली का शिकार बना दिया। इससे मानवता रो पड़ी। सारा देश इस दुःखद घटना से बिलख पड़ा।

उपसंहार–गांधी जी सचमुच महामानव और शांति के दूत थे। ऐसे पुरुष युगों के बाद धरती पर कभी-कभी अवतरित होते हैं। आज गांधी जी हमारे बीच नहीं हैं, फिर भी प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में बसे हुए हैं।

12. आदर्श शिक्षक

भूमिका–जीवन का लक्ष्य न मृत्यु है, न जन्म, अपितु गरिमा और यश के उच्च शिखर तक पहुँचना है। जिससे आगे आने वाली पीढ़ियाँ श्रद्धा और प्रेम के साथ स्मरण करती रहें। जीवन तो कुत्ते और बिल्ली भी जीते हैं परंतु आदर्श बनकर जीना

जीवन की एक महत्तम साधना है। जो इस लक्ष्य को प्राप्त कर लेते हैं उनके लिए कुछ भी शेष नहीं रह जाता है। इस प्रकार के आदर्श जीवन मार्ग पर चलने वाले हमारे प्रातः स्मरणीय पूज्य गुरु जी श्री हरिहर सिंह जी हैं।

परिचय तथा गुण—श्री हरिहर सिंह हमारे विद्यालय के हिंदी के अध्यापक हैं। आप हिन्दी विषय में एम0 ए0, बी0 एड0 हैं। इन्हें अपने विषय पर पूर्ण अधिकार है। आपकी अध्यापन में विशेष रुचि है। यही कारण है कि आप विद्यार्थियों को नवीनतम बातें बताया करते हैं। आपकी शिक्षण शैली तो बेजोड़ ही है। आपके द्वारा पढ़ाया गया विषय तथा पाठ मानस पटल से कभी विस्मृत नहीं होता है। श्री हरिहर सिंह विद्यालय परिवार के सुख-दुःख में सदैव साथ रहते हैं। जैसे ही कोई विद्यार्थी अस्वस्थ हुआ, आप उसकी यथोचित सेवा परिचर्या के लिए हाजिर हो जाते हैं। अध्यापकों के संकट में वह छाया की तरह साथ बने रहते हैं। विद्यालय में ईमानदारी, समय की पाबंदी, नैतिकता, न्याय और सत्यवादिता के लिए आप निरन्तर स्मरण किए जाते हैं।

वेश-भूषा—श्री हरिहर सिंह 'सादा जीवन उच्च विचार' के प्रतीक हैं। खादी का कुर्ता, खादी की धोती तथा शोलापुरी चप्पल आपकी आकर्षक पोशाक है। आप सफ़ाई पसंद व्यक्ति हैं। अतः आपके शरीर पर साफ़-सुथरे कपड़े ही देखे जाते हैं। अपने वस्त्रों को आप स्वयं ही अपने हाथों से साफ़ करते हैं। घर पर खादी की लुंगी और गंजी वह धारण करते हैं। जाड़े के दिनों में कुर्ते के ऊपर ऊनी जॉकेट रहती है।

रुचि—श्री हरिहर सिंह परिधान की तरह खान-पान में भी सादगी अपनाए हुए हैं। मांस-मछली, अंडा या बाज़ार की चीज़ें वे भूलकर भी ग्रहण नहीं करते। विद्यालय के सामने की दुकान पर चाय-पान करते उनको कभी नहीं देखा गया है। वे प्रातःकाल उठकर प्रातःकालीन क्रियाओं से निवृत्त हो स्नानादि के बाद पूजा-पाठ करते हैं। उन्हें 'गीता' तथा 'रामचरितमानस' भली प्रकार से याद हैं। वे बच्चों को भी प्रेरित करते हैं कि वे इन पुस्तकों का अध्ययन करें।

विद्यालय में जब कोई सांस्कृतिक कार्यक्रम होता है या किसी प्रकार का आयोजन या उत्सव होता है तो कार्यक्रमों का संचालन भी श्री हरिहर सिंह जी करते हैं। छात्र इनके भाषण और प्रवचन सुनने के लिए लालायित रहते हैं। श्री सिंह उच्च स्तर के समाजसेवी और क्रीड़ाप्रेमी भी हैं। वह बच्चों के साथ क्रीड़ा स्थल पर भी जाते हैं। उनका क्रीड़ा कौशल भी सराहनीय है। खेल के मैदान में वह छात्रों से मित्रवत व्यवहार करते हैं। छात्रों, अध्यापकों की दूषित राजनीति या गुटबंदी के वह कभी शिकार नहीं होते। यही कारण है कि छात्र और अध्यापक सभी उनका सम्मान करते हैं। वे कभी किसी को अपने विरोध का अवसर नहीं देते हैं।

विद्यालय के प्रधानाचार्य जी उनका अत्यधिक सम्मान करते हैं। ये इनके आदर्शों के अनुकूल विद्यालय को ले चलना चाहते हैं। आज हमारा संपूर्ण विद्यालय श्री सिंह के मूक संकेत पर ही सम्मोहित होकर प्रगति कर रहा है।

उपसंहार—श्री हरिहर सिंह के गुणों से आज हम सभी प्रभावित हैं। इन्हें देखकर यह कथन याद आ जाता है—

'कीर्तिर्यस्य स जीवति'।

निःसंदेह श्री हरिहर सिंह कीर्तिशाली पुरुषों में से हैं। इनके यशोगान के लिए हमारे पास शब्द नहीं हैं। संभवतः ऐसे ही आदर्श अध्यापकों के लिए कबीरदास ने भी कहा है—

''गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय॥''

13. देश-प्रेम

प्रस्तावना—प्रेम जीवन का सबल आविष्कार है। इसके अभाव में जीवन निस्सार और व्यर्थ है। यह ढाई अक्षर का शब्द मानव जीवन की अनंत कहानी है, जो वह अपने हृदय में छिपाए हुए है। इस शब्द ने व्यक्ति को महान् मानव बनाया है और उसे

वशीकरण मंत्र भी प्रदान किया है। यह मानव को, तो आकर्षित करता ही है, पशु-पक्षी भी इसके बंधन से मुक्त नहीं हैं। प्रेम के अनेक रूप हैं–पारिवारिक-प्रेम, स्वदेश-प्रेम, जाति-प्रेम, मित्र-प्रेम आदि। इनमें स्वदेश-प्रेम या राष्ट्र-प्रेम ही सर्वोत्कृष्ट है। वास्तव में जिस व्यक्ति में स्वदेश-प्रेम का पवित्र भाव नहीं है, वह पत्थर है–

''जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं॥''

देश-प्रेम का महत्त्व–देश-प्रेम वह पवित्र भावना है जो हमें स्वदेश-प्रेम की शक्ति में वृद्धि करने के लिए प्रेरित करती है। किसी संस्कृत विद्वान् का कथन है, ''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'' अर्थात् जननी और जन्म भूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ हैं। यह उचित सत्य है, क्योंकि स्वर्ग का सुख तो केवल कानों से ही सुनने को मिलता है, मातृभूमि का सुख हम अपने दैनिक जीवन में भोगते हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक हमें इस सुख की प्राप्ति होती है।

मातृभूमि जहाँ हमें अन्न, जल, घी, दूध प्रदान करती है, वहीं उससे हमें स्वास्थ्यप्रद जलवायु भी प्राप्त होती है। स्वदेश के तीर्थ स्थान जीवन में पवित्रता प्रदान करते हैं। इतना ही नहीं, स्वदेश-प्रेम वह कसौटी है जिस पर देशभक्तों की परख होती है। यह हमारे ही चरित्र निर्माण में सहायक होती है। इसी भावना से प्रेरित होकर कवि ने कहा है–

''नहीं जीते जी सकता देख, विश्व में झुका तुम्हारा भाल।
वेदना मधु का भी कर पान, आज उगलूँगा गरल कराल॥''

देश-प्रेम मानव-जीवन का स्वाभाविक गुण–देश-प्रेम मानव-जीवन का स्वाभाविक गुण है। व्यक्ति जिस संस्कृति, सभ्यता और वातावरण में जन्म लेता है उसके प्रति प्रेम भावना स्वाभाविक रूप से उत्पन्न हो जाती है। किसी कवि ने कहा है–

''राष्ट्र-प्रेम के बिना कहीं भी क्षेम नहीं।
राष्ट्र-प्रेम से बढ़कर कोई प्रेम नहीं॥''

इसी स्वाभाविक गुण के वशीभूत होकर सरदार भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद जैसे शहीदों ने हँसते-हँसते अपने प्राण देश की आजादी की बलिवेदी पर न्यौछावर कर दिए। वस्तुतः देश-प्रेम मानव जीवन का वह स्वाभाविक गुण है, जो उसे गौरव प्रदान करता है।

देश-प्रेम राष्ट्र और विश्व की उन्नति में सहायक–आज संसार का प्रत्येक व्यक्ति इस भावना से परिचित है कि स्वदेश-प्रेम की भावना केवल राष्ट्र की उन्नति में ही सहायक नहीं है, अपितु विश्व उन्नति में भी उसका महान् योगदान होता है। जब देश-प्रेम से परिपूर्ण होकर व्यक्ति अपने राष्ट्र की उन्नति करता है तो वह राष्ट्र संसार में गर्व और गौरव के साथ अपना मस्तक उँचा करके अपने देशवासियों की प्रेम कहानी को ही इंगित करता है। स्वदेश-प्रेम के अनुसरण से एक देश दूसरे देश के पास आता है। इस प्रकार विश्व स्तर पर एकता और विश्वबंधुत्व की भावना का उदय होता है।

देश-प्रेम में कर्त्तव्य और त्याग–देश-प्रेम की भावना एक पवित्र भावना है। यह भावना दो प्रकार से विकसित होती है। कर्त्तव्य पालन की भावना, त्याग और बलिदान की भावना। कर्त्तव्य पालन के क्षेत्र में प्रत्येक देशवासी का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह अपने देश के सभी नियमों एवं कानूनों का निष्ठापूर्वक पालन करे। त्याग और बलिदान की भावना के अंतर्गत प्रत्येक देशवासी में त्याग और बलिदान की भावना दृढ़ता से समाहित होनी चाहिए। जब देश तथा राष्ट्र के सामने संकट उपस्थित हो जाए, तो प्रत्येक नागरिक को अपने आपसी मतभेद भुलाकर राष्ट्र की रक्षा एवं उन्नति के लिए सब कुछ त्यागने को तत्पर रहना चाहिए। जिस व्यक्ति में इस भावना का उदय नहीं होता वह व्यक्ति पशु के समान होता है। **मैथिलीशरण गुप्त** ने कहा है–

''जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं, पशु निरा है, और मृतक समान है॥''

देश-प्रेम का संकुचित अर्थ और उससे हानि–हमें देश-प्रेम की भावना को विस्तृत अर्थों में ग्रहण करना चाहिए। संकुचित देश-प्रेम विश्व-शांति के लिए खतरा है। राष्ट्रवाद के अन्धे भक्तों ने संसार में युद्धों को जन्म दिया।

उपसंहार–देश-प्रेम मानव की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। लेकिन इसकी संकुचित धारणा विश्व शांति एवं कल्याण के लिए हानिकारक होती है। अत: हमें इस भावना को अपने तथा विश्व के हित में ग्रहण करना चाहिए। चन्द्रशेखर आज़ाद, शहीद भगतसिंह, बिस्मिल और गांधी जैसे देश-भक्तों ने इसे विश्व कल्याण के अर्थों में ग्रहण करके ही संसार के सामने एक महान् आदर्श प्रस्तुत किया है।

14. विज्ञान के चमत्कार

प्रस्तावना–मानव प्रकृति भी अद्भुत है। एक युग था, जब मानव कलकलाती हुई नदियों, आसमान में तड़तड़ाती विद्युत, आकाश में चमकते हुए सूर्य, शीतलता प्रदान करते हुए चन्द्रमा, ऊनते हुए सागर की एक अनजाने भय से प्रेरित होकर पूजा करता था। किंतु धीरे-धीरे उसका भय टूटने लगा और उसके मन में प्रकृति के इन रहस्यमय रूपों को जानने का कौतूहल जागृत होने लगा। शनै:-शनै: वह प्रकृति पर पड़े इन रहस्यों के पर्दों को उठाने लगा। फलत: विज्ञान का जन्म हुआ। इस विज्ञान के बल पर आज वह असीमित शक्ति का मालिक बन गया है।

विज्ञान क्या है? आज के युग में यह एक मुख्य प्रश्न है। प्राचीन काल में विज्ञान का अर्थ अध्यात्म से संबंधित विशेष ज्ञान से लिया जाता था। किंतु आज विज्ञान का क्षेत्र आध्यात्मिक न होकर भौतिक हो गया है। अत: भौतिक ज्ञान में विशेषता प्राप्त करना ही आज विज्ञान कहलाता है।

विज्ञान के विविध चमत्कार या उपलब्धियाँ–विज्ञान में अपार शक्ति है। आज हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इस शक्ति का बोलबाला है। चाहे वह चिकित्सा का क्षेत्र हो, चाहे संचार और चाहे यातायात का, चाहे जीवन को सुखी बनाने का क्षेत्र हो, चाहे कृषि और उद्योग का क्षेत्र हो–हर क्षेत्र में विज्ञान ने अपना आधिपत्य स्थापित किया हुआ है। संक्षेप में, विज्ञान के इन विविध क्षेत्रों में चमत्कारों या उपलब्धियों का वर्णन इस प्रकार है–

(क) **यातायात तथा परिवहन संबंधी क्षेत्र**–आज का युग रेल, मोटर, जलयान तथा वायुयान का युग है। प्राचीन समय में एक स्थान से दूसरे स्थान की दूरी को तय करने में मनुष्यों को वर्षों का समय लगता था। परंतु आज समय और स्थान की दूरी पर मनुष्य ने आश्चर्यजनक विजय प्राप्त कर ली है। धरती ही नहीं, आज तो मानव इन वैज्ञानिक वाहनों द्वारा चंद्रमा और मंगल जैसे दूरस्थ ग्रहों पर भी पहुँच गया है। वस्तुत: यातायात तथा परिवहन संबंधी क्षेत्र में विज्ञान ने क्रांतिकारी विजय प्राप्त की है।

(ख) **संचार संबंधी**–संचार संबंधी क्षेत्र में भी विज्ञान ने भारी सफलता का परिचय दिया है। प्राचीन युग में जो सन्देश व्यक्ति के द्वारा कई महीनों में भेजे जाते थे, वे आज टेलीफोन, रडार तथा बेतार के तार द्वारा क्षणभर में एक देश से दूसरे देश को भेजे जा सकते हैं। इतना ही नहीं, आज तो चंद्रमा और मंगल ग्रह के संदेश भी पल भर में धरती पर सुने जा सकते हैं। आज विज्ञान ने धरती और आकाश की दूरियाँ समेट ली हैं।

(ग) **चिकित्सा संबंधी**–विज्ञान ने मनुष्य को स्वस्थ बनाया है। उसने अंधे को आँखें, बहरे को कान और लंगड़े को टांगें दी हैं। उसने मानव जीवन को दीर्घ बनाया है। भय से मुक्त किया है। उसने ही पागलों को वश में किया है और किसी सीमा तक मृत्यु पर भी विजय प्राप्त की है। इतना ही नहीं, उसने एक्स-रे के माध्यम से उन सभी गुप्त रोगों को खोज निकाला है जो सदियों से मानव जीवन के लिए पहेली बने रहे थे। विज्ञान ने केवल रोग ही नहीं अपितु रोग के निदान की भी खोज की है। चेचक और हैजे के टीके, पेनीसिलीन, स्ट्रेप्टोमाइसिन आदि औषधियाँ मानव के हर रोग के लिए रामबाण सिद्ध हो रही हैं। शल्य चिकित्सा द्वारा कुरूप रूपवान बनने लगे तथा हृदय बदले जाने लगे हैं।

(घ) **शिक्षा संबंधी**–शिक्षा के क्षेत्र में भी विज्ञान ने अद्भुत चमत्कार दिखलाए हैं। टेलीविज़न, रेडियो और सिनेमा के माध्यम से शिक्षा के प्रसार में बहुत सहायता मिली है। आज बच्चों को सागर, खेल, सरिता, वन, पर्वत और रेगिस्तान परदे पर दिखाकर भूगोल का ज्ञान सरलता से कराया जा सकता है। छापेखाने तथा कम्प्यूटर के आविष्कार ने पुस्तकों का प्रकाशन करके शिक्षा के प्रसार में अपूर्व योगदान दिया है।

(ङ) **मनोरंजन संबंधी**–विज्ञान ने मानव के मनोरंजन को भी सरल और सस्ता बना दिया है। सिनेमा और रेडियो की लोकप्रियता तो सर्वविदित है। साथ ही टेलीविज़न तथा वीडियो के आविष्कार ने भी मानव को उच्च कोटि का मनोरंजन प्रदान किया है।

(च) **साधारण जीवन संबंधी**–हमारे दैनिक जीवन को भी विज्ञान ने अनेकानेक वस्तुएँ प्रदान की हैं। बिजली का आविष्कार हमारे दैनिक जीवन का अंग है। बिजली के पंखे, प्रेस, कूलर, चूल्हे, माइक्रोवेव, कपड़े सीने और धोने की मशीन आदि इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। इन सभी वस्तुओं के निर्माण ने मानव जीवन को अनेक सुविधाएँ प्रदान करके समय और धन की बचत कराई है।

(छ) **उद्योग संबंधी**–वस्त्र, खाद्य पदार्थ तथा दैनिक उपयोग की वस्तुओं के निर्माण के लिए नाना प्रकार की मशीनों का निर्माण किया गया है। जिसके आधाार पर हमारे देश में अनेक छोटे-छोटे कारखानों एवं फैक्ट्रियों का संचालन हो रहा है। उद्योगों में विज्ञान के कारण समय और श्रम की बचत की जा रही है। पहले एक आलपिन के निर्माण में जितना समय लगता था आज उतने ही समय में हजारों आलपिनें तैयार की जा सकती हैं।

(ज) **कृषि संबंधी**–कृषि के क्षेत्र में भी विज्ञान ने अद्भुत चमत्कार दिखलाए हैं। ट्रैक्टर, ट्यूबवैल, रासायनिक खाद, कीटनाशक दवाइयाँ और फसलें उठाने की मशीनों का निर्माण करके आज किसान का भाग्य ही पलट दिया है। आज का किसान वर्षा पर भी निर्भर नहीं रहता है।

(झ) **परमाणु शक्ति**–विज्ञान ने उपयोगी चमत्कार के साथ-साथ भयंकर संहारकारी आविष्कार भी किए हैं। परमाणु बम, मशीनगन, टैंक एवं हाइड्रोजन बम आदि आविष्कारों ने मानवीय अस्तित्व को खतरे में डाल दिया है। यद्यपि परमाणु शक्ति का प्रयोग शांतिप्रिय क्षेत्रों में किया जा रहा है।

मानव और विज्ञान–आज विज्ञान और मानव का घनिष्ठ संबंध है। विज्ञान मनुष्य के हाथ में एक महान् शक्ति है। अतः आज का मानव वैज्ञानिक मानव बन गया है। वह चाहे तो इस विज्ञान को सुख, समृद्धि में लगा सकता है अथवा विनाश का हथियार बना सकता है। किंतु आज मानव के व्यवहार को देखकर लगता है कि वह बर्बर होता जा रहा है, उसकी आध्यात्मिकता शून्य होती जा रही है।

उपसंहार–विज्ञान का यदि सदुपयोग किया जाए तो वह मानव के लिए वरदान बन सकता है। विज्ञान के उपयोग से संसार में विश्व-बंधुत्व की भावना जागृत होती है। परन्तु यदि इसका दुरुपयोग किया जाता है, तो उसमें मानव का सर्वनाश निहित होता है।

31 अंतर्कथाएँ
(Internal Stories)

अंतर्कथाएँ वे पौराणिक और ऐतिहासिक कथाएँ हैं जो हिंदी साहित्य के पठन-पाठन में उस घटना की ओर इशारा करती हैं जिसके बिना अर्थ अपूर्ण-सा लगता है।

पिछली कक्षाओं में आपने कतिपय अंतर्कथाओं का भी अध्ययन किया, कुछ कथाएँ निम्नलिखित हैं–

1. **शंकराचार्य**–हिन्दू धर्म के संस्थापक तथा अद्वैत वेदान्त के अधिष्ठाता **आदि शंकराचार्य** का जन्म केरल राज्य के कालड़ी नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम **शिवगुरु** तथा माता का नाम **आर्याम्बा** था। इन्होंने माँ से संयास लेने की इच्छा प्रकट की। माता से स्वीकृति पाकर वे देश-विदेश घूमते हुए कई संयासियों के साथ काशी नगरी पहुँचे। वहीं नर्मदा नदी के तट पर गोविंदपाद आचार्य से संयास ले लिया। तत्पश्चात् प्रमुख उपनिषदों तथा भगवद्गीता पर भाष्य लिखा। अद्वैत सिद्धांत का प्रचार करते हुए शंकराचार्य ने द्वारका, बद्रीनाथ, जगन्नाथपुरी तथाश्रृंगेरीमठ में चार मठों की स्थापना की।

   माता का अन्तिम कर्मकांड करने के पश्चात् 32 वर्ष की अल्पायु में ही वे ब्रह्मलीन हो गए।

2. **महात्मा बुद्ध**–महात्मा बुद्ध अहिंसा के पुजारी थे। इनके बचपन का नाम **सिद्धार्थ** था। आप युवावस्था में राजसी वैभव का परित्याग कर संन्यासी हो गए। इन्होंने **बोध वृक्ष** के नीचे कठोर तप किया और विश्व को सत्य, प्रेम तथा अहिंसा का सन्देश दिया।

   महात्मा बुद्ध को **बौद्ध धर्म** का संस्थापक कहा गया है। आज इस धर्म पर चलने वालों की संख्या लाखों में है।

3. **राजा बलि**–राजा बलि महाप्रतापी और दानी राजा थे। इनके दान से भयभीत होकर इंद्र ने भगवान् विष्णु से इनकी परीक्षा लेने के लिए कहा। अंत में एक दिन भगवान् विष्णु बावन अंगुल का रूप धारण कर बलि के यहाँ दान माँगने पहुँचे और उनसे रहने के लिए तीन पग धरती माँगी। बलि के हाँ कह देने भर से विराट रूप धारण कर विष्णु ने दो पग में ही पृथ्वी को नाप लिया, तीसरे पग में राजा ने अपना शरीर नपवाया। भगवान् ने राजा की इस दानशीलता से प्रसन्न होकर उसे पाताल का स्वामी बना दिया।

4. **अम्बरीष**–सूर्यवंशी राजा अम्बरीष, भगवान् विष्णु के परम भक्त थे। एक बार इन्होंने एकादशी का व्रत किया और दुर्वासा ऋषि को भोजन का निमंत्रण दिया। दुर्वासा ऋषि के गंगास्नान से लौटकर आने में विलंब के कारण, बिना उन्हें भोजन कराए अन्य ब्राह्मणों की आज्ञा से राजा ने विष्णु भगवान का चरणोदक पी लिया। दुर्वासा ने इसे अपना अपमान समझा और राजा को शाप दे दिया। विष्णु ने अपने भक्त की रक्षा के लिए सुदर्शन चक्र भेजा। चक्र दुर्वासा का पीछा करने लगा। तीनों लोकों में दुर्वासा को कहीं भी शरण न मिली। अंत में उन्होंने राजा अम्बरीष से क्षमा माँगी।

5. **महाराणा प्रताप**–महाराणा प्रताप मातृभूमि के सच्चे भक्त थे। वे मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करना चाहते थे। उन्होंने स्वाभिमान की रक्षा के लिए घास की रोटियाँ तक खायीं। अपने परिवार को ऐसी दशा में देखकर भी उन्होंने अपने स्वाभिमान पर आँच नहीं आने दी। उन्होंने मेवाड़ की स्वतंत्रता के लिए अनेक कष्ट सहन किए। जंगलों और वनों में घूमते रहे। मिट्टी के बर्तनों में भोजन किया, लेकिन देश की उपेक्षा करके किसी भी चीज़ से समझौता नहीं किया।

महाराणा प्रताप राजस्थान की चित्तौड़ भूमि के प्रसिद्ध सिसोदिया वंश के आभूषण थे। मुगल शासक अकबर से लोहा लेते-लेते उन्होंने अपना सर्वस्व गँवा दिया।

6. **वराहमिहिर**—आचार्य वराहमिहिर राजा विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों में से एक थे। वे एक महान् गणितज्ञ थे। वराहमिहिर की विद्वत्ता से प्रभावित होकर चन्द्रगुप्त ने उन्हें अपनी सभा के नवरत्नों में स्थान दिया।

   वराहमिहिर राजकीय कार्य के पश्चात् अपने समय का सही उपयोग ग्रहों की गणना और पुस्तक लेखन में करते थे। वराहमिहिर ने प्राचीन और मध्यकालीन राजाओं की उत्पत्ति का समय भी निर्धारित किया था। इन्होंने पृथ्वी और धूमकेतु की उत्पत्ति से संबंधित सिद्धांतों का भी अन्वेषण किया।

7. **राजा रन्तिदेव**—यह महान् दानी राजा थे। इन्होंने अपनी सत्य प्रतिज्ञा एवं दान हेतु सारी सम्पत्ति का दान कर दिया। अंत में ऐसा समय आ गया कि इन्हें सैंतालिस दिनों तक भूखा रहना पड़ा। अंतिम दिन जब कहीं से कुछ भोजन प्राप्त हुआ तो वे खाने के लिए बैठे ही थे कि एक साधु वहाँ आ पहुँचा। राजा ने अपना भोजन साधु को दे दिया। फिर रानी, पुत्र तथा पुत्र-वधू ने भी अपने-अपने भाग का भोजन साधु को दे दिया। भगवान् ने प्रसन्न होकर राजा को दर्शन दिए और उनको मोक्ष प्रदान किया।

8. **सहस्त्रबाहु**—यह राजा कृतवीर्य के पुत्र थे। भगवान दत्तात्रेय ने प्रसन्न होकर इनके हजार बाहें होने का आशीर्वाद दिया था। एक बार वह अपनी सेना सहित शिकार खेलने वन में गए। वन में परशुराम के पिता जमदग्नि के आश्रम में उनका बड़ा ही आदर हुआ। इसका कारण थी कामधेनु गाय, जो सभी सुखों को देने वाली मानी जाती थी। राजा सहस्त्रबाहु ने इस गाय को जबरदस्ती छीन लिया, किंतु गाय भागकर स्वर्गलोक चली गई। परशुराम ने अपने पिता का अपमान जानकर इनकी सारी भुजाएँ काट डालीं।

9. **आर्यभट्ट**—आर्यभट्ट भारत के प्रसिद्ध ज्योतिषी और गणितज्ञ थे। इन्होंने आर्यभटीय तथा तंत्र नामक दो ग्रंथों की रचना की। उन्होंने आर्यभटीय ग्रंथ में वृत्त का व्यास, परिधि, अनुपात आदि विषय प्रस्तुत किए। उन्होंने अपने प्रयोग से यह सिद्ध किया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है। उन्होंने अपने आर्यभटीय ग्रंथ में शून्य का महत्त्व, रेखागणित, बीजगणित आदि के विषयों का अंतर भी स्पष्ट किया।

10. **विश्वामित्र**—महर्षि विश्वामित्र त्रिकालदर्शी हैं। विश्वामित्र परम ज्ञानी हैं। उन्हें पता है कि मेरे कार्य को केवल राम ही कर सकता है और कोई नहीं। इसीलिए वे राम को ले जाने की जिद करते हैं और वे अपने इस प्रयास में सफल हो जाते हैं। विश्वामित्र विवेकशील हैं। राम द्वारा ताड़का राक्षसी का वध करने में लज्जा करने पर विश्वामित्र अपने विवेक का परिचय देते हुए कहते हैं कि जो स्त्री गलत रास्ते पर हो, दुष्ट हो तथा दुष्कर्म करती हो, उसका वध करना कोई गलत कार्य नहीं है।

11. **वामदेव**—वामदेव अयोध्या के राजा दशरथ के कुल पुरोहित हैं। वे महर्षि वशिष्ठ के आश्रम में रहते हैं। वामदेव श्रेष्ठ परामर्शदाता तथा बहुत बुद्धिमान हैं। वामदेव के परामर्श से ही राजा दशरथ अपने दोनों पुत्रों, राम तथा लक्ष्मण को विश्वामित्र के साथ भेज देते हैं। दशरथ जब दुविधा में होते हैं तब वामदेव ही उन्हें कर्त्तव्य का बोध कराते हैं। वामदेव स्पष्टवादी भी हैं। वे कभी भी किसी बात को कहने में जरा भी संकोच नहीं करते हैं।

12. **श्रीराम**—भगवान् श्रीराम अयोध्या के राजा दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र हैं। विश्वामित्र जी अपने यज्ञ की रक्षा के लिए राम को अपने साथ ले जाते हैं। वहाँ जाकर राम अनेक राक्षसों का वध करते हैं। राम ने किसी भी परिस्थिति में अपनी मर्यादा को नहीं त्यागा। राम के लिए मर्यादाओं का पालन अनिवार्य था। इसका निर्वाह भी उन्होंने प्रत्येक परिस्थिति में किया, इसलिए भगवान् राम मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए। राम एक श्रेष्ठ धनुर्धर भी हैं। निष्कर्षतः राम का चरित्र सर्वगुण सम्पन्न है तथा हम सबके लिए अनुकरणीय है।

आदर्श प्रश्न-पत्र-1

1. भाषा का क्या अर्थ है ? स्पष्ट करके समझाइए।

_____

2. भाषा के मुख्य भेद कौन-कौन से हैं ?

_____

3. 'व्यंजन' के गुण तथा परिभाषा लिखिए।

4. तत्सम शब्द तथा तद्भव शब्दों में क्या अंतर है? स्पष्ट कीजिए।

5. संज्ञा से आप क्या समझते हैं?

6. 'लिंग' की परिभाषा लिखिए।

7. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो–

(क) यह खिलौना _____ लाया है।

(ख) व्याकरण भाषा के _____ करता है।

(ग) _____ भी प्रश्न नहीं लिखा गया।

(घ) ध्वनियों के संकेत या _____ कहलाते हैं।

(ङ) व्याकरण भाषा के _____ करता है।

(च) मौखिक भाषा को _____ भाषा भी कहा जाता है।

8. नीचे दिए गए शब्दों से भाववाचक संज्ञाएँ बनाइए–

अहं – _____

चतुर – _____

स्व – _____

महान् – _____

सफल – _____

वीर – _____

शत्रु – _____

9. निम्नलिखित वाक्यों के सम्मुख उनकी क्रियाओं के नाम लिखिए-

(क) बंदर पेड़ पर चढ़ गया। _____

(ख) गीता लिखकर गा रही है। _____

(ग) बहू ने शर्माना छोड़ दिया। _____

(घ) पण्डित जी पूजा-पाठ करवाते हैं। _____

(ङ) राहुल ने पंकज से पत्र पढ़वाया। _____

(च) रीता ने सारिका के घर मिठाई भिजवाई। _____

(छ) सैनिक मरकर भी अमर हो गए। _____

10. नीचे दिए वाक्यों में निर्दिष्ट परिवर्तन कीजिए–

(क) राजू कल पटना जाएगा। (संदिग्ध भूतकाल)

(ख) जॉर्ज बुश भारत आए थे। (अपूर्ण वर्तमान काल)

(ग) वह अपना काम करती होगी। (सामान्य भविष्यत् काल)

11. कर्मवाच्य में परिवर्तित कीजिए–

(क) शिक्षक नहीं लिखता है।

(ख) भगवान सबकी इच्छा पूर्ण करे।

(ग) सेना ने दुश्मनों को भगाया।

(घ) आलोक से चला नहीं जाता।

12. निम्नलिखित शब्दों में संधि कीजिए–

(क) उमा + ईश – _____ (ख) एक + एक – _____

(ग) ने + अनम् – _____ (घ) निः + रज – _____

(ङ) दिक् + गज – _____

13. नीचे दिए हुए शब्दों को स्त्रीलिंग में बदलो–

अध्यक्ष	–	_____	बिलाव	–	_____
भगवान	–	_____	युवक	–	_____
हंस	–	_____	भव	–	_____
नर	–	_____	ऊँट	–	_____

14. रिक्त स्थानों की पूर्ति विभक्तियों द्वारा कीजिए–

(क) अंकित _____ पुस्तक खरीदी।

(ख) अखिलेश, सिन्धी अपने ननिहाल _____ नहीं गए।

(ग) प्रिया _____ अब आना चाहिए।

(घ) मेरे _____ कौन जाएगा?

(ङ) सुधा अपनी माता _____ मंदिर गई।

15. निम्नलिखित वाक्यों में से सर्वनाम छाँटिए–

(क) राम मेरी बात का उत्तर दो। (ख) मैं तो रूपा से दोस्ती करूँगा।

(ग) जो करेगा वो भरेगा। (घ) ईश्वर! तू बड़ा दयालु है।

(ङ) मैं आपकी क्या सेवा करूँ?

आदर्श प्रश्न-पत्र-2

1. भाषा का क्या अर्थ है ? स्पष्ट करके समझाइए।

_____

2. भाषा के मुख्य भेद कौन-कौन से हैं ?

_____

3. द्विगु और द्वंद्व समास में अंतर समझाइए।

4. उपसर्ग की परिभाषा दीजिए।

5. तद्धित प्रत्यय को उदाहरण सहित समझाइए।

6. अर्थ की दृष्टि से वाक्य कितने प्रकार के होते हैं?

7. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) समानोच्चरित शब्द या शब्द-युग्म किसे कहते हैं?

(ग) विलोम शब्द से क्या तात्पर्य है?

(ख) शृंगार अथवा शांत रस की परिभाषा सोदाहरण दीजिए।

(घ) ध्वनि सूचक शब्द क्या हैं? कोई दो उदाहरण दीजिए।

(ख) उपल तथा उत्पल का अंतर बताइए।

(ङ) अलंकार किसे कहते हैं? इसके कितने भेद हैं?

8. निम्नलिखित उदाहरणों में कौन-सा अलंकार है–

(क) चारु चंद्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल-थल में – _____

(ख) कनक-कनक से सौ गुनी मादकता अधिकाय – _____

(ग) चरण-कमल बन्दौ हरिराई – _____

(घ) कपि कर हृदय विचार, डारि दीन्ह तब मुद्रिका – _____

9. नीचे दिए शब्दों के सही अर्थ छाँटकर लिखिए–

(क) बादल – (नीरद, जलज)

(ख) शिवजी – (संकर, शंकर)

(ग) कमल – (पयोधि, पंकज)

(घ) गरीब – (दिन, दीन)

(ङ) बाल – (कच, कुच)

10. अशुद्धियों का प्रकार पाठ के आधार पर लिखिए–

(क) विद्वान _____

(ख) भासन _____

(ग) डाकूओं _____

(घ) उपलक्ष _____

(ङ) विश्णु _____

(च) गांव _____

(छ) छन _____

(ज) बधू _____

11. कर्मवाच्य में परिवर्तित कीजिए–

(क) शिक्षक नहीं लिखता है।

(ख) भगवान सबकी इच्छा पूर्ण करे।

(ग) सेना ने दुश्मनों को भगाया।

(घ) आलोक से चला नहीं जाता।

12. निम्नलिखित शब्दों के साथ उचित उपसर्ग लगाइए–

(क) पुत्र – _____ (ख) मान – _____

(ग) इलाज – _____ (घ) मर्द – _____

(ङ) लायक – _____ (च) दिन – _____

13. अंतर बताइए–

(क) संयोग तथा वियोगश्रृंगार रस में।

(ख) रौद्र रस तथा शांत रस में।

(ग) चौपाई तथा दोहा छंद में।

(घ) इंद्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा छंद में।

(ङ) रूपक तथा उत्प्रेक्षा अलंकार में।

(च) भ्रांतिमान तथा संदेह अलंकार में।

14. नीचे दिए शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए–

(क) संग्या _____ (ख) शुभम _____

(ग) बन _____ (घ) योज्ञ _____

(ङ) स्वागतम _____ (च) सोभा _____

(छ) उज्वल _____ (ज) प्रथक _____

(झ) कन्ठ _____ (ञ) उपरोक्त _____